संकल्प

संकल्प

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

SANKALP

A Maithili Novel by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-81-951070-6-3

दाम: 250/- (भा.रु.)

दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2021)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

पड़ाव क्रम

पहिल पड़ाव/07

दोसर पड़ाव/19

तेसर पड़ाव/27

चारिम पड़ाव/40

पाँचम पड़ाव/53

छठम पड़ाव/66

सातम पड़ाव/75

आठम पड़ाव/87

नअम पड़ाव/97

दसम पड़ाव/107

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक सालभरिक गद्य लेखन क्रम /124

प्रथम पड़ाव

मिथिलाक सघन गामक बीच भाग्यपुर सेहो एकटा गाम अछि। स्वतंत्रतासँ पूर्व, माने 1947 इस्वीसँ पूर्व जहिना आन-आन गाम राजासँ लऽ कऽ जमीन्दारक जमीनदारीक जालमे छल जइसँ गामक भाग्य राजा-रजबारक हाथमे छल तहिना भाग्यपुरो गामक भाग्य छेलैहिये। आइ ने बुझै छी जे जमीनक मोल ओकर दाम निर्धारित करैए, मुदा आजादीसँ पूर्वक समाजमे दामो निर्धारित करै छल आ दू सालक पछुआएल मलगुजारी सेहो निर्धारित करिते छल जे मलगुजारी समयपर नहि चुकौने नीलाम भऽ जाइ छल जइसँ जमीनबलाक जमीन नहि रहै छल आ जमीन भऽ जाइ छल मालगुजारीबलाक।

मिथिलाक गामक सघनता खाली मिथिलेटाक छी से बात नहि, देशक ग्रामीण इलाकाक (गमैया क्षेत्रक) सघनतामे सभसँ सघन आवादीबला मिथिलेक गाम छी। ओना केरलक समकक्षता सेहो नकारल नहि जा सकैए। माने केरलोक ग्रामीण इलाका आन-आन राज्यक अपेक्षा सघन अछिए। एक तँ हजारो बर्खक गुलामीक शासन देशक रीढ़ तोड़िये देने छल, तैपर मिथिलाक सघन आवादी सेहो जमीनक बोझ बनले छल जइसँ गरीबी-भुखमरी सोभाविक रूपमे छेलैहे। तैसंग मानसूनपर चलैत किसानक जिनगी सेहो अनिश्चिततामे चलिये रहल छल। कोनो साल बाढ़ि आबि खेतक संग घरो-दुआरकेँ धोइ-पोछिकऽ लऽ जाइ छल तँ कोनो साल रौदी। सभ जनिते छी जे बारह बर्खक रौदीक बीच मिथिलामे सीताक जन्मो भेलैन आ बरखो भेल। बिनु सीताक जन्मो बरहबरखा रौदी मिथिलामे अदौसँ होइते आबि रहल अछि। तँए कि मिथिला मेटा थोड़े

गेल।

आजादीक समय जहिना परोपट्टाक गामक पोखैर-इनार फागुनक पछाइत सुखए लगै छल आ एका-एकी सुखैत-सुखैत गामक सोल्होअना वा अधिकतर पोखैर-इनार सुखिकऽ आगू-सालक बर्खाक आशा तक सुखल पड़ल रहै छल। तइमे भाग्यपुर गाम भाग्यवान रहल अछि। कहब की भाग्यवान रहल? आन गाम जकाँ ने सोल्होअना पोखैर-इनार भाग्यपुरक सुखै छल आ ने सोल्होअना जलधरे बनल रहै छल। गामक बीच, एकटा छहमसिया धार सेहो अछिए, तेकरा गामक किसान बेरपरक धार नहियेँ बुझै छैथ। किए तँ अखाढ़सँ अगहन तकक औरुदा ओइ धारक पानिक छल, जइ समय लोककेँ पटौनी पानिक खगते ने रहै छल। कहब जे गहुमक खेती तँ आसिने-कातिकसँ होइए, जेकरा पटबैले बीसे दिनक पछाइत पानिक खगता होइए, ओकर तँ एक-दू बेर पटौनी भइये सकै छल? एहेन विचार तँ आजुक परिवेशमे आएल अछि, 1971-72 इस्वीसँ पूर्व अपना ऐठाम गहुमक खेती नहि होइ छल। जे किछु होइतो छल, ओ बिनु पटौनीक होइ छल। रोटीकेँ भलेँ आइ प्रमुखता भेट रहल अछि, मुदा रोटीकेँ अपना ऐठाम दोसर श्रेणीक भोजन बुझल जाइ छल। जइसँ पर-पाहुन आ उचित-अभ्यागतकेँ भोजनमे सेहो नहि देल जाइ छल। जहिना एक दिस मर्यादित बेवस्था समाजमे छलो आ अछियो तहिना दोसर दिस ओइ मर्यादाकेँ भंग करैबला शक्तिविहीन लोको रहबे केलाह आ छथियो। जइसँ समाजक बीच स्पष्ट रूपेँ मर्यादित परिवार आ अमर्यादित परिवारक अपन-अपन जीवनधारा प्रवाहित होइते आबि रहल अछि। अखनो अछि।

गाछी-बिरछी, पोखैर-इनारसँ सम्पन्न भाग्यपुर गाम अछि। जहिना पोखैर-इनार, गाछ-वृक्षसँ भाग्यपुर सघन गाम अछि तहिना बीससँ ऊपर जातिक बास सेहो गाममे अछि। ऊँचरस जमीनक गाम रहने बासभूमिक अभाव गौंआँकेँ आइ धरि नहि भेलैन अछि। ओना, तीन श्रेणीक जमीन भाग्यपुरक अछि। पहिल ऊँचगर, दोसर मध्यम जइमे धानक खेती होइए आ तेसर जेकरा चौर वा चौरी कहै छिऐ, तीनू कोटिक जमीन भाग्यपुरमे अछि। ऊँचरस बासभूमि रहने आन गाम जकाँ ने साले-साल

भाग्यपुरबलाकेँ घरहट लगलैन आ ने फटकझार घर रहने कहियो आगिये-छाइक उपद्रव भेलैन। सघन गाम रहने भाग्यपुरक जमीन माने खेत-पथार सेहो छिड़ियाएले जकाँ अछि, किए तँ गाममे कियो मोटगर-डटगर किसान नहियेँ छैथ। अधिकतर परिवार मध्यम श्रेणीक किसानक अछि। ओना, बिनु खेत-पथारबला परिवारक संख्या सेहो कम नहियेँ अछि।

आने गाम जकाँ भाग्यपुरबलाक जीवन सेहो अनेक रंगक छैन्हे। सुभ्यस्त परिवारक जीवन जइ तरहेँ चलै छैन तइ तरहेँ असुभ्यस्त परिवारक जीवन नहियेँ चलै छैन से आइये नहि, आइ धरिक पैछला समयमे कहियो ने भेल अछि। मनुक्खक कद-काठी मनुक्खक जीवन बनैबतो अछि आ मेटैबतो अछिए। आर्थिक दृष्टिसँ जइ रूपेँ मनुक्खक जीवनक गठन होइए तइमे आइ धरि एकरूपता नहि एने जे विषमता हेबा चाही से तँ अछिए। सोभाविको अछिए जे जेहेन आर्थिक उन्नति रहत तेहने ने मनुक्खक निर्माण सेहो हएत। मानि लिअ अहाँकेँ मनमे अछि जे बाल-बच्चाकेँ नीक शिक्षा देब माता-पिताक पुनीत कर्तव्य छिऐन। जेकरा मनमे रोपि कियो माता-पिता अपन संकल्प अपना मनमे स्थापित करै छैथ, मुदा आजुक जे शिक्षा-प्रणालीक बेवहार–खर्चक दृष्टिसँ–बनि गेल अछि तैबीच माता-पिताक मनक संकल्प केतेकाल ठाढ़ रहतैन? तहिना मर्यादित भोजनो आ आनो-आन बेवहार सेहो अछिए। मर्यादित भोजनक माने भेल सन्तुलित भोजन। जइ गाम-समाजमे (आजादीक समय) साँझक-साँझ चुल्हि नहि पजरै छल तैठाम सन्तुलित भोजन तँ मात्र कल्पनेक विचार ने बनि कऽ रहि जाइए। ई धारणा तँ अखनो जीवित अछिए जे मनुक्खक आयु साए बर्खक अछि, माने मनुख साए बर्ख धरि सक्षम अवस्थामे जीब सकै छैथ, मुदा केहेन जीवन धार बनल रहने मनुक्खकेँ साए बर्खक घाट टपौतैन तहूपर ने नजैर दिअ पड़त। ओना शरीरक रोग माने बिमारीक कोनो ठेकान नहियेँ अछि, किछु जँ अछियो माने शरीरकेँ सुभोजन, सुकाज भेने-केने, मुदा से केते लोककेँ उपलब्ध छैन, रोगो तँ रोग छी, साध्यसँ असाध्य धरिक अछिए। तैठाम साए बर्खक जीवन धारण करब हँसी-ठट्ठा नहि ने छी।

जेहेन परिवारक स्थिति रहैए तही अनुकूल ने ओइ परिवारक जीवन सेहो बनैए। खाएर जे जेतए बनैए से तेतए बनह। तइसँ गियानचनकेँ कोन मतलब छैन। पाँच गोरेक अपन परिवार छैन, माने माता-पिता, पत्नी अपने आ एकटा बेटी छैन। जेकरा माने परिवारकेँ, गियानचन जनकपुरक राजा जनकक फुलवारी जकाँ तेना सेवने-सजौने छैथ जे दुनियाँमे एक समृद्ध परिवारक रूपमे ठाढ़ अछि। जइसँ गियानचनकेँ सौंसे दुनियाँ अपन पाँचे गोरेक परिवारमे देखि पड़ि रहल छेलैन। देखियो केना ने पड़तैन? जैठाम गाम-समाजमे माता-पिताक संग बेटा-पुतोहुक बीच दिन-राति गारि-गरौवलि पहरे-पहर होइए तैठाम गियानचनक माता-पिता अपन परिवार बुझि सत्तैर-पचहत्तैर बर्खक उम्र बितौला पछातियो अपन देहक शक्तिकेँ, अखुनका नवयुवक जकाँ चौरबए नहि चाहै छैथ आ सदिकाल अपन समयानुसार अपन तन-मन-धनकेँ क्रियाशील बनौने रहै छैथ, जइसँ चौबीसो घन्टाक समय हेराएल-बिरहाएल रहै छैन, सएह ने भेल सार्थक जीवन पद्धति। ऐठाम नारदजीक जे ज्ञान सूत्र छैन से नहि कहि रहल छी, ऐठाम एतबे बुझू जे शान्त-चित्त जीवन बना समयक संग ससारैत चलब।

परिवारक बीच माने गियानचनक परिवारक बीच आइ भोरेसँ सभ चहल-पहलमे, सुख-दुखक बीच अपन-अपन काजमे हेराएल छैथ। गियानचनक माए- सुदामा जहिना भोरेसँ पुतोहुक सन्तान जन्मक दर्दक पहिल पीड़ासँ तैयार-तैनात भेल अपन ओरियानमे व्यस्त छैथ तहिना सुदामाक पति माने गियानचनक पिता सेहो आदेशपाल जकाँ घरक दुआरिपर ठाढ़ भेल प्रतीक्षारत छथिए जे जखन जे खगता हएत ओकर पूर्ति करब।

पत्नीक पीड़ा देखि गियानचन जहिना पीड़ाएल-सोगाएल छैथ, तहिना आँखि मुइन माता-पिताक आज्ञाकेँ शिरोधार्य करैले सेहो तैयार छथिए। गियानचनकेँ सोगाएल रहबक कारण छेलैन जे गाममे अनेको औरतक मृत्यु सन्तानोत्पतिक समय होइत देखि-सुनि चुकल छैथ तँए मन पीड़ासँ घेराएल छैन जे हो-न-हो जँ पत्नी मरि जेती तँ भारी बिपैतमे पड़ि जाएब। दू सालक बेटी अछि, जँ ओ मइटुग्गर भऽ जाएत तँ बिआहो-दान

हएत कि नहि। अपना दिस नजैर उठा जखन गियानचन देखै छला तँ देखि पड़ैन जे मातो-पिता आ बेटियोक सेवा-टहल दुनू परानी मिलि करै छी, तइमे जँ पत्नी मरि जेती तखन तँ सोल्होअना भार अपने ऊपर पड़ि जाएत.! अखन अपनेटा काजक भार अछि माने आधा भार कन्हापर अछि तखन दिन-राति कखनो चेन नहि रहै छी आ जखन सोल्होअना भार पड़ि जाएत तखन की दशा हएत..!

चिन्तित गियानचनक मनमे ईहो उठैत रहैन जे जँ भगवान बेटा देलैन आ ओ जीबैत रहल तखन जँ तीन पीढ़ी–पिता, अपने आ पुत्र–एक लकीरमे ठाढ़ हएब तखने ने बच्चाक आत्मभाव प्रवाहित होइत वृद्धक आत्मार्कें पकड़त आ वृद्धक आत्मबल, क्रियागत भेने, प्रवाहित होइत बच्चार्कें पकैड़ आगूक जीवन ले उद्वेलित करत। यएह ने भेल जीवन धार जे एक दिस प्रवाहित होइत समुद्रमे मिलैए आ दोसर दिस धरतीपर पैदा लैत जाइए।

संयोग बनल हँसी-खुशीसँ सावित्रीकेँ बेटा भेलैन। सन्तानक पीड़ासँ पीड़ाएल सावित्री जहिना बेदम होइत हाँफि रहल छेली तहिना सुदामा बच्चा-जन्मक पहिल सेवाक प्रक्रिया पूर्ति करैमे बेदम छैथ। अपन-अपन दायित्वक पूर्ति करैमे परिवारक जखन सभ बेदम भऽ लागि कऽ कर्मगत हएत तखने ने परिवार आँखि उठा दुनियाँकेँ देखैक शक्ति पौत। ई दीगर अछि जे दुनियाँमे जेते अन्हार पसरल अछि तेते इजोतो पसरल अछिए मुदा अन्हार अपन पाशा मारि अपन अन्हरियाक साम्राज्य पसारने अछि। केतौ धर्मसँ धर्मान्ध तँ केतौ धनसँ धनान्ध, केतौ जातीय उन्मादसँ आ केतौ साम्प्रदायिकतासँ..! मुदा किछु होउ, ईहो तँ सभक मनमे छैन्हे जे शान्तचित्त आनन्दसँ जीवन बिताएब श्रेष्ठ जीवन भेल। जखन मनुख, अखन तकक जीवक जीवनक इतिहासमे, सभसँ नीक सृजन छीहे। तैसंग सभ किछु मनुक्खकेँ जन्मक संगे-संग भेटते अछि, माने सभ किछु कर्त्ते-धर्ताक रूपमे मनुक्खकेँ भेटते अछि तखन जीवनक कोन अभिलाषा शेष बँचल जे मनुक्खकेँ नहि भेट सकत। खाएर जे अछि तइसँ गियानचनकेँ कोन मतलब छैन। मतलब एतबे छैन जे जहिना सन्तानोत्पत्तिक समय

पत्नीकेँ असाध्य पीड़ा उठबए पड़ै छैन जेकर फलाफल मातृत्वक संग भविष्यक रखबार पबिते छैथ। तही बीच बेटा जन्मक नाओं सुनि गियानचन सभ किछु बिसैर आनन्दमे विभोर भऽ गेला। ओही बिसरल विभोरमे, जहिना खेत परती रहलापर गोटे-गोटे कोनो गाछ जनमए लगैए तहिना गियानचनक मनमे जनमलैन। जनमलैन ई जे बेटा धन छी, महाधन, मुदा महाधन तँ तखन ने बनत जखन महापथ पकैड़ महिकर्मकेँ अङेज आगू देखैत चलत। तइले तँ होश चाही। होश तँ तखने औत जखन होशगरहाक होशगर होश पकैड़ होशियारीसँ होशमे चलैक बोध हेतइ...।

एकाएक गियानचनक मन पसीज ओइ सीमापर पहुँच गेलैन जैठाम पिता-पुत्रक बीच सीमारेखा अछि। होशमे आबि गियानचन अपन पिता दिस देखि विचारए लगला जे जखन हमर जन्म भेल, बच्चा छेलौं, विद्यालय जेबाक समय छल। मुदा गामक कोन बात जे परोपट्टामे पढ़ैक साधन माने स्कूल नहि छल, जइसँ पिताजी हमरा विद्यालय नहि पठा सकला मुदा अखन तँ से नहि अछि, गामोमे अनेको रंगक अनेको स्तरक शिक्षण संस्थान सभ बनियेँ रहल अछि आ बनलो तँ अछिए। जँ बेटा धनक आगमन परिवारमे भेल तँ ओइ बच्चाकेँ पढ़बैक पाछू अपन जीवन दॉवपर लगा देब।

अपन संकल्पक संग गियानचन आगू बढ़ि दू सालक बेटी लग पहुँचला। बेटाक आगम सुनि गियानचनक मन खुशीसँ, आगिपर चढ़ल लोहियाक दूध जकाँ आनन्दसँ उधिया रहल छेलैन। जन्मक समय बच्चाकेँ केते दर्द सहन करए पड़ैए आ बच्चाक माएकेँ केते दर्दक पीड़ा होइ छैन से तँ वएह जनै छैथ, तइ दर्दमे पिताक भागीदारी केते होइए..! सुचित्रा (बेटी) लग पहुँचते गियानचनक मुहसँ खसलैन- “बेटी, खेलह।”

दू सालक अबोध बच्चा दादी लग जा कऽ सुनि चुकल छल जे बौआ आएल अछि। तँए सुचित्राक बालमनमे ओहिना खुशी छेलै जहिना भिनसरु पहर अकासमे सुर्ज उगिते जगैत बेकती सबहक मनमे खुशी होइए। पिताकेँ पुछिते सुचित्रा आँगुरक इशारा दैत बाजल- “ओइ घरमे बौआ अछि।”

बेटीक बात सुनि मध्यवर्गीय माने पाँच बीघा जमीनक जोतबला किसान परिवारमे पलित गियानचनक मनक उमकी अकास चढ़िये गेल छेलैन, तैपर माइक संग बेटीक मुहसँ 'बौआ' सुनि आरो अकास चढ़ि गेलैन। अकास चढ़िते विचारए लगला जे अपने जखन स्कूल जाइ-जोकर छेलौं तखन गामक कोन बात जे परोपट्टा भरिमे एकोटा स्कूल नहि छल, गोटि-पङ्गरा संस्कृत विद्यालय, महाविद्यालय छल, मुदा ओकर आँट-पेट कम रहने सार्वजनिक रहितो सार्वजनिक नहि मानल जाइ छल। ओना एकटा बात आरो अछि, ओ अछि जे विद्याक मूल स्वरूपकेँ बुझब। माने विद्यालयक जरूरत (खगता) किए अछि? जीवनमे विद्याक की प्रयोजन अछि?

अखन तक हजारो पीढ़ीक (वंशगत) जीवन ओहने स्थितिमे बनल रहल जेहेन पशुक जीवन होइए। खाएर जे होइए, जेतए होइए से तेतए हुअ तइसँ गियानचनकेँ कोन मतलब छैन। पीढ़ीक (वंशक) जीवन बदलैक मोड़पर ठाढ़ गियानचन विचार केलाह जे बेटा जेते पढ़ए चाहत तेतेक पढ़ाएब।

उधियाल मन गियानचनकेँ रहबे करैन, तँए ई विचार मनमे एबे ने केलैन जे केहेन जीवन ले केहेन विद्याक जरूरत अछि। मने-मन अपन विचारकेँ मनेमे रोपि लेलैन जे अखन तक, माने अपना तक, परिवार विद्यालयक मुँह आँखि नहि देखलक, तेकरा आगू देखाएब अछि। तहूमे अकास चढ़ल गियानचनक विचार छेलैन्हे जे बच्चा जेते पढ़ए चाहत...। आजुक परिवेशमे विद्यालय केते महग अछि से किए गियानचन बुझता, ओ तँ साधारण विद्याक जीवन व्यतीत करैत आबि रहला अछि।

तीन मास रघूनाथकेँ जन्म भेना भऽ गेल। अखन तकक जे परिवारक जीवन-क्रिया गियानचनक बनि गेल छेलैन ओ धीरे-धीरे अपन पूर्वावस्थामे आबि चुकल छेलैन जइसँ विचारभूमिमे बदलाव एलैन माने विचारैक प्रक्रिया बदललैन। विचारो विचारैक अपन-अपन परिस्थिति अनुकूल विचारैक प्रक्रिया सभकेँ अपन-अपन चाहबे करी। जँ से नहि

हएत तँ कखनो पैछला पीढ़ीक देखा-देखीमे अपन पएर पिछैड़ जाएत, तँ कखनो आगूमे ठाढ़ भेल पहाड़केँ देखबे ने करब।

गामक बगलेमे ‘पमरिया गाम’ अछि। पमरिया गाम कहैक दू कारण अछि, पहिल ई जे परोपट्टामे दोसर गाममे पमरिया जाति नहि अछि, दोसर कारण अछि जे व्यवसायसँ वएह सभ पमरियाक काज परोपट्टामे करै छैथ।

भोरे-भोर, पाँच गोरेक बैचमे पमरिया गियानचन ऐठाम पहुँचला। डुग्गी बजबैत ‘बच्चा कि जय हो, बच्चा कि जय हो.!’ करैत अँगनामे नाचए लगला। एक्के-दुइये आन-आन अँगनाक लोक सभ सेहो आबए लगला।

अखन तक जे तीन मासक दौड़ गियानचन परिवारक रहलैन ओ खेती-पथारीसँ लऽ कऽ आँगन-घरक काज तककेँ प्रभावित केनहि छेलैन। दिनानुदिनक जे क्रिया परिवारक अछि तेकरो नीक जकाँ प्रभावित केनहि छल। एक दिस जहिना परिवारक काज बढ़ने परिवार प्रभावित भेलैन तहिना दोसर दिस नव-नव काजक खर्च बढ़ने आर्थिक रूपेँ सेहो प्रभावित भेबे केलैन, जइसँ गियानचनक विचारमे ठहराव जकाँ आबिये गेल छेलैन।

पमरियाक जयकार सुनि परिवारक माता-पितासँ लऽ कऽ दादा-दादी तकक मन उधिया उठलैन। उधियाइते सभक मनमे अपन-अपन खुशियानुकूल रघुनाथक पाछू अनेको प्रकारेँ धन लुटबैक उत्साह बनियेँ गेल रहैन। तैपर पाँच गोरेक समूह, ओना एक-दू गोरेक समूह सेहो होइए, जेकरा साधारण रूपमे पमरिया आएब मानल जाइए मुदा पाँच गोरेक समूह माने भेल साज-बाजक संग नाच-गान सहित, एने आरो सभक मन माने परिवारजनक मन हलचलाइये गेलैन। जइसँ एक दिस पमरिया नाच नचैक ओरियान, तँ दोसर दिस ओकर खेनाइ-पीनाइक ओरियान आ तेसर दिस गामक देखनिहारकेँ देखैक बेवस्था करब सेहो छेलैन्हे। तीन मासक बच्चा रघुनाथ आइ सभक बीच ओहिना आएल जहिना कोनो विद्यार्थी हाइस्कूलक परीक्षा तक झाँपल रहैए आ वोर्ड परीक्षामे नीक रिजल्ट पौने

परिवारक कोन बात जे जिला-जबार धरिमे चमैक उठैए तहिना रघुनाथक सेहो भेल। परिवारेक नहि, आनो-आन परिवारक लोक सभ रघुनाथक बधैया नाच देखि दान-पुनक रूपमे अन्नो आ पाइयो लुटेबे केलैन।

मासे दिनक पछाइत माने पमरिया नाचक पछाइत हिजरा-नाचक समूह सेहो पहुँचल। इलाकामे पमरियाक अपेक्षा हिजराक (किन्नर) संख्या कम रहने हिजरा नाच साले-साल होइए, माने सालमे एक बेर सौंसे गामक होइए, जखन कि बहुसंख्य रहने पमरिया नाच सालक कोन बात जे मासोमे केता दिन गाममे होइए। ओ निर्भर करैए बच्चाक जन्मपर। जेते बच्चाक जन्म भेल तेते पमरिया नाच भेल। खाएर जे भेल कि होइए से तेते होइए। मुदा आइ तँ गियानचनक अँगनामे रघुनाथक बधैया नाच भऽ रहल अछि तँए खुशीसँ गियानचनक परिवारक सभ मस्तसँ मस्तीमे झूमि रहबे कएल छैथ। तहूमे बेटा धनक उपलक्ष्यमे। बेटा तँ ओहन धन छीहे जे जीवित-मृत्यु परिवारक उद्धार करिते आबियो रहल अछि आ करितो तँ अछिए। मुदा जेकरा बेटा बुझि भ्रमित छी, तेतबे टा नहि ने बेटा अछि। जहिना छोट-सँ-छोट वा पैघ-सँ-पैघ मकानक नीव माटिक तर (अन्दर) होइए जैपर विशाल-सँ-विशालतम भवनक निर्माण होइए, तहिना ने उच्च कोटिक मनुक्खसँ लऽ कऽ निम्नकोटिक मनुक्खक जीवनक नीव सेहो तँ बच्चा छीहे। तँए केहेन नीव केहेन जीवन ले देल जाए, से साधारण संकट थोड़े छी। एक तँ परती खेत जकाँ समाजक परिवार बनल अछि तहूमे ओहन परती खेत जकाँ जइमे जोत-कोरक अभावमे बीज पड़बे ने कएल, तहिना ने गामो-समाज विद्याक क्षेत्रमे छथिए। पचहत्तैर साल आजादीक भेलो पछाइत कि गाम-समाज विद्याक क्षेत्रमे ओहन बनि सकल अछि जे जेते गाममे विद्याक खगता अछि ओकर चौथाइओ पूर्ति भेल हुअए। समस्या हजारो अछि, मुदा समाधानो करैक तँ लाखो रस्ता अछिए। जरूरत अछि दुनूक बीच सामंजस करैक।

गियानचन कानसँ सुनि हिजरा-हिजरनीक गीतक संग बधैयाक बोली अकानि तँ मने-मन सभ किछु बिसैर गेला मुदा बेटाक बालरूप

मनमे नाचए लगलैन। बेटा धन छी, सभसँ पैघ धन, मुदा ओ भगीरथ जकाँ अकास गंगाकेँ धरतीपर केना उतारि सकत? तइले ते जहिना भगीरथक सात पीढ़ी, पूर्वज साधना केलैन तेहने साधनाक जरूरत अपनो ने अछि। अखन तकक जे ग्रामीण सामाजिक जीवन रहल अछि, माने जिनगी जीबैक ढंग (कला) रहल अछि ओ ज्ञानार्जनक कोनो दिशा नहि रहल अछि, तहूमे हजारो बर्खक गुलामीक जिनगी रहने ओ आरो मटियामेट भइये गेल अछि, जइसँ लोकक विचारक क्षेत्र छीनाइत-छीनाइत तेते क्षीण भऽ गेल अछि जे जीवनक वास्तविक प्रकाशपर नजरिये ने जा रहल अछि। गियानचनक मनमे बेटाक प्रति अपन रोपल जे संकल्प छेलैन 'बेटा जेते पढ़त ओकरा पढ़ाएब' ओ नव कनौजरिक संग नव पल्लव मुँह नेनहि मनमे पुन: उपकलैन। हिजराक मुँहक सुनल निरविचारक धुन गियानचनकेँ तेना धुनकीपर चढ़ल रूइआ जकाँ धुनि देलकैन जे तरे-तर धुनकए लगलैन। अपन संकल्प मनमे रोपि रघुनाथक लेल हिजरासँ मने-मन असीरवाद मंगलैन जे जहिना लाल भेल जाएब तहिना लालक ललियाएल मुँहक लाली केना सभ दिन देखैत रहब।

ओना, गियानचन मुँह खोलि किछु बाजि नहि सकला, किएक तँ मनक बात मनेमे तेना हिजराक असीरवाद सुनि, भथा गेलैन जे मुँह खोलैक खगते ने भेलैन। खगता नहि होइक कारण भेलैन जे बिनु मंगनहि तेते असीरवाद हिजरा दऽ देने छेलैन जे गियानचनकेँ मुँह खोलैक खगते ने भेलैन। खगतो केना होइतैन? दिन-राति समाजमे देखिते छैथ जे 'तीन लेब कि तेरह' सदिकाल लोकक मुहेँ बँटाइते रहैए। पुन: अपन संकल्प- 'रघुनाथ जेते पढ़ए चाहत, पढ़ेबै..!' मनमे जागि गेलैन। जागिते मन मानि गेलैन जे बेटा-बेटी तँ समाजक धन छी। अपन पेटो आ जीवन तँ कुत्तो-बिलाइ पोसि लइए, मुदा मनुक्ख तँ से नहि छी। एक तँ ओहिना गियानचनक मन चुल्हिपर चढ़ल लोहियाक दूध आगिक ताव पेब उफैन-उफैन उफनए लगैए तहिना गियानचनक मन सेहो उफैन गेलैन। उफैनिते मनमे विचार जगलैन जे साल भरिपर अबैबला हिजरो आ पमरियोक बधैया, बेटाक प्रति सुनियेँ लेलौं, तहिना समाजोक मुहसँ किए ने बधाइ

लऽ ली। कियो बेकती तखन ने समाजक अंग भेल जखन ओ समाजकेँ मेघडम्बर बुझि माथपर लेत।

समाजकेँ मेघडम्बर जकाँ माथपर लइसँ पहिने, माने बर्खाक समय जे मेघडम्बर ओढ़ि पानिसँ रक्षा करै छी, तखन ई बात तँ विचारए पड़ैए ने जे जइ मेघडम्बरकेँ माथपर उठा बर्खाक पानिसँ रक्षा करए चाहै छी ओइमे छेद वा टुटन तँ ने अछि। जँ से रहत तखन पानिसँ बँचब कठिन भइये जाइए। ओना, गियानचनक मन ऐठाम पहुँच ठमकलैन। ठमैकते ठहकलैन जे समाजो तँ अपन सूत्रवद्ध चलैए, भलेँ ओइ सूत्रमे केतौ-केतौ उनट-पुनट किए ने होइत हो मुदा तइले ते समाजसूत्र दोखी सेहो नहियेँ अछि किने। केहनो विपरीत समय किए ने हुअए तँए माता-पिताक सेवा माता-पिता जकाँ नहि होइ छैन सेहो बात नहियेँ अछि भलेँ एहनो जीवन चलिये रहल अछि जे कुलश्रेष्ठ माता-पिताकेँ कुलहीन नहि बनौल जाइए। मिथिलाक धरती केतबो शक्तिहीन किए ने भेल हुअ, मुदा ने कहियो बाँझ भेल अछि ने हएत। मिथिलाक उर्वराशक्ति ऐठामक धरतीक गर्भमे छिपल अछि, एहेन भूमि दुनियाँमे आरो केतए अछि। ऐठाम तक अबैत-अबैत गियानचनक विचार विरैम गेलैन। विरैमते कहलकैन- समाजकेँ बेटा-जन्मक खुशनामामे भोज सेहो खुएबैन।

भोजपर नजैर पहुँचते गियानचनक मन मुड़िया लगलैन। मुड़ियाइते मन कलशैत विचार देलकैन जे अखन तक अपना ऐठाम भतभोज होइए वा पूड़ी-मिठाइक, किछु दिन पूर्व धरि पूड़ी-तरकारी कहल जाइ छल आ आब पूड़ी-मिठाइ वा चूड़ा-दहीक भोज होइए। ओना, तीनूक विन्यास एक-दोसरसँ सटल रहितो हटल-हटल सेहो अछिए। तँए नीक हएत जे किए ने सभकेँ सामंजस करैत खीर-पूड़ीक भोज करी जे इतिहासो रचत आ लोकक ठोरपर सेहो रहत।

खीर-पूड़ीक भोजक विन्यासक बीच जखन गियानचन तजबीज करए लगला तखन अपने-मन उपैक-उपैक कहए लगलैन-

“भतभोजमे दालिक संग संयोग अछि तैठाम वएह भात दूधक संग

पबिते खीर बनि जाएत। तहिना पूड़ी तरकारी वा पूड़ी मिठाइक अछि, तैठाम पूड़ी तँ अपन रूपमे अछिए जे मिठाइ दूधक संग पेबिते खीर बनिते अछि। यएह ने जीवन छी जे शुरूक 'अ' अक्षर जकाँ अज्ञानीसँ अन्तिम 'ज्ञ' जकाँ ज्ञानी बनि ज्ञानपूर्ण जीवन धारण करी। एकाएक गियानचनक मन मानि गेलैन जे अपन श्रद्धा किए ने बेटाक जन्मक उपलक्ष्यमे अर्पित करी।"

❑

शब्द संख्या: 2988, तिथि: 25 मार्च 2021

दोसर पड़ाव

साल भरिक जखन रघुनाथ भेल तखन सुदामो आ दीनबन्धुओ मरि गेला। जहियासँ रघुनाथक जन्म भेल तहियासँ सुदामा बेसीकाल छातीमे साटि पोताकेँ रखै छेली। हृदयमे सटल रघुनाथक बालरूपसँ सुदामा अनेको रंगक आशाक फूल देखिये रहल छेली। जइसँ अनेको रंगक बाल-सुर्जक प्रकाशित रूप नजैरिक आगूमे नाचए लगलैन। नाचए लगलैन जे अखन बच्चाकेँ चङेरामे सुता सीक-सीकनी लटका अपन मुँह-हाथक रूप देखा-देखा खेलबै छी, यएह जखन तीन बर्खक हएत तखन बाप-पुरुखाक धएल-धरल खिस्सो-पिहानी सुनेबै आ साँझक संध्या आ भोरक परातीक संग सालक बारहो मासक बरहमासा, छहमासा, चौमासा सहित सोहर-समदाउन सेहो सुनेबै। सोहरपर नजैर पहुँचते सुदामा गुनगुनाए लगली-'ललना हे...।'

साल भरिक पछाइत, जहिना रघुनाथक शरीर कलशल तहिना गियानचनकेँ सेहो अपन पितृ दायित्वक आभास भेलैन। से खाली रघुनाथे धरि। किए तँ पिताक संग जे गियानचनक जीवन चललैन, ओ बच्चेसँ शुरू होइत, काजक रूपमे, अखन धरि चलैत आबि रहल छेलैन ओइमे मिसियो भरि बदलाव नहि भेलैन। जइसँ जहिना परिवारक गाड़ी रसे-रसे चलैत आबि रहल छेलैन तहिना चलिये रहल छैन। ओना, मनमे ईहो बात छैन्हे जे दुनियाँ जहिना जीवन ले सती अछि तहिना फुसी सेहो अछिए। लोहाक इंजन जकाँ मनुक्खक जीवनक समय निर्धारित नहियेँ अछि जे कखनो फुस-दे बैलूनक हवा जकाँ शरीरसँ प्राण निकलियो जाइते अछि। साल भरिक रघुनाथकेँ आगूमे देखि गियानचनक मन आह्लादित भऽ गेलैन।

पत्नीकेँ शोर पाड़ैत बजला- “कने एम्हर आएब..!”

पतिक बोलीमे कड़पन देखि सावित्री लगमे आबि बजली- “की कहै छी?”

गियानचन अखन तक बेटाक प्रति जे मनमे गारिकऽ रोपने छैथ, ओ अखन तक अपना छोड़ि दोसराक कान तक नहि जाए देने छला, मुदा सालभरिक रघुनाथकेँ देखि गियानचनक मन मानि गेल छैन जे साल भरिक बीचक जे शिशुपनक रोग-वियाधि अछि, ओहन रोगसँ तँ रघुनाथ टपि गेल, दोसर साल चढ़ैत-चढ़ैत बच्चाक दैहिक रोग सेहो धीरे-धीरे मेटेने, केतेको रोगसँ मुक्त भइये गेल। गियानचन बजला-

“जहिये रघुनाथक जन्म भेल तहिये मनमे एकटा विचार रोपा गेल जे छठियार तक अबैत-अबैत छठि रातिक विचार बनि गेल।”

पतिक विचार सावित्री किछु बुझबो केली आ बेसी नहियेँ बुझली। तँए सोझ-साझ शब्दमे बजली- “एकटा विचारक माने की भेल? विचारेक तँ दुनियाँ छी, एकरे विचार करैक अछि मुदा से तँ छी दुनियाँ भरिक, तइमे अहाँक की विचार मनमे रोपाएल से बजबे ने करै छी। धकमकाइक कोन बात अछि। अपन परिवार छी, बच्चा लगा चारि गोरे भेलौं। जखन माए-बाबू जीबै छेला तखन चारिसँ छह छेलौं, अखन छहसँ चारि भेल छी, फेर समय औत तीनसँ तेरह हएब।”

पत्नीक विचार गियानचन किछु सुनबो केलैन आ किछु नहियोँ सुनलैन। किए तँ जखन-जखन रघुनाथक संग अपन संकल्प मनमे उठैन तखन-तखन अनसून भऽ जाइ छला आ जखन बइसैन माने विचार थीर होनि तखन सून भऽ जाइ छला। बीहसँ विह्वल होइत गियानचन बजला-

“अपने एको अक्षर लिखैक आ पोथी पढ़ैक बोध नहि भेल, समयो अनुकूल नहियेँ छल जइसँ नहि भऽ सकल। मुदा अखन तँ से नहि अछि। रघुनाथ जेते पढ़ए चाहत तेते पढ़ेबै।”

अखन तक सावित्री पढ़ै-लिखैक मर्मकेँ नहि बुझि पेने छेली तँए अचम्भसँ अचम्भित होइत बजली- “अहाँ की बजलौं से नीक जकाँ मनमे

नहि गड़ल।”

गियानचनक मन अपने बच्चाक पढ़ैक विचारमे तेना उधिया गेलैन जे होइत रहैन कखन अपना आँखिये बेटाकेँ अकास चढ़ैत देखिऐ। पत्नीक प्रश्न सुनि गियानचनक मन जेना सबल भेलैन। सबल होइते बजला-

“अपन बेटा छी, जेहेन बनाएब तेहेन बनत।”

पतिक अधखड़ुआ विचार सावित्री नीक जकाँ नहि बुझली तँए झिझकैत बजली-

“आन कियो बेटाकेँ बँटने जाइए जे अप्पन आ बीरानक बात कहलौं।”

अपन छिड़ियाएल विचारकेँ समटैत गियानचन रघुनाथ दिस आँगुरक इशारा करैत बजला-

“अखन ऐ बालस्वरूप अर्जुनक प्रकाशदाता पहिल गुरु कृष्ण अपने दुनू परानी ने भेलिऐ।”

ओना, सावित्री गुरु-चेलाक विचार माए-बेटाक बीच नहि बुझै छेली मुदा एते तँ बुझबे करै छेली जे आगूमे जइ बच्चाकेँ देखै छी ओकर सर्वेसर्वा माने सभकिछु अखन तक अपने दुनू परानी ने छी। भेल तँ यएह ने जे पति-पत्नी मिलि दुनियाँ रचबो करैए आ ओकर निमरजनो तँ करिते अछि। मुस्कुराइत सावित्री बजली-

“गुरुएटा किए भेलिऐ, जनमदाताक संग करमदातो ने भेलिऐ।”

पत्नीक मुहसँ सुनल ‘जनमदाता-करमदाता’सँ गियानचनक मनमे ठनाक-दे नङेराक आवाज जकाँ लगलैन। जहिना माहौलक हिसाबसँ मन ठनकैए तहिना मनक हिसाबसँ माहौलो ने ठनकबे करैए। गियानचनकेँ सेहो तहिना भेलैन। निरविचारी जकाँ निरविचारक बनि सावित्रीकेँ हृदयमे बैसा बजला-

“रघुनाथ किछु अछि मुदा अप्पन तँ बेटा धन छीहे। बेटाधन केना सर्वमान्य धन बनत, ई तँ अपने दुनू परानी ने विचार करब।”

जहिना किछु हटल रहलोपर कियो कोनो वस्तु फेक कऽ दोसर हाथमे दइए तहिना सावित्री अपन भार फरिक्केसँ फेकैत बजली-

“दूटा बेटा-बेटी अछि, एकटाक भार अहाँक कन्हापर भेल, एकटाक भार हमरापर भेल।”

पत्नीक विचार सुनि गियानचक अपने मन चेतौनी दैत कहलकैन-

“जैठाम पुरुष-नारीक बीच सइयो रंगक जहिना सम्बन्ध अछि तहिना सइयो रंगक अन्तरो अछिए। जेना सोभावसँ पुरुष जेते कर्कश होइ छैथ, तइ हिसाबे महिला थोड़े नरम तँ होइते छैथ, मुदा दुनूक बीच जे सम्बन्धक जीवनधार बहैए ओहीक बीच ने बेटा-बेटी सेहो तैराइत-तैराइत चलैए, तैठाम दुनू गोरेकेँ फुटा-फुटा दुनूक भार लेब उचित नहि हएत। ऐसँ नीक ई हएत जे सम्मिलित रूपमे अपन-अपन दायित्वक अनुकूल दुनू गोरे दुनूक भार उठाएब नीक हएत।”

मनमे माने गियानचनक मनमे लगले दोसर विचार (समस्या) आबि धमकलैन। ओ ई आबि धमकलैन जे अखन अपने दुनू परानी जीवित छी तँए ने, मुदा ओहनो बाल-बच्चा तँ अछिए जइमे केकरो माए नहि छै तँ केकरो बाप नहि छइ। तैठाम एहेन बँटवारा केना हएत..?

लगले गियानचनक मन तेसर दिस ससैर गेलैन। ससैरिते अपने मन कहलकैन जे एहनो तँ बच्चा अछिए जेकरा माए-बाप मरि गेल छै आ ओकरो सेवा पालन-पोषण कियो दोसर करै छइ। ओना, दोसरो केते रंगक अछि जइमे हित-अहित दुनूक जन्म होइते अछि। आ जंगली जानवरक बच्चा जकाँ जेरक-जेर मरैत नहि अछि, सेहो तँ मरिते अछि। गियानचन जेते जेम्हर तकै छला तेमहर तेते नमहर-नमहर पाँतर, नमहर-नमहर गाछो-बिरीछ आ समुद्रो-पहाड़ सेहो आगूमे आबि-आबि ठाढ़ भऽ जाइ छेलैन। एकाएक गियानचनक मन अपन परिवारक सीमानपर आबि अँटैक गेलैन। बेटा-बेटीक रूप-प्रभावसँ गियानचनक मन भावुक भऽ गेलैन। बजला-

“जखन दुनू परानी जीवित छी, तखन बेटाक भार हम्मर किए आ

बेटीक भार अहाँक किए? भेल तँ एतबे जे हमर काजक देखभाल अहाँ रखू आ अहाँक हम राखब। तइमे केतौ एहेन कोताही नहि हुअए जइसँ बच्चाक जीवन प्रभावित होइ।”

पुरुख-नारीक बीच बनल परिवारमे जँ पुरुख अप्पन अधिकारो आ कर्तव्योक निमरजना इमानदारीसँ करैथ, तहिना जँ महिलो अपन अधिकार-कर्तव्यक पालन करैथ तँ निसचिते ने परिवार दुनियाँक अंग स्वरूप बनियेँ जाइए। दुनियाँक वस्तु जहिना तीतो अछि तहिना मीठो तँ अछिए। भलेँ किनको तीत लगने तीताइन बुझि पड़ैन आ मीठ लगने मीठाइन..! समुद्र रूप दुनियाँमे गियानचनक मन उग-डुम करए लगलैन। उग-डुम करिते महादेवक अर्द्धनारी रूप आगूमे आबि धमकलैन। मन कहलकैन- यएह ने द्वैत-अद्वैतक बीचक प्रवाहक घाट सेहो छी।

अपना जनैत गियानचन पितृ स्वरूप बनि बाजल छला मुदा लगले अपने मन दुतकारैत कहलकैन, ‘अखन तक अपनोमे ई कमी रहबे कएल अछि जे जेना पति-पत्नीक रूपमे परिवारक एकटा विचार जे जनम-सँ-करम होइत फलन-फूलनक रूपमे परिवार केना बनत? शरीरक बनावटसँ पुरुख-नारीक बीच लैंगिक भेद जरूर अछि मुदा बाँकी तँ सभ समाने अछि। विचारमे जे दूरी बनल बुझि पड़ैए ओ परिवार-समाजक परिवेशक प्रभावसँ भेल अछि। सामाजिक परिवेश शासनतंत्रक एकटा रूप सेहो छी। जखने अपन-अपन परिवारक दायित्व सभ माता-पिता, माता-पिताक रूपमे बच्चाक जन्मक आवाहनसँ लऽ कऽ समयक अनुकूल अपनाकेँ जोड़ैत चलैथ तँ निसचिते बच्चा समयानुकूल अपन परिवर्तन करैत चलत। समय मोड़पर एने एकाएक अनेको परिवर्तन हुअ लगैए जइसँ समाजक संग परिवारो प्रभावित होइते अछि, जखने परिवार प्रभावित हएत तखने ने बेकती सेहो हेबे करत। ओही प्रभावकेँ समयानुकूल बना चलब सिखाएब ने भेल बेटा-बेटीक मार्ग-दर्शन। दर्शन तँ देखबे छी किने। मुदा देखबो देखबमे अन्तर अछिए। ओना, मनुक्खक जीवन-दर्शन तँ सभक माने सभ मनुक्खक छी, मुदा ओकरा तेना काटि-खोंटि, छील-छालि रूप बना बदैल गेल अछि जे कठपुतरी नाच जकाँ बुझिये ने पबै छी जे जीबैत उड़ै छी

आकि मरल उड़ै छी।

सावित्री बजली- “बेटा किछु छी तँ पुरुखक बेटा छी, मुदा आएल तँ अछि माइयेक पेटसँ। तखन जहिना लोकक पेटक बात छीनि लोक अपन पेटक बात भरि अपना जकाँ बना लइए से थोड़े नीक भेल।”

पत्नीकेँ पीठपोहू होइत देखि गियानचन बजला-

“अखन अपना दुनू परानीकेँ दुनियाँ बिसैर अपन दुनियाँ ठाढ़ करैक अछि। जँ ऐगला पीढ़ीले से नहि करब तखन तँ ओ पीढ़ी वौआ जाएत।”

आन-आन बातपर सावित्रीक मन नहि अँटकलैन, मुदा ‘ऐगला पीढ़ी वौआ जाएत’ मनमे जेना ठाँहि-दे लगलैन। ठाँहि-दे ई लगलैन जे जँ ऐगला पीढ़ी वौआ जाएत तखन तँ ओ परिवारे नष्ट भऽ जाएत। जखन परिवारे नष्ट भऽ जाएत तखन ऐगला पीढ़ीक बढ़वारि केना हएत..? सावित्रीक मन घोर-मट्ठा पानि जकाँ भऽ गेलैन। तहूमे पानि पेनी पकैड़ लेलकैन आ मट्ठा ऊपरमे दहलाए लगलैन। विसमित होइत बजली-

“हम कि अहाँ विचारसँ कहियो भगलौं अछि जे भागब। ऐ घर-परिवारक कर्ता-धर्ता तँ समाज अहींकेँ ने बुझै छैथ। मौगी केतबो हएत तँ घरे भरि ने।”

गियानचन बजला- “अखन मौगी-मेहरिक विचार छोड़ू। पुरुखो मौगी होइए आ मौगियो पुरुख होइए। तँए कहब जे मौगी, मौगी नइ होइए आकि पुरुख, पुरुख नहि होइए सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो होइते अछि। अनेको रंगक परिवार समाजमे बसैए, किछु-ने-किछु दूरी एकसँ दोसर परिवारमे अछिए। आर्थिक क्षेत्र एहेन क्षेत्र छी जे जीवनकेँ सभसँ बेसी प्रभावित करैए। जइसँ अनेको रंगक विषमताक जन्म भइये जाइए। एक समस्याक समाधान दोसर समस्याक जन्मदाता सेहो छीहे। तँए, से सभ अखन नहि। अखन एतबे हमरा मनमे अछि, ‘बेटाकेँ इच्छानुकूल पढ़ाएब’ जे अहूँक मनमे बसि जाए।”

पतिक विचार सुनि सावित्री विचारक ओहन धारमे बहि गेली जइमे रंग-रंगक विचार मनमे उठए लगलैन। पहिल विचार उठलैन जे जहिना

पतिक विचार मनमे बैसाएब पत्नीक पुनीत कर्तव्य छी तहिना पत्नीक विचार पतिकेँ मनमे बैसाएब सेहो ने छी। लगले मन आगू बढ़ि अपन सामर्थ्य देखबैत विचार देलकैन जे जाबे तक पत्नी सोल्होअना पतिक हथधरिया बनि रहती ताबे तक अपन विचारक जन्मे केना हेतैन? लगले मनमे एलैन जे अखन तक जे अधिकांश लोककेँ भ्रम छैन जे जहिना पुरुषप्रधान सत्ता अछि तहिना झाँसीक रानी जकाँ परिवार-परिवारमे महिलाक सत्ता रहलैन। मुदा इतिहास से नहि छी, इतिहास छी जे जखन विवाह प्रथाक चलैन नहि छल, खुल्ला जीवन छल, तखन पुरुख-महिलाक संयोगसँ जे सन्तान होइ छल, ओकर देख-भाल माने सन्तानक सेवा, जन्मदाता माइये ने करैत रहली.! विसमित होइत सावित्री बजली-

"विचार तँ बड़बढ़ियाँ अछि, मुदा अहीं कहू जे जइ दिन हमर हाथ पकैड़ अहाँ माता-पिता लगसँ अनने रही तइ दिन अहींटा हाथ पकड़ने छेलौं आ हम मुट्ठी मुनि नेने रही।"

पत्नीक विचार सुनि गियानचन थकथकेला। थकथकाइक कारण भेलैन जे अपने मन कहलकैन जे ठीके पत्नी कहै छैथ, जहिना हम हाथ बढ़ा हाथ पकड़लिऐन तहिना ओहो ने अपना हाथसँ हाथ पकड़लैन। विवाह की छी? यएह ने जे मर्द-औरत संयुक्त रूपसँ स्वतंत्र परिवारक निर्माण करैथ। गियानचनक मनमे ई एबे ने केलैन जे जखन दुनू गोरेक शरीरक गढ़ैन एक्केरंग अछि तखन सोचै-विचारैक स्थल तँ सेहो ने एक्केरंग हएत। अपनाकेँ हारैत सन गियानचनकेँ मनमे हुअ लगलैन। मुदा रहि-रहि मनमे ईहो उठैन जे पत्नीक पछाड़ तँ एहेन पछाड़ छी जे सभ दिन जीवित रूपमे चलैत रहत।

असमंजसमे पड़ल गियानचनक बकार बन्न रहैन। ओना, कखनो-कखनो मनमे ईहो होनि जे जे पत्नी सभ दिन जाँघक तर रहली से ऊपर भऽ बाजि रहली अछि। तइ बिच्चेमे तगेदा करैत सावित्री बजली-

"एना गुम्म किए भेलौं। जखन घरनी लग गुमकी लाधै छी तखन दुनियाँ लग मुँह उठाएल हएत।"

अपन डेग पाछू मुहेँ ससारैत गियानचन बजला-

“अहाँ तेहेन विचार देलौं जे जहिना सरोवरमे नावपर चढ़ल यात्री, सरोवरक सैर करै छैथ तहिना ने मनो परिवारक विचारक धारमे झिलहोरि खेलबे करैए। अहीं कहू जे परिवार केना आगू मुहेँ दौड़ैत चलत?”

अपन गुरुत्व बुझि सावित्री बजली-

“परिवारक चलब काजसँ जुड़ल अछि। ओइ क्रियाकेँ दुनू परानी एकमत भऽ माने दुनूक एक विचार बना, भूतसँ भविष्य धरिकेँ अकानि आजुक परिवेशमे की स्थिति अछि, तेकरा ढंगसँ पकैड़ चलैक अछि।”

आह्लादित होइत गियानचन बजला-

“दुनियाँमे जेतए जे होइए से तेतक मुद्दा भेल, ओइठामक की सामाजिक ढाँचा अछि आ अपन समाजक की ढाँचा अछि, ऐ अनुकूल ने अपनाकेँ बना चलब।”

पतिक विचार सावित्रीक मनमे गड़लैन। गरिते धियान बेटापर गेलैन। रघुनाथपर पहुँचते सावित्री बजली-

“जहिना जनसमूह माने दू-तीन-चारि-पाँचक, कोनो निसचित क्रियाकेँ संकल्पस्वरूप विचारमे लइत आगू डेग बढ़बै छी तहिना डेग बढ़बैत चलबे ने जीवन प्राप्त करब हएत। रघुनाथकेँ इच्छानुकूल पढ़ाएब, यएह ने भेल दुनू गोरेक बीचक संकल्प।”

पत्नीक विचार सुनि गियानचनक मन कलैश उठलैन।

❑

शब्द संख्या: 1903, तिथि: 29 मार्च 2021

तेसर पड़ाव

साढ़े चारि बर्खक रघुनाथ भऽ गेल। सुपुट बोली सेहो मुहसँ निकलए लगलै आ घर-अँगनाक छोट-छोट अढ़ौती सेहो माता-पिताक करए लगल। गियानचन केतौसँ आएले रहैथ, चैतमासक दस बजे दिनक समय, पत्नीकेँ कहला-

“एक लोटा पानि नेने आउ।”

पिताक बात सुनि रघुनाथ लोटामे पानि नेने पितालग पहुँचले छल कि सावित्री सेहो पहुँचली। पतिपर नजैर पड़िते जहिना सावित्रीकेँ भेलैन तहिना पत्नीपर नजैर पड़ैत गियानचनकेँ सेहो भेलैन। दुनूक मनमे एक्के विचार उठलैन। उठलैन ई जे यएह छी परिवार आ सखा-सन्तान। जखने परिवारमे शक्तिक अनुकूल परिवारजन काज सम्हारए लगै छैथ तखने ने परिवारक काज हेराएल फिड़ैए। परिवार छी, ठट्ठा नहि छी। पाँच गोरेक परिवारमे ओते आवश्यकता अछिए जेते राजसत्ता सम्हारैमे राज-काजकेँ होइए। जखने आवश्यक काजकेँ माने परिवारक आवश्यक काजकेँ, करैत-हरैत नहि चलब ताबे तक ओइ काजक फलाफल केना पएब। ओना, सुफल-कुफल दुनू होइए मुदा से अखन नहि। अखन एतबे जे जखने परिवारक सभ खगताकेँ शक्तिनुकूल परिवारजन पूर्ति करए लगत, तखने ने परिवार अपना बलेँ ठाढ़ हएत। एक-एक परिवारकेँ जँ एक-एक बेकती, बेकतीसँ मतलब परिवारजनसँ, सही दिशामे ठाढ़ कऽ लैथ तँ जरूर देश ठाढ़ भऽ जाएत। प्रश्न अछि, की बेकती अपन परिवारकेँ खसले देखि खुशी होइ छैथ, आकि ठाढ़ भेल देखि खुशी हेता? यएह छी समाजक रहस्य। सभक मनमे एके विचार बसैए जे अपनो आ परिवारोक

कल्याण हुअए, मुदा केना रहस्य बनल अछि जे सभकेँ चाहितो भइये नहि पबैत अछि.?

पानि पीब गियानचन बजला- "साढ़े चारि बर्खक रघुनाथ भऽ गेल। छह मासक पछाइत स्कूलमे नाओं लिखा देब।"

कोखिक बच्चाकेँ विद्यालय जेबाक नाओं सुनिते सावित्री तेना अपने-आपमे हेरा गेली जे पतिक विचारपर सँ नजैर ओतए पहुँच गेलैन जेतए पढ़ल-लिखल बेटाकेँ देखि सभ माता-पिताकेँ होइ छैन। विचारक बोनमे बौराइत सावित्रीक बकार बन्न रहलैन।

पत्नीक मुँह बन्न देखि गियानचनक मनमे उठलैन जे भरिसक पत्नी बेटाकेँ विद्यालयमे प्रवेशक बात सोचि रहली अछि, तँए किछु बाजि नहि रहली अछि।

एकाएक सावित्री मुँह खोलैत बजली- "छह मासक आशा किए रखने छी। आइये ने किए बच्चाकेँ विद्यालय प्रवेश करा देब।"

लकीरक फकीर बनल गियानचन बजला-

"पाँच बर्खक पछातिये बच्चाकेँ विद्यालयमे प्रेवश कराएबकेँ सभ नीक मानि रहला अछि।"

ओना, कातिक मासक हिसाबसँ रघुनाथ छह मास पूर्वे माने चारि बर्ख बीतला पछातिये विद्यालय प्रवेश करै-जोकर भऽ गेल छल, मुदा गियानचनक मनमे बैसल पाँच बर्ख बाधा बनले छल। आजुक परिवेशमे तीन बर्खक उम्रक बच्चाक दाखिला विद्यालयमे हुअ लगल अछि, मुदा किछु दिन पूर्व तक पाँच बर्खक सीमा छल। पाँच बर्ख आ तीन बर्खक बीचक समयक मुख्य समस्या अछि, कुपोषण आ सुपोषण। आजुक परिवेशमे बच्चाक पोषण जे हुअ लगल अछि तइ अनुपातमे पहिने नहि होइ छल। कुपोषण पलित बच्चा शरीरसँ अध्ययन करए विद्यालय जेबा-जोकर नहि होइ छल। सावित्री बजली- "आइ जँ छह मास पहिने रघुनाथकेँ विद्यालयमे दाखिल करा देने रहितिऐ तँ अखन तक नाम-गाम सीखिये नेने रहैत। तँए..।"

'तँए' कहि सावित्री मुँह बन्न कऽ लेली। मुदा गियानचनकेँ 'तँए' शब्द जेना तीर जकाँ माथमे लगलैन। एक सूरे तीन-चारि बेर बजला-

"तँए... तँए... की तँए?"

गियानचनक मनक रोष देखि सावित्री बजली- "नीक विचार जखने मनमे आबए तखने समय पेब ओकरा क्रियान्वित करब शुरू कऽ दी। तइमे कनियोँ विलम नहि करक चाही।"

अपन मनक आक्रोश झाड़ैत गियानचन बजला- "पाँच बरिसक उम्र भेला पछातिये बच्चाकेँ विद्यालय जाइ-जोकर विचार समाजमे मानल जाइए।"

जहिना आमक गाछपर बेठेकान गोला फेकला पछाइत जँ कोनो पाकल आम टुटिकऽ खसैए, जेकरा पेब गोलवाह अपन सुफल बुझैए तहिना सावित्री अनठेकाने वाण छोड़ैत बजली-

"जँ समाजक बीच सर्वमान्य अछि जे पाँच बर्खक पछातिये बच्चाक दाखिला विद्यालयमे हुअए, तखन दाखिला-उम्रक बीच चोरा-नुक्की किए होइए?"

ऐठाम ई नहि कहै छी जे नोकरी-संस्कृति एहेन वृत्तिक जन्म देलक।

सावित्रीक विचार गियानचन नीक जकाँ नहि बुझि पेला, किए तँ 'चोरा-नुक्की' सुनि मन धिया-पुताक चोरा-नुक्की खेलपर चलि गेलैन। वौआएल मने गियानचन बजला-

"की चोरा-नुक्की होइए?"

जेना हाथमे आएल कोनो वस्तु देखि मनमे खुशी होइए तहिना सावित्रीक मनमे सेहो खुशी भेलैन। बिहुसैत बजली-

"बहुत गाम एहेन अछि जइ गाममे विद्यालय नइ छै, संजोगबस जखन विद्यालय खुजैए तखन पढ़ैयेबला बच्चा ने ओइमे दाखिला लेत?"

गियानचन बजला- "हँ।"

पतिक मुहसँ 'हँ' सुनिते सावित्री मुस्कुराइत बजली- "जइ क्षेत्रमे

स्कूल-कौलेज खुजैए तही क्षेत्रक बच्चा ने ओइमे प्रवेश लेत। मुदा बच्चो-बच्चोमे तँ अन्तर अछिए। किछु एहेन अछि जेकरा पढ़ै-लिखै दिस धियान जाइ छै आ किछुकेँ नहियोँ जाइ छइ। जेना अखन तकक विद्यालयमे रहल अछि जे गाममे विद्यालय रहितो नहियेँ पढ़निहारक संख्या बेसी अछि, जेकरा पढ़ै-लिखैमे मन नहि लगैए मुदा पढ़ल-लिखल काजमे मन लगने गैवारि-भैंसवारि करैमे नीक लगैए। तहिना एहनो बच्चा तँ अछिए जेकरा गैवारि-भैंसवारिमे मन नहि लगैए आ विद्यालयक विद्याध्ययनमे मन लगैए।”

पत्नीक मुँहक बात सुनि गियानचनक नजैरिक ज्योति भकजोगनी जकाँ भुकभुकाए लगलैन, किए मनमे अबितैन जे जीवन ले दुनूक जरूरत अछि। ने छुच्छे पढ़ि-लिखि नेने जीवन चलत आ ने छुच्छे काजे केलासँ चलत, दुनूक जीवनानुकूल मिश्रित जीवन बनौलासँ चलत। जेकरा भक्तियोग सेहो कहल जाइए। ज्ञान-कर्मक योग भक्तियोग कहैबते अछि। क्षेत्रमे विद्यालय खुजलासँ जहिना बेसियो उम्रबला अपन दाखिलाक उम्र अपने बना दाखिला लइए तहिना एहनो तँ अछिए जेकरा विद्यालय जेबाक जिज्ञासा छै मुदा उम्र कम छइ। सेहो तँ उम्र चढ़ा प्रवेश लइते अछि, तैसंग एहेन नहि अछि जेकर उम्र ठीक-ठीक छै, सेहो तँ अछिए। एकाएक गियानचनक मन विराम लेलकैन। विराम लइते गियानचनक मनमे उठलैन जे जखन दुनू परानीक बीच छह मासक अन्तरक मनभेद अछि तखन किए ने रघुनाथेकेँ बीचमे, पोखरिक जाठि जकाँ ठाढ़ करैत, मंत्र पढ़ैत जे ऐठाम तक समाजकेँ उत्सर्ग कऽ रहल छी, जाठि बना ठाढ़ करैत पुछि ली। गियानचन रघुनाथ दिस मुँह घुमा बजला-

“बौआ, काल्हि तोरा इसकूलमे नाओं लिखा देबह।”

पिताक बात सुनि रघुनाथ माए दिस तकलक। आँखिक इशारासँ सावित्री अपन जीतल विचार सेहो दऽ देलखिन। माइक इशारा पेब रघुनाथ बाजल-

“बड़बढ़ियाँ।”

बेटाक मुहसँ 'बड़बढ़ियाँ' सुनि गियानचनक मन जेना चमकलैन। चमैकते मनमे उठलैन जे जँ परिवारमे जिनगीक अनिवार्य तात्त्विक कर्मकेँ बुझि ओइमे अपनाकेँ सानिध कऽ ली, यएह ने भेल पारिवारिक जीवन। मुदा स्वभावानुकूल, मुख्य रूपसँ परिवारमे आर्थिक तंगी रहने, माइक मन बच्चाक पढ़ाइ-लिखाइ दिस नहि जा परिवारक आन-आन वृत्ति दिस भँसिते अछि। एकर माने ईहो नहि जे सभक, माने सभ माएकेँ, एहेन सोभाव होइते छैन। ओना सामाजिक परिवेशक, खासकऽ परिवारक परिवेशक प्रभाव मनुक्खपर बेसी पड़िते अछि, जइसँ विचारमे संचरण सेहो होइते अछि। पतिक विचारपर दाब दैत सावित्री बजली-

"भऽ गेल ने पक्का.! काल्हि रघुनाथकेँ इसकूलमे नाओं लिखा देबै किने?"

गियानचनक मनमे कोनो कलछपन रहितैन तखन ने अगर-मगर करितैथ, से तँ रहैन नहि। सुपुट शब्दमे बजला-

"दुनू गोरेक संकल्पक शिलान्यास काल्हि निसचित हएत।"

जेना-जेना दिन बीतैत गेल तेना-तेना परिवारक आन-आन काज दिस गियानचनक धियान बढ़ैत गेलैन आ कौल्हुका विचार माने रघुनाथकेँ विद्यालयमे प्रवेश कराएब, धियानसँ उतरैत गेलैन। उतरैत-उतरैत तेते उतैर गेलैन जे खाइ-पीबै राति धरि धियानमे नहियेँ एलैन।

खेला-पीला पछाइत गियानचन जखन सुतैक ओछानिक सिरहानापर सिर देलैन तखन काल्हुक काजक विचार, माने रघुनाथकेँ विद्यालयमे प्रवेश कराएब, मनमे धक-दे उठलैन। ओना, नीक भेलैन जे भरि दिन बिसरल रहला नहि तँ आजुक जीवनक जे अनिवार्य काज अछि ओ भविष्यपर, माने काल्हिक सपनापर, धियान देने मरबे करितैन। जखने आजुक काज मरत तखने जीवनक कटान सेहो हेबे करत। वर्तमाने ने भविष्यक सपनाक रास्ता बनबैए, तैठाम जँ कटान भऽ जाएत तखन ओते कँटाह रस्तो तँ बनबे करत किने..! एकाएक गियानचनक मन अपने कहलकैन, अनेरे कोन केशौरक सिर पकैड़ बिच्ची भँजियबैक लपौड़ीमे

छी, माए थोड़े विद्यालय पहुँच रघुनाथक (बेटाक) नाओं लिखौती। ओ तँ अपने जाए पड़त। विद्यालयमे जखन शिक्षक रघुनाथक उम्र पुछता तखन कहबैन जे हमरा सन-सन परिवारमे जन्मकुण्डली थोड़े लिखल जाइए आकि अपने पढ़ल-लिखल छी जे डायरी मेनटेन करब। अहाँक रेकर्डक अनुकूल जे होइ से अपने विचारसँ लिखि दियौ।

सोझ रस्ता देखिते गियानचनक मन थीर हुअ लगलैन। नीक जकाँ थीरो ने भेल छेलैन कि जेना कियो पोखैरमे गोला फेक पानिमे हिलकोर उठा दइए तहिना गियानचनक मनमे हिलकोर उठलैन। हिलकोर ई उठलैन जे आइ धरिक जे परिवारक, माने अपन परिवारक, विद्या भवनक प्रवेशक गति रहल ओ अखन तक खाली-खाली रहल। आइ धरि पैछला पीढ़ी, विद्यालयक मुँह नहि देखलैन काल्हि बेटाकेँ मुँह देखाएब। निराशाक बोनमे गियानचनक आगू आशाक किरण छिटकलैन। यएह ने जीवनक, माने परिवारक जीवनक, परिवर्तनक सीढ़ी भेल। जीवनक परिवर्तने ने जीवनक विकास-प्रक्रिया छी। सिरमापर सिर राखल गियानचनकेँ कखन नीन चलि एलैन से अपनो ने बुझि सकला आ चेतनशून्य साधक जकाँ प्रकृतस्थ भऽ गेला।

रातिक बारह बजे, जखन गियानचनकेँ पहिल नीन नीक जकाँ पुरलो ने रहैन तइ बिच्चेमे, गियानचनक पहिल नीन पाँच-साढ़े-पाँच घन्टाक होइ छैन, छातीमे टनक उठलैन। टनक उठिते नीन टुटि गेलैन। नीन टुटिते पत्नीकेँ शोर पाड़ैत बजला-

“कनी ऐम्हर आएब।”

टनकक बात मनेमे ऐ दुआरे छिपौने रहला जे अखन अधरतिया समय अछि, जँ आन सुनता तँ अनेरे ने हल्ला करैत दौड़ल आबि पुछता जे की भेल? जिनगीमे एहेन-एहेन दर्द एक नहि, अनेको दिन लोककेँ होइते अछि। कहियो माथ दर्द तँ कहियो पेट दर्द तँ कहियो आन-आन अंगक दर्द होइते अछि। किछु अपने छुटि जाइए आ किछुकेँ इलाजसँ छोड़ाएल जाइए।

ओना, सावित्रीक नीन सेहो टुटि गेल छेलैन, किए तँ सुतबेकालसँ मन रघुनाथपर नाचि रहल छेलैन। जइसँ नीन तेना छगा गेल रहैन जे होइन परात भऽ गेल। बेटाकेँ आइ विद्यालयमे प्रवेश कराएब अछि। सावित्रीक अपन मन परिवारक अपन काजपर सँ सोल्होअना हटि चुकल छेलैन। हटि ई चुकल छेलैन जे अखन तक जे रघुनाथकेँ किछु बोधो आ चिन्हो-परिचय परिवारसँ लऽ कऽ टोल-पड़ोस तक भेल अछि वा परिवारेक वस्तु-जात चिन्हैक लूरि भेल अछि, ओ केकरा बले भेल अछि। मातृत्वक महत बुझि अपने अपन कर्तव्यक निर्वहन केलौं, मुदा बच्चा तँ पानिमे अण्डस्वरूप पैदा लैत धीरे-धीरे मनुक्खक आकार ग्रहण करैए। आजुक साढ़े चारि बर्खक रघुनाथोक तँ सएह ने रहल। ओ ओहिना ऐठाम तक पहुँचल अछि आकि पहुँचैक अनुकूल परिस्थिति बनेलौं तखन पहुँचल? पति लग पहुँच सावित्री बजली-

"किए शोर पाड़लौं?"

गियानचनक छातीक टनक बढ़ैत-बढ़ैत तेते बढ़ि गेलैन जे ओ बेसुध भऽ गेला। की भेल, केना होइए, किछु ने बाजि पेला..! दोहराकऽ सावित्री पुछैसँ पहिने ठेकानए लगली। तैबीच गियानचन हाथक इशारासँ अपन छाती देखबैत अपन दर्द प्रकट केलैन। जखने कियो अपन छातीक (हृदयक) दर्द प्रकट करै छैथ तखने दोसरोक माने देखनिहारो-सुननिहारकेँ सेहो छाती दलैक-दलैक फटबो करै छैन आ दोसरकेँ, माने फटल छातीकेँ, जोड़बो तँ करिते अछि। मुदा से सभ बात गियानचनकेँ नहि रहैन। तखन कहब जे अपन दर्दकेँ गियानचन ओहन साधल ऋषि-मुनि जकाँ साधि नेने रहैथ जे अपन पैघ-सँ-पैघ दर्दकेँ अपने छातीमे मुक्का जकाँ मारि सबुरसँ रहि जाइ छैथ, तहिना गबदी मारि मुँह बन्न केने गियानचन रहला? नहि सेहो ने रहला। तखन ई कहब जे एहनो तँ लोक होइते छैथ जे छोट-छीन अमतियो काँट गड़ने तेते आहि-आलम दोसर लग करै छैथ, खासकऽ पत्नी लग, जेना शाही काँट पैरक ऐ पारसँ ओइ पार गँथा गेल होनि, सेहो गियानचन नहियेँ छला।

संयोग बनल, गियानचनक दर्द कने मोड़ लेलकैन जइसँ मन थोड़ेक खनखनेलैन। खनखनाइते आँखि तकला कि पत्नीकेँ आगूमे ठाढ़ देखलैन। आँखिक पल खसबैत गियानचन बजला-

“हम नहि जीब। मनमे जे सिहनता छल से आब नहि पूरा पाएब। रघुनाथक भार अहाँ ऊपर रहल।”

पतिक बात सुनि सावित्रीक मन ठकमुरा गेलैन। ठकमुरा ई गेलैन जे कियो ठक जेकरा ठकैए ओ बुझैए जे ठक जकाँ फल्लाँ ठकि लेलक तँए ठक छी, आ ठक बुझैए जे चलाकी सुतरल। जइसँ मन कहिते छै जे चलाक छी, चलाकी बेवसाय भेल आ चलाक अपने भेलौं। चलाक बनैक सिहन्ता माइयो-बापकेँ रहिते छैन जे धिया-पुता जेते चलाक (माने बुधियार) हएत तेते नीक भेल। पतिक बात सुनि सावित्रीक मन झमान होइत खसए लगलैन। एक दिस परिवारक जे कर्ता पुरुख छैथ ओ जा रहल छैथ जइसँ परिवारक ओहन बोझ माथपर औत जेहेन आइ धरि बुझबे ने केलौं अछि। तैपर रघुनाथक सम्बन्धमे आइये दुनू बेकती मिलिकऽ संकल्प लेलौं अछि जे काल्हि बेटाकेँ विद्यालयक मुँह आँखि देखाएब..!

आगि लगलापर जहिना परिवारक घर-दुआरक संग घरमे राखल वस्तु-जात सेहो जरि जाइए, जइसँ आगि लगैसँ पूर्व तक जेहेन मन रहैए, एकाएक ओहन मरुभूमिमे पहुँचिये जाइए जे अछैते सभ किछु किछु ने अछि। अपन जरैत मनकेँ सावित्री छोड़ पकैड़ काबू केलीह। काबू करिते, विचार उठलैन जे बच्चाकेँ विद्यालयमे प्रवेशक संकल्प पूर्ति तँ काल्हि दिनक ने छी, मुदा तइ बिच्चेमे जखन पतिक एहेन स्थिति भऽ गेल छैन तखन तत्काल तँ एहेन संकल्प ने करैक अछि जे रास्ता चलैत आगूमे केहनो पहाड़ किए ने हुअए, मुदा जँ ओइकेँ टपने बिना जिनगीक गाड़ी नहि चलत, तखन तँ ओइकेँ टपैक कोनो ओरियान पहिने करै पड़त। आजुक संकल्पकेँ संकल्पित करैत सावित्री विचार केलीह जे अखन जे स्थिति पतिक छैन ओ बिना दोसरक सम्हारने सम्हारमे नहि औत तँए

पहिने पड़ोसीकेँ ऐठाम जा कहिऐन जे अखन हम भारी बिपैतमे पड़ि गेल छी तँए अपनेसँ गुहाइर लगबए एलौं अछि। केतबो लोक दया-धर्मकेँ मेटौत मुदा ओ मेटाइबला थोड़े छी। जाबे मनुख रहत ताबे ओहो रहबे करत। एकर जन्म कोनो आइये भेल अछि आकि आइये मेटा जाएत, सेहो बात नहियेँ अछि। मनुक्खक रूपमे, माने मनुक्खक जन्म सत्तैर लाख बर्ख पहिने भेलो पछाइत, पछातियो पचास लाख बर्खक जीवन ओहने ने रहलैन जेना चारि पैरपर जानवर चलैए। माने मनुक्खो पैरक संग हाथसँ चलैत रहल अछि। भलेँ बीस लाख बर्ख पूर्व किए ने दुनू हाथ अकासमे उठा पैरक बले चलल हुअए।

पड़ोसीक आशा देखि सावित्री अपन मनकेँ सक्कत डोरीसँ बान्हि ई सोचि कऽ जे जँ कियो हवा-जहाजक एक्सिडेन्टमे खसि हुकहुकी धेने छैथ तँ हुनकर हुकहुकीकेँ पुन: जीवित करैक कोशिशे ने कियो कऽ सकैए आकि ओकर साती कियो मरि जाएत।

पड़ोसी ऐठाम पहुँच सावित्री पड़ोसिनीकेँ शोर पाड़ि बजली-

“दीदी, दीदी।”

ओना, ‘दीदी-दीदी’ सुनि पहिने रतनलालेक नीन टुटलैन, मुदा ओ चुप ऐ दुआरे रहला जे राति-विराति जँ स्त्रीगणक आवाज आबए तँ पहिने स्त्रीगणेकेँ जवाब देब नीक हएत। जँ कियो मर्द पहिने जवाब दइ छैथ तँ अनेक लांछनक सम्भावना बनिते अछि। ओना, जान-पहचान सेहो बीचमे अछिए। जँ परिचितक आवाज कानमे अबैए तँ सम्बन्धकेँ मोन पाड़ैत बेवहार करब सभसँ नीक। ओना, रतनलाल सोझमतिया लोक तँए सावित्रीक आवाज सुनिते पत्नीकेँ उठबैत जोरसँ बजला-

“ऐ अल्लापुरवाली, ऐ अल्लापुरवाली।”

एक तँ ओहुना रतनलालक आवाज भारी छैन तैपर आरो जोड़ दैत जे बाजल छला तइसँ सितली नीन तोड़ि चहाकऽ बजली- “की-की..!”

तइ बिच्चेमे सावित्री बजली- “दीदी-दीदी?”

उत्तर दैत सितली बजली- “की कहै छी ब्रह्मपुरवाली कनियाँ?”

ओना, तीन दिन पहिने दुनूकेँ, माने ब्रह्मोपुरवाली आ अल्लोपुरवालीकेँ, तेते कहा-कहीक झगड़ा भेलैन जे दुनू दुनूक दुआरि दिस घुमि थूक फेक चुकल छेली जे ने तोहर दुआरि दिस ताकब आ ने तोरा टोकब। दुनू दुनूकेँ कहि चुकल छेली- 'ने तोहर बेगरता हएत आ ने तोहर बेगरता हएत।' मुदा केतबो मिथिलाक मथल विचार मरि गेल किए ने हुअए मुदा गाममे तँ अखनो ओहिना जीवित अछि जेना सभदिनसँ रहल अछि जे जँ कियो दरबज्जापर आबि जाथि तँ हुनका संग आगन्तुकक बेवहार करबे धर्म छी। ई दीगर जे जमात बना कियो बदला चुकबए सेहो अबिते छैथ। ई एक खास खाशियत भेल। मुदा अखन से नहि, अखन एतबे जे दुनू गोरेकेँ माने अल्लोपुरवाली आ ब्रह्मोपुरवालीकेँ झगड़ा किए भेल छेलैन?

मधुबनी जिलाक मध्य भागमे बसल ब्रह्मपुर एकटा नीक गामक श्रेणीमे अछि। ऐ गामक महिलामे एते गुण तँ अगुआइये गेल छैन जे जहिना बोली-चालीमे मीठाँस छैन, तहिना कपड़ा-लत्ता ओढ़ब-पहिरबसँ लऽ कऽ खेबा-पीबाक विन्यास बनबैमे सेहो अगुआएल छथिए। हँ, एते अभाव तँ जरूर छैन्हे जे खेत-पथारसँ कोनो माने-मतलब नहि रहै छैन। मुदा सितलीक बोली कौआक बोली जकाँ छैन, तहिना खाइयो-पीबैक आ ओढ़बो-पहिरबमे ब्रह्मपुरवालीक अपेक्षा पछुआएल जरूर छथिए। मुदा खेतो-पथारक काज आ मालो-जालक सेवा करैमे अल्लापुरवाली पुरुखक कान कटिते छैथ।

सावित्री बजली-

"रघुनाथक बापकेँ छातीमे दर्द उठि गेल छैन, से...।"

'दर्द' सुनिते रतनलाल बजला-

"कनियाँ, अहाँ आगू बढ़ू हम पीठेपर चलि अबै छी। ताबे अहाँ मालीमे कड़ुतेल निकालि कऽ राखब। तेलकेँ मंत्राइयो देबै आ ससारो अबैए। कोनो चिन्ता नइ करू, सब ठीक भऽ जेतैन। अहाँ केकरो अधला करै छी जे भगवान अहाँकेँ अधला करता।"

रतनलालक शान्त्वनापूर्ण विचार सुनि सावित्रीक मनमे शान्तिक लहैर उठलैन। बजली-

"दीदी, पैछला सब बात बिसैर जाथु। जैठाम चारिटा वर्तन रहैए तैठाम ढनमनेबे करैए।"

ऐठाम सब बात बिसरैक माने अछि झगड़ा-दनसँ, अल्लापुरवालीक बातकेँ सितली मने-मन मानि गेली जे अनेरे जे कहा-कहीमे काजक समय दुरि करै छी से नीक नहि, ओते अपने नोकसान होइए। तइसँ नीक ने जे शान्तिसँ पड़ोसी बनि सब किछु परोसैत जीवन-यापन करी। सितली बजली-

"जइ दिनक जे दोख छल, से बीतल, तँए कि बेरो-बिपैत लोक छोड़ि देत।"

अखन तक समाजमे ईहो विचार तँ जीवित अछिए जे आगि लगला वा कोनो आफद-असमानी एलापर बारहो वर्ण एक-दोसरक सहयोग करैत आगियो मिझबैए आ बेर-बिपैतमे ठाढ़ो तँ होइते अछि। तैठाम कहाँ अछि छुत-अछुत कि भेद-भाव आकि ऊँच-नीचक विचार। मुदा तँए छुत-अछुत समाजसँ मेटा गेल अछि, सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो तँ जीवित अछिए आ रंग-रंगक भेद-भावकेँ प्रोत्साहन सेहो लोक दइते छैथ।

गियानचन लग पहुँच रतनलाल कुशल चिकित्सक जकाँ सावित्रीकेँ कहलखिन-

"हमरा जेते बुधि-अकील अछि से हम लगबै छी, मुदा अहूँ बैसू नहि। राधाबाबू लग सेहो किनको पठबियौन। राधाबाबू अनुभवी डॉक्टर छैथ। बिमारियोक कोनो ठेकान अछि जे कोन रूपमे कोन बिमारी देहमे पैस जाइए।"

ओना, जीवनक अनाड़ी सावित्री छथिए तँए साधारणो भीर-कुभीर पड़लापर मन विचलित भइये जाइ छैन, मुदा रतनलालक विचार सुनि मन ओते विचलित नहि रहलैन जेते पहिने छेलैन। पाछू लगल सितली सेहो एली। तैबीच रतनलाल तेलक मालिश गियानचनक छातीमे ऐ रूपेँ करए

लगला जइ रूपेँ अनुभवी लोक करै छैथ। तइसँ गियानचनक दर्द कनेक कमलैन। दर्द कमिते आँखि खोलि गियानचन बजला-

“रतन भाय.!”

रतनलाल- “हँ, की भेल छह गियान?”

गियानचनक बाजब सुनि सावित्रीक मनमे एते आशा जगि गेलैन जे आब पतिक दर्द छुटि जेबे करतैन। सितली बजली- “कनियाँ, एतबेसँ सोल्होअना भरोस नहि करू। एक-पर-एक करिन्दा लोक दुनियाँमे छैथ। ओना, अखन बेसी रातियो अछि, कहुनाकऽ भोर हुअ दियौ तखन आरो प्रतिकारक जोगार करब अछि।”

गियानचन बजला-

“भैया, की कहब जे की भेल केना भेल। नीनसँ सुतल छेलौं, तहूमे की भेल से बुझबे ने केलौं।”

होइतो अहिना अछि जे असाध-सँ-असाध रोग शरीरमे केना प्रवेश कऽ जाइये से लोक थोड़े बुझि पबैए। हँ, एते जरूर अछि जे साँप कटैत हुअए आकि आगिमे जरैत होइ वा गाड़ी-सवारीमे दुर्घटनाग्रस्त भऽ गेल होइ, से आँखिसँ देखबो करै छी आ अपना जनैत बँचैक परियासो करिते छी, मुदा पैघ-सँ-पैघ रोग शरीरमे केना पैस जाइए से सभ थोड़े बुझि पबैए। तहूमे नीनभेर रातिमे। समाजो आ परिवारोक बीच अहिना ने अछि जे समाजक की समस्याक अछि से थोड़े समाजेक सभ आकि परिवारेक सभ बुझै छैथ। तहूमे जे शरीरक रोग अछि ओ शरीर-रोग परखनिहार परैखकऽ पकैड़ लेता मुदा मनक रोग पकड़ब असान थोड़े अछि।

गपो-सप्प करैत आ आस्ते-आस्ते रतनलाल गियानचनक छातियोपर हाथ सहलाबैत ससारै छला, तैबीच कठिन रातियो, माने गरूगर राति, अपना गतिये आगू बढ़ि अप्पन सीमा टपि गेल। भोर होइते, कौआक टाँहिक आवाज सुनि सभक मनमे एक्केबेर भेलैन जे भोर भऽ गेल। जखने भोर भेल तखने दिनक आगमन सेहो लगिचाइये गेल। जइसँ दुनियाँ देखैक बाट सेहो खुजिये जाएत।

सितली बजली- “कनियाँ, दुखक राति कटि गेल..! आब दिन भेल, जहिना एक-पर-एक असाध रोग अछि तहिना साध करैबला साधक सेहो एक-पर-एक छैथ, तँए मनमे गिरह बान्हि लिअ जे आब पतिक रोग भगबे करत।”

सितलीक विचार सुनि सावित्रीक मन ओहिना थीर भेलैन जेना पतालक पानि थीर रहैए। सावित्री बजली-

“दीदी, हम कहुना भेलौं तँ नव-नौतारि भेलौं, मुदा ई तँ से नहि छैथ। पोता-पोती तकक पालन करै छैथ, जेना जे कहती तेना से करै पाछू अपन देहो धरि बेचि लेब।”

अपन परिवारक प्रवाहमे सावित्रीकेँ हेलैत देखि सितलीक मन मोमबत भऽ गेलैन, जइसँ नव-नव विचारक सिरखार सेहो सावित्रीक प्रति मनमे जागए लगलैन। सितली बजली-

“कनियाँ, किछु छी तँ अपना सभ पछुआएल देशक लोक छी। सभ किछु पछुआएल अछि। अपन सीमा देखैत अपन जीवनकेँ सीमियबैक जेते शक्ति अछि तइमे नइ चुकी। एक-पर-एक जहिना दुनियाँमे ठक अछिए जे मनुक्खक कोन बात भगवानोकेँ ठकिते अछि। ओना, भगवान ने आँखि-कान मुनल ठका जाइ छैथ, मुदा अपना सभ किछु छी तँ मनुक्खेक बच्चा ने मनुख छी, पाँच तत्त्वसँ निर्मित धरतीक सभसँ श्रेष्ठ जीव, जानवरक बच्चा जानवर थोड़े छी।”

अपना जनैत सितली की बजली आ अपना मने सावित्री की बुझलैन से तँ वएह दुनू जनती, मुदा तइ बिच्चेमे गियानचन बजला-

“आब हम नहि जीब।”

❑

शब्द संख्या: 3101, तिथि: 04 अप्रैल 2021

चारिम पड़ाव

गियानचनक बिमारीकेँ आइ छह मास पाँच दिन भऽ गेलैन। आजुक स्थिति सभ दिनसँ खराब छैन। अपन अचेत मन की सोचतैन मुदा सावित्री आ अड़ोसी-पड़ोसीक संग समाजक लोक तँ सोचिये रहला अछि जे खाली गियानचनेक एहेन परिवार बिलैट रहल अछि से बात नहि अछि। एहेन बिलटैत स्थित परोपट्टाक कोन गप जे गामो-समाजमे अनेको अछिए।

मनक लिलसा जे गियानचनक छेलैन- बेटा रघुनाथकेँ मनमाफित पढ़ाएब; से मनेमे समाएल रहलैन। रघुनाथक सम्बन्धमे छह मास पहिनहि दुनू परानी विचार केने छला जे काल्हि रघुनाथकेँ विद्याक भवनमे विद्याध्ययन लेल प्रवेश कराएब से गियानचनक मनेमे सड़ि गलि-पचि गेलैन। किए मोन पड़ितैन जे रघुनाथेक आयु ले दुनू परानीक बीच कहा-कही भेल छल जे छह मासक पछाइत रघुनाथ विद्यालय जाइ-जोकर हएत। मुदा ओहो छह माससँ आगू घुसैक रघुनाथक पाँचो बर्खक सीमा तँ टपिये गेल अछि। के देखत? देखनिहारे के छै?

रघुनाथक बाल मन छह मास पहिनहि पिताक मुहसँ सुनने छल जे काल्हि स्कूलमे नाओं लिखाएब मुदा ओ पिताक बिमारीक बीच तेना हेरा गेल जे कहिया केतए ने बिसैर गेल।

आइ छह मासक पछाइत सावित्रीक मन जहिना अपन आर्थिक दृष्टिये मरमरा गेलैन तहिना शारीरिक रूपेँ जरजरा सेहो गेबे केलैन। मानसिक रूपसँ पीड़ाएल सावित्री अपन जीवनक आशा तोड़ि रहल छेली मुदा कोखिक बच्चा- रघुनाथकेँ आगूमे देखि अपन जीवनक पीड़ाकेँ दाबि बच्चाक भविष्यक विचारमे मन वौआइये रहल छेलैन।

गियानचन पुबरिया घरमे शान्त पड़ल छला। ओसारक तेसर खुट्टा लागि बैसल सावित्री मने-मन अपन भविष्य देखि रहल छेली। देखि रहल छेली जे पतिक आब कोनो आशा नहि। जखन सासुर आएल छेलौं तखन चारि गोरेक परिवार छल जे पहिल सन्तान भेला पछाइत पाँच गोरेक भेल ओ पुन:, बुढ़ा-बुढ़ी मुइला पछाइत, तीन गोरेक रहल आ आब जखन चारि गोरेक भेल छेलौं तँ पुन: तीन गोरेक भऽ जाएब..! मनमे बुकौर उठि गेलैन। अपन उमेरे केते अछि। ऐगला साल चौबीसम बर्ख पूरत।

एकाएक सावित्रीक मन अपन नारी जीवनक संसारमे पहुँचलैन। पहुँचते ओइठाम देखली जे हमरा सन पुरुख विहीन परिवार समाजमे केतेको अछि। लगले मन पुरुख विहीन परिवारक उदय-प्रलय दिस बढ़लैन। बढ़िते देखलैन जे समाज तँ वेश्यालयोसँ बदतर बना देने अछि, एहेन मारुख समाजमे जीवन बिताएब खिस्सा-पिहानी नइ ने छी। मुदा ओ केना रहै-जोकर बनत से तँ समाजेक लोक ने तेकर उपाय करता। जैठाम समाजकेँ ओहन शक्तिसँ सामना करैक शक्ति नहि अछि तैठाम तँ अपन-अपन जीवन-रछियाक भार तँ अपने ऊपर ने लिअ पड़त। सावित्रीक मन थकथका गेलैन। थकथकाएल मनकेँ अपने विचार धक्का मारि कहलकैन-

"पाँच बर्खक रघुनाथ भऽ गेल, दिनो-दिन आगूए मुहेँ ने बढ़त, ओ तँ संग रहैबला संगी भइये गेल। समाज केतबो पतीत किए ने बनि गेल अछि, तँए कहब जे मिथिलाक विचार सोल्होअना मटियामेट भऽ गेल, एहनो बात नहियेँ अछि। अखनो ओहन लोक समाजमे जीवित छैथ जे अपन मानवीय धर्मक मूल्यक पाइ-पाइ चुकैबते छैथ।"

एकाएक सावित्रीक मन पतिपर गेलैन। शान्त भेल शरीर, मुदा अन्तिम साँस गियानचन गनि रहल छला। मुँहपरक कपड़ा उठा सावित्री अपन पतिक मुँह निहारए लगली। पतिक बदसुरत देखि सावित्रीक मनक सरोवरमे जुआरि उठलैन। बाध-बोनमे, माने रहैक ठौरसँ बाहर, अकस्मात अन्हर-बिहाड़ि एलापर जहिना प्राण बाँचब कठिन भऽ जाइए तहिना भेलैन। मोन पड़लैन अपन छह मासक जीवनगाथा। आइ छह मासमे कहियो भरि नीन ने सुतलौं आ ने भरि पेट खेनाइ खा सकलौं। अपना

जनैत, अपन बौधिक सीमाक बीच जे भऽ सकल से तँ करबे केलौं, तखन एहेन गति किए भऽ रहल अछि? बीघा भरि गाछीक सभ गाछ बेचि सेवामे लगा देलौं। तैपर माता-पिताक देल अपन जे देहक गहना-जेबर छल सेहो बेच-बिकीन लेलौं। जेते जोत जमीन अछि तइमे आधासँ बेसी भरना लगि गेल अछि आ जे बँचल अछि सेहो बँटाइ लागल अछि..!

अर्थक नजैरिये जखन सावित्री अपन परिवारकेँ निहारली तखन बुझि पड़लैन जे भलेँ आर्थिक दृष्टिये जर्जर किए ने भऽ गेल छी मुदा उठिकऽ ठाढ़ होइक शक्ति नहि अछि सेहो बात नहि, से तँ अछिए। एकाएक सावित्रीक मन चौंकलैन।

सावित्रीक निआश मनमे उठलैन अपन जीवन। जइ समाजक परिवार बनि छी आ परिवार जखन टुटि रहल अछि तखन तँ जे जीवित अछि ओ समाजे-बले ने उठिकऽ ठाढ़ हएत। सावित्रीक मनमे सौनक पंचमीक चान जकाँ एकाएक स्वच्छ-निर्मल प्रकाश प्रकाशित भेलैन। मुदा लगले जहिना अन्हर-बिहाड़िमे करियाएल बादल आबि चानकेँ अपराधी जकाँ दबोचि अन्हार पसारि दइए तहिना सावित्रीक मनमे अन्हार पसैर गेलैन। अन्हार पसैरते मन चहैक उठलैन। चहैक ई उठलैन जे जइ समाजमे पति विहीन नारीकेँ अशुभ मानि रस्ता-घाटक भदवा बुझल जाइए, तही समाजमे ने अपनो काल्हि दिन बीतत। संयोगसँ जँ केकरो नजैरपर केतौ जेबाकाल ऊपरमे पड़ि जाएब आ ओकरा जँ कोनो असगुन हएत तेकर सोल्होअना दोखी बनि गारि-फज्झैत सुनबे करब। टुटल मनमे सावित्रीकेँ आशाक पातर इजोतक लकीर छिटकलैन। आशाक लकीर छिटैकते मन आशासँ सिक्त भेलैन।

अनायास सावित्रीक मनमे विचार उठलैन जे जे समाज केकरो नीक नहि कऽ सकैए तँ कि ओइ समाजकेँ अधला करैक अधिकार अछि? उम्रक दोषे बुझू आकि बेथासँ बेथित मने, सावित्रीक मनमे विचार जागि गेलैन। जीवनक अनाड़ी बेचारी सावित्री किए बुझितैथ जे अखन धरिक जे मनुक्खक (अपना ऐठामक) इतिहास रहल ओ एहेन रहल अछि जे स्वतंत्र

जीवन नामक कोनो सुख आमजनकेँ नहि भेट सकल अछि। तँए कहब जे सोल्होअना अपनो नहियेँ भेटल अछि सेहो बात नहि अछि। जीवनक बहुत किछु पेबो केलौं आ पबैले परियासरत सेहो छीहे।

अपन अवस्थापर, माने अपना उम्रपर, जखन सावित्रीक नजैर खिड़लैन तखन देखली जे हमरा सन-सन पुरुख-विहीन परिवारक महिलाक संग समाजमे कोन एहेन अत्याचार बाँकी अछि, नीच-सँ-नीच बेवहार समाजमे होइतो आबि रहल अछि आ भइयो रहले अछि। जहिना अमरलत्ती कोनो आन गाछक ऊपरे-ऊपर लतैड़ ओकर मुड़ी पकैड़ ऊपरे-ऊपर छत्ता जकाँ झाँपने रहैए, मुदा अपन जड़ि-सिरक पते नहि रहै छै तहिना ने समाजो-परिवारक स्थिति अछिए। जीवनकेँ आधार बना जखन परिवारो आ समाजो आगू डेग उठौत तखने ने जीवनक मूल तत्त्वकेँ पकैड़ चलब सीखत। से तँ भऽ नहि रहल अछि। भऽ रहल अछि जे शिक्षा पछाइत ग्रहण करब पहिने दीक्षे लऽ लिअ। शिक्षाक माने भेल सीखब आ दीक्षाक माने भेल देब। जखन सीखले ने रहत तखन देबे की भेल।

अपन परिवारक सकल-सूरत दिस जखन सावित्री नजैर खिड़ौली तखन भकजोगनी जकाँ भुक-दे मनमे इजोत भेलैन। इजोत होइते मन कहलकैन- जेकरा अपन बपौती सम्पैत नहि छै, माने जे सभसँ पछुआएल परिवारक स्थिति अछि, ओहन तँ अपन नहि अछि। पाँच बीघा जमीन अछि, अपना खेती करैक लूरि नहि अछि, मुदा देखे-देखी ने दुनियाँ चलैए, सीख लेब। अपना बले जेते भऽ सकत तेते अपने उपजाएब आ जे नहि कएल हएत तेकर दोसर-तेसर उपाय करब। जखन समाजक बीच अपने केकरो बाट नहि घेड़ब तँ हमरे बाट कियो किए घेड़त। जाने ले ने जीवन आ जीवने ले ने जानो अछि।

एकाएक सावित्रीक मन अपन छह मासक कएल कीर्तपर गेलैन। अपना जनैत कानसँ जइ डाक्टर-वैद, जइ भगत-धाइम आ जइ ओझा-गुनीक नाओं सुनलौं, केतौ जाइसँ कहाँ मुँह मोड़लौं। एक-सँ-एक जीवनदान देनिहारक दरबारमे नहि पहुँचलौं सेहो बात नहियेँ अछि। शुरूमे

अपने नइ बुझै छेलौं मुदा पछाइत, छह मासक बीचक अनुभवसँ, बुझौ लगलौं अछि। मुदा समाजक विचारक बात नहि मानलयैन सेहो तँ कियो नहियेँ कहि सकै छैथ। हुनके कहलसँ ने गामक डॉक्टरसँ लऽ कऽ पटनाक डॉक्टर लग तक पहुँचलौं, हुनके सभक विचारसँ ने डॉक्टर-वैद, भगत-धाइम आ ओझा-गुनी, सभक ऐठाम सेहो पहुँचलौं। जे हुनका केने नहि भेलैन तइमे अपन कोन दोख अछि..?

एकाएक सावित्रीक मनमे विचारक सक्कतपन जगिकऽ जगजिआर भेलैन। सक्कतपन जगजिआर विचार होइते मनमे उठलैन, मनुख कि कोनो हाथी छी जे एकटाके गाछ सभ दिन खाएत, मनुख तँ मनुख छी जे बीत भरि पेटबला होइए, तइले जँ देह धुनब तँ किए ने हँसैत जिनगी चलत।

..तैबीच घरसँ, माने जइ घरमे गियानचन पड़ल छला, कुहरैक आवाज भेल। अन्तिम साँसक कुहरब गियानचनक छेलैन। जहिना तेल सठलापर डिबिया-लालटेन जोरसँ इजोत करैए तहिना गियानचनक आवाज छेलैन। आवाज सुनि सावित्री उठिकऽ गियानचन-लग पहुँचली तँ देखली जे पूरवते पति शान्त छैथ। किए सावित्रीक मनमे उठितैन जे शान्तियोक दू धारा अछि। एक अछि अचेत मनक शान्ति जेकरा मतिशून सेहो कहि सकै छिऐ आ दोसर अछि सचेत मनक शान्ति, जइ पाछू सभ बेहाल छी। माने ई जे सबहक मनमे यएह ने इच्छा रहैए जे शान्तिसँ जीवन चलए। शान्तिसँ परिवार चलए, देश-दुनियाँ चलए.! मुदा सभक मनमे इच्छा रहितो शान्तिसँ चलि कहाँ पबैए? अधिकतर लोको, परिवारो, समाजो अशान्तिसँ किए गुजैर रहल अछि? जहिना एक्के माटि-पानिक खेतक बीच सइयो रंगक फलो वा फूलो लगौला पछाइत देखबे करै छी जे जहिना एक रंगक माटि अछि, तहिना एक रंगक पानियोँक सुविधा अछि, गाछो प्राय: एकरंगाहे अछि, मुदा फलो आ फूलो अपन-अपन गुण-धर्मे भिन्न-भिन्न आकारो आ सुगन्धो धारण केनहि रहैए। तहिना एक आकारक मनुख रहला पछातियो कियो अर्थ (धन) के सर्वोपरि बुझि फड़ै-फुलाइ

छैथ, तँ कियो विचारकेँ सर्वोपरि बुझि नहि फड़ै-फुलाइ छैथ सेहो बात नहियेँ अछि। जखन विचारमे शान्तिक बीज रूपक डिम्हा निकलत तखन ने सप्तमी-दुर्गाक डिम्हा कुम्भकारक हाथे पड़त।

पतिक कुहरब अकाइन सावित्री पतिक नाकक साँसपर आँगुर देलैन। गियानचनक साँसक गति पतराएले जा रहल छेलैन। पातरो साँस देखि सावित्रीक मनमे एते आशा अखनो जगले छैन जे जँ कियो पतिक जान-परानक रछिया कऽ सकैत तँ अपन देहो बेचि हुनका शरणमे जाइले तैयार छी।

एकाएक अपन पैछला छह मास बीतल पतिक सेवापर दौड़ गेलैन। दौड़ते विचारमे उठलैन जे समाजमे रोग-सोगसँ जे बँचौनिहार छैथ वएह ने बँचा सकै छैथ। तइ पाछू तँ अपन सभ किछु बोहाइये लेलौं। मुदा अखनो मन उसैकिये रहल अछि जे जँ कियो पतिक परान बँचा सकैथ तँ जेहो बँचल अछि सेहो फुकि कऽ लगा देब। आगूमे ठाढ़ भेल सावित्री बजली-

“रघुनाथक बाबू, रघुनाथक बाबू.!”

अखनो सावित्री ऐ आशामे छथिये जे पति मरमा तँ मरबे करता मुदा अन्तिमो समय एकबेर बाजि ली। कोनो आवाज नहि सुनि सावित्री पुन: आबि ओसारक खुट्टामे ओङैठकऽ बैस अपन दिन-दुनियाँ दिस टकटकी लगाकऽ ताकए लगली। एकाएक अपन पतिक प्रति कएल सेवापर नजैर गेलैन। एकसँ एक डॉक्टरक शरणमे गेलौं मुदा कियो रक्षक नहि भेला।

अनाड़ी सावित्रीक मनमे किए उठितैन जे आजुक परिवेशमे मेडिकल साइंस बहुत आगू बढ़ि गेल अछि आ दिनानुदिन बढ़ियो तँ रहले अछि जे जीवनक लेल शुभ भेबे कएल। मुदा आइसँ बीस-पचीस बर्ख पूर्व औझुका स्थिति थोड़े छल। अविकसित विज्ञान माने अविकसित मेडिकल साइंस रहने अविकसित काजो तँ छेलैहे। मुदा बिमारी तँ बिमारी छी, ओ तँ बिना आड़ि-धुरक अछिये। माने कोन तरहक बिमारी केकरा देहमे प्रवेश करत तेकर कोनो ठेकान अछि।

एकाएक सावित्रीक मन डॉक्टरसँ आगू बढ़ि ओझा-गुनी, भगत-

धामिपर गेलैन। भगत-धामिपर पहुँचते मोन पड़लैन बरिअरबा[1]क धाइम। जेकरा ऊक नहि तेकर फूक भारी। केना निरलज जकाँ रोगक भार उठा बाजल छल जे जँ फुसन धामिक वाक्[2] फुसि भेल तँ हमरा नामपर तीन धोनहा थूको फेकब आ पच्चीस जूत्तो मारब। केतए गेल, केतए पतनुकान नेने अछि। ओकरे किरतबे ने अपन दूटा आमक गाछ बिलटा लेलौं। आइ जँ ओ बँचल रहैत तँ दू मास ते गुजर करबे करितौं.!

टुटल मनकेँ धीरसँ बान्हि सावित्री संतोष केलीह। संतोष जगिते अनायास सावित्रीक मनमे अपनो आ दुनू सन्तानोक जीवन जगलैन। जगिते विचार उठलैन जे सभ तँ जनिते छी जे शरीर रोग-वियाधिक घर होइते अछि। कखन कोन रोग शरीरमे चलि औत तेकर कोनो ठेकान अछि। मुदा एते तँ अपनो ठेकनाबए पड़त किने जे जिनगीकेँ केना मझधारमे पार हएब।

अनासुरती सावित्रीक मनमे उठलैन जे जहिना कोनो विद्यार्थी परीक्षा[3] देला पछाइत अपन सफलताक आशा मनमे जोगि आगूक लेल अपन जोगार करैले दोसर-तेसर विद्यार्थीसँ राय-विचार करए लगै छैथ, तहिना तेकर विपरीत जे विद्यार्थी अपन विफलता देखै छैथ ओ या तँ दोहरा कऽ पुन: पढ़ैक संकल्प लइ छैथ वा पढ़ब छोड़ि जीवनक दोसर धार दिस सेहो बढ़िते छैथ, तहिना ने अपनो स्थिति बनि गेल अछि। की पतिक संग अपनो मरि जाइ.? जँ अपनो मरि जाएब तँ अपन कोखिक दुनू बच्चाक गति की हएत.? विचलित मन सावित्रीक, तँए कोनो समुचित विचार मनमे उठबे ने करैन। मन कहलकैन, कोनो कि हमहींटा ऐ धरतीपर छी आकि हमरा सन-सन अरबो-खरब लोक छैथ। सभकेँ अपन-अपन जिनगीक अनुभवो तँ छैन्हे। सावित्रीक मनमे सब्र जगलैन। सब्र ई जगलैन जे जखन एहेन विपत्तिक घोर अन्हारमे पड़ि गेल छी तखन किए ने ओइ कहाली जकाँ अपन जीवनक आगूक जोगरमे लागी। आइये नहि, सभ दिनसँ एहेन होइतो आबि रहल अछि आ होइतो अछिए जे जे अपने नइ बुझिमे आबए ओ दोसरोसँ पुछि लिऐ। ई दीगर भेल जे देखेनिहारो नीक

रस्ता देखौत आकि अधला? किए तँ एते तँ बुधिमे दोष अछिए जे नहियोँ बुझल विचार वा काज करैकाल दोसरकेँ पुछब तँ अपन इमानमे घटी लगा विचार देबे करै छैथ। तैसंग ईहो तँ होइते अछि जे बिनु बुझलो विचार तँ दइते छैथ।

सावित्रीक मन बदललैन। बदललैन ई जे एते तँ अपन सुरक्षित धन अछिए जे मन जेहेन मानत तेहेन जीवन लोके जकाँ पेबियो सकिते छी। किछु छी तँ अखन जीवित अवस्थामे छी। जीवन-संगी संग छोड़ि रहल छैथ, तँए कि दुनियाँमे संगबेक कमी अछि जे हमरा नहि भेटत। ऐठाम गलत अर्थ नइ लेब, माने पतिक रूपमे, संगियो सिरजनक (सृजनक) की कोनो एकेटा रास्ता अछि। अनेको रास्ता अछि।

जेना सावित्रीकेँ अपन जीवनक रास्ताक परछाँह भेटल होनि तहिना मन खुशी भऽ गेलैन। ओसारपर सँ उठि सावित्री अकास दिस तकली तँ बुझि पड़लैन जे भोर भऽ रहल अछि। तहीकाल पूबरिया आमक गाछपर पौरुकीक आवाज सुनली। आवाज सुनिते सावित्री विचारचन ऐठाम जेबाक विचार केली।

गियानचन आ विचारचन जहिना दुनू पड़ोसी तहिना एक उमेरिया सेहो। बच्चेसँ दुनूक बालपनक सम्बन्ध रहलैन अछि। मुदा अपन-अपन परिवारक दायित्व सम्हारैमे दुनू एते व्यस्त रहला जे एक-दोसराक बीच पेटक बात करैक समये ने भेटैन। पेटक बात कमैक कारण भेलैन जे जेना शुरूक अवस्थामे माने बच्चाक अवस्थामे दुनू गोरे संगे रहि अपन-अपन पेटक बात-विचार करै छला तेना पछाइत नहि होइ छेलैन। बेसी-सँ-बेसी एतबे होइ छेलैन जे रस्ता-पेरामे केतौ भेँट होइ छला तँ बस एतबे गप होइ छेलैन जे भाय नीके ना छी किने?

तँ जवाब भेटै छेलैन-

“हँ। अहूँ छी किने?”

“हँ।”

ओना, ‘हँ’क पाछू विशालतम विचार सेहो छीपल अछि मुदा तैपर

ने गियानचनेक आ ने विचारचनेक मन पहुँच पेने छेलैन। साधारण रूपेँ जे अखन चलैनमे अछि जे कि भाय बड़बढ़ियाँ तँ बड़बढ़ियाँ। गियानचन आ विचारचनक बीच केहेन सम्बन्ध छैन से तँ सावित्री नहि बुझि पेब रहली अछि मुदा एते तँ आँखिक देखल आ कानोक सुनल छैन्हे जे दुनू एक-दोसरकेँ 'भाय' कहैत रहलखिन। जखन भैयारीक सम्बन्ध बनौने रहला तखन अपनो सम्बन्ध भावो-भौजाइक हेबे करत। तहूमे अखन हुनके निविते, माने पतियेक निविते ने जेबो करब।

सावित्री विचारचन ऐठाम विदा भेली। आँगनसँ निकैलते सावित्रीक मन विचारचनपर पहुँचलैन। विचारचनपर सावित्रीक मन पहुँचते विहुसलैन। विहुसलैन ई जे जखन दुनू गोरेक बीच भाए-भैयारीक संग बालपनक दोस्ती सेहो रहलैन तखन तँ हमरो दोसे ने भेला। महिला-महिलाक बीच सखी-बहिनपा होइए, मुदा ऐठाम तँ से नहि अछि। ऐठाम तँ पुरुख-पुरुखक दोस्तीमे एकटा पुरुखकेँ टुटने पुरुख-महिलाक बीचक सम्बन्ध छी, तँए सखी-बहिनपा केना हएत।

अँगनाक रास्तासँ निकैल मुख्य सड़कपर अबैत-अबैत सावित्रीक मनक विचारमे मोड़ एलैन। मोड़ ई एलैन जे जखन जीवन भरिक संगी बिछुड़ सकै छैथ, भगवान हेरि सकै छैथ, तखन तँ दुनियाँमे एहनो संगी तँ मीलिये सकै छैथ किने जे उम्रक हिसाबसँ अधिक दूरक होइथ, जे अपन जीवनक खण्ड-भागक संगी हेता।

एकाएक सावित्रीक मनमे जेना अपन जीवनक संकल्पित दिशा भेटलैन। संकल्पित दिशा ई भेटलैन जे ठेँस लगला पछाइत जहिना लोक ओइ जगहपर आँखि निराइर चलैक कोशिश करैए जइसँ दोहराकऽ फेर ओहन ठेँस नहि लागए, तहिना सावित्री अपन जिनगीक दिशा भँजियबैत आगू बढ़ली।

भोरे-भोर दरबज्जापर सावित्रीकेँ देखि विचारचनक मन दहैल गेलैन। किए तँ पड़ोसी-संगी होइक नाते विचारचन गियानचनक क्षण-क्षण, पल-पलक जानकारीक भाँज लगैबते छला। सावित्रीकेँ आगूमे ठाढ़ देखि

विचारचनक मन तेना छिड़िया गेलैन जे मुँहक बकारे बन्न भऽ गेलैन। एक दिस अपन बालपनक संगीक परिवारक दशा, दोसर दिस सावित्रीक जुआनीक चढ़ल उम्र आ तेसर दिस दुनू बच्चाक जीवन सेहो आगूमे आबि ठाढ़ भऽ गेलैन। जइसँ विचारचनक मन कलपए लगलैन।

सावित्री ऐ दुआरे अपन मुँह बन्न केने रहली जे जिनका ऐठाम एलौं अछि ओ रखता कि भगौता से तँ वएह ने बजता।

उन्मत्त हाथी जकाँ विचारचनक मन तरे-तर बमछैत रहैन मुदा बकारक कोनो शब्दे ने भेटैन जे किछु बजता। गियानचन सहजे ओइ अवस्थामे छैथ जे ने मुइले छैथ आ ने जीविते छैथ। तैबीच अपना मुहसँ की निकालब। छह मासक वियाधि गियानचनकेँ नस-नस तोड़ि देलकैन, आब ओ थोड़े ठाढ़ भऽ सकता। तखन तँ परिवार ले अपने ठाढ़ हुअ पड़तैन, अपने माने सावित्रीएकेँ। मुदा समाज तँ तेहेन मचकी जकाँ दुनू डारिपर झूलैए जे आगू बढ़ैक दुनू बाटे बन्न कऽ देने अछि। माने ई जे एक दिस विधवा महिलाकेँ अशुभ मानल जाइए तँ दोसर दिस महिलाक संग की अत्याचार भऽ रहल अछि ओ केकरोसँ छीपल थोड़े अछि। मुदा जखन सावित्री अपन बेथाक संग दरबज्जापर एली तखन अपन जे शक्ति अछि ओकरे ने तरपन कऽ सकै छी। मनमे दृढ़ता अनैत विचारचन बजला-

“अहाँक जहिना पति तहिना बच्चाक संगी ने हमरो गियानचन छैथ, मुदा दैवियो शक्ति तँ किछु छिऐ जैठाम मनुक्खक शक्ति कमजोर पड़ि जाइए, मुदा मनुक्खक जीवन तँ से नहि छी ओकरा तँ मनुक्ख जरूर टपिये सकैए।”

विचारचनक गम्भीर विचार सुनि सावित्रीक मनमे जेना सक्कतपन जगलैन। सक्कतपन जगिते अपन वर्तमानकेँ देखैत सावित्री बजली-

“आब की करब?”

सावित्रीक मुहसँ ‘आब की करब?’ सुनि विचारचनक मन थकथकेलैन। थकथकाइक कारण भेलैन जे सभ बुझै छैथ जे ई कर्ता पुरुखक दुनियाँ छी, जे जेहेन करत से तेहेन पौत। मुदा सावित्रीक वर्तमान

समय तँ अखन से नहि छैन, अखन तँ पतिक लहास ढोइत पहिने अपन जान हल्लुक करैथ। बाल-बच्चा तँ हाथ-पैरबला छी। समैयक संग फौदेबे करत। विचारचन बजला-

"निधोख भऽ बाजू। जाबे पति चलै-बुलै छला ताबे अहाँ समाजक लाज-संकोच मानै छेलौं मुदा आब तँ परिवारक गार्जनक हैसियतसँ विचार सुधारए पड़त किने। अपन जे विचार हुअए तइमे जखन जे खगता हएत सएह ने पूर्ति कऽ सकै छी।"

विचारचनक बात सुनि सावित्रीक मनमे बिजलोका जकाँ लौकलैन। जइमे एक्केबेर सौंसे दुनियाँक परिवार जकाँ अपन परिवार देखबामे एलैन। मुदा जहिना बिजलौकाक चमक लगले छीप जाइए, तहिना भेलैन। ओना, विचारचन मनमे ई राखि बाजल छला जे एक तँ मनुक्खेक कोनो ठेकान नहि अछि तैपर महिलाक तँ आरो बेसी अछि। जइसँ अपन पराश्रितक संस्कारक संग विचारो तेते लचर-पचर भऽ गेल छैन जे किछु कहब कठिन अछिए। तँए किए ने अपन भविष्यक दिशामे जीवनक रूप-रेखक छाँह पेब ली।

तैबीच सावित्री बजली-

"दुनू परिवारक बीच जे अखन तकक सम्बन्ध रहल अछि, ओ ओहिना जीवित ठाढ़ रहए, सएह ने..।"

जहिना तम्माक मुड़ी छोपि भनसिया सिदहाक चाउर लगबै छैथ तहिना सावित्री सेहो विचारक मुड़ी छोपि बाजल छेली मुदा मनमे छेलैन जे मित्रे ने नर्कक मैत्रेयी धार पार होइमे सहायक होइ छैथ। ओना, विचारचन सावित्रीक मनक भव भवनकेँ आँकि लेला। आँकि लेला उत्तर विचारचनक दृढ़ मन अपने कहलकैन जे नारीकेँ अहिना विचार मुड़ियाकेँ बजैक आदत होइए मुदा पुरुख तँ पुरुख छिया, ओ किए ने सुढ़िया कऽ बाजि सकै छैथ। पुरुक्खक माने भेल जेकरामे पुरुखपन हुअए। लिंग-भेदसँ ओइमे फर्क नहि पड़ैए, विचारभेदसँ अन्तर अबैए। पौरुषपन जहिना कोनो-कोनो पुरुखमे जगैए तहिना ने कोनो-कोनो नारियोमे जगिते अछि। मुदा पुस्त-

पुस्ताइनसँ जे नारीक विचारमे पराश्रितक संस्कार रहल अछि तइसँ विचारमे कमी अछिए। ओना, दोसरो बात अछिए। ओ ई अछि जे अखन तकक समाजमे जे परिवार-परिवारक बीच दूरी बनल अछि ओ पुरुखकेँ जहिना नारीक प्रति हवस बढ़ा देने अछि, तइ बिन्दुपर समाजक लोक अपन दाँत देखबैत पाछू हटिते अछि। ओना, एकरा सोल्होअना सही नहियोँ कहल जा सकैए।

अदौसँ समाजमे जहिना एहेन लोक सभ दिनसँ अबैत रहला अछि जे सदिकाल अपन दुनू हाथ उठा नारकीय धारमे भँसैत राही-बटोहीकेँ पकैड़ ऊपर करैक चेष्टा करैत रहला अछि तहिना अखनो कइये रहला अछि। मुदा धारक मोनियेँ तेहेन गिरगिटिया चालि पकैड़ मनकेँ फोड़ैत रहल, जइसँ परिवारो आ समाजोमे तेहेन मोइन फुटिये जाइए जेकरा तुरत-तुरत गहब कठिन अछिए। अपन दुनू हाथ उठबैत विचारचन बजला-

"गियानचन भलेँ दुनियासँ जा रहला अछि मुदा अहूँ तँ हुनके अंग छिऐन, तँए हम जहिना बच्चासँ गियानचनकेँ संगी बुझैत आबि रहल छी तहिना ने अहूँकेँ बुझै छी।"

विचारचनक बात सुनि सावित्रीक मनमे सब्रक गाछक डिम्ह[4] जगलैन। डिम्ह जगिते अखन तकक जे अपन परिवार चलैक आशा रहलैन, आर्थिक आधार, ओ एकाएक मनमे चनैक उठलैन। अपन चनकल मनक विवशता देखबैत सावित्री बजली-

"अपने तँ खेती-पथारी करैक लूरि नहि अछि, तखन..?"

निर्णायक मोड़पर अबैत विचारचन बजला-

"जेते अगुताकऽ जिनगी पकैड़ चलए चाहै छी ओ ओते असान नहि अछि। अखन जे मोटा माथपर अछि पहिने तेकरा पार लगाउ।"

अन्हराएल सावित्री जेना किछु देखिये नहि पेब रहल छेली तहिना बजली-

"अपने तँ परिवार चलबैक तरी-घटी किछु बुझि नहि रहल छी,

तैबीच चलब अछि, से केना..?”

आशवान विचारचन सावित्रीकेँ कर्मगत विचारक सोच जगबैक विचार दैत बजला-

“अहाँ आगू बढ़ू। हम पीठेपर आबि रहल छी। आँखिक देखल कोनो घटनाक निराकरणक पछातिक विचार बेसी उपयोगी होइए। तँए अहाँ मिसियो भरि संदेह नइ करू।”

अपना ऐठाम सावित्रीकेँ अबैसँ पहिनहि गियानचनक प्राण छुटि गेल छेलैन।

❑

शब्द संख्या: 3197, तिथि: 10 अप्रैल 2021

पाँचम पड़ाव

चैत मासक अमावश रात्रि जकाँ सावित्रीक मनमे घनघोर अन्हार पसैर गेलैन। जिनगीक धरतीपर सावित्रीकेँ आगूक डेग उठबैक साहसे ने भऽ रहल छैन। मुदा कालो तँ काल छीहे। जखन आगूमे आबि ठाढ़ भऽ जाइए तखन किछु-ने-किछु करए पड़ैए। चाहे हारि मानि, चाहे हारि हेरा मुदा किछु-ने-किछु करए पड़ैए। तहीकाल विचारचन पहुँचला। विचारचनकेँ देखिते सावित्रीक मनमे जेना चैती दुर्गाक कलश स्थापन भऽ गेल होनि तहिना भेलैन। ओना, विचारचनक मन कहि देलकैन जे भरिसक गियानचनक प्राण छुटि गेलैन। सावित्री जोरसँ कानि नहि रहल छेली जे केकरा सुनाएब। समाजो तँ एकभग्गू अछिए। मुदा पतिक बिछोहोक दर्द-पीड़ा तँ मनमे एते होइते अछि जे आँखिक नोरक धारा छोड़ि ओकरा दोसर शान्त-शीतल नहियेँ कऽ पबैए। तँए दुनू आँखिसँ सावित्रीकेँ नोरोक धार बहिते रहैन आ मनमे बुकौर सेहो उठिते रहैन। विचारवान विचारचन जेना एकाएक सावित्रीक पीड़ाक धधकल आगिकेँ तोपैत बजला-

“देखू कनला-खिजलासँ किछु ने होइ छइ। जिनगीक सत्य छी जे जे धरतीपर जन्म लेलक ओ मरबे करत। मुदा तइमे एकटा गड़बड़ तँ अछिए जे निर्धारित नहि अछि। जे भवितव्य छल से भेल।”

बजैक क्रममे विचारचनक विचार उग्रमे एते चढ़ए लगलैन जे भेलैन जिनगी भरिक कर्मक विचार सावित्रीकेँ सुना दिऐन। मुदा अपने मन ईहो कहैन जे आमक गाछ रोपैकाल आमक फलक सुख अनुभव नहि करी, अनुभव एतबे करी जे जखन धरतीपर आमक गाछ रौपलौं तखन जहिया मोजरै-फड़ैक समय औत तहिया मोजरबे-फड़बे करत। मनकेँ पोखरिक पानिक लहैर जकाँ आस्ते-आस्ते विचारचनक विचार थीर केललैन। थीर

होइते मनमे जगलैन जे पार्थिव शरीर जेतेक जल्दी भऽ सकए ओते जल्दी घरसँ निकालब समाजक रीति रहल अछि। ओना, आजुक परिवेशमे एहेन रीति समाजक प्रतिकूल सेहो भइये गेल अछि। जखन किसानी जीवन समाजक छल तखन परिवारकेँ समटल रहने अनुकूल छल। मुदा आजुक परिवेश एहेन बनियेँ गेल अछि जे माता-पिताक मृत्युक पछाइत मुखाग्नि बेटा देता आ बेटा दूर देशमे नोकरी करै छैथ, तैठाम तँ अनेको बाधा बीचमे उपस्थित भइये जाइए। जेना, बेटा जिनकर नोकरी करै छैथ तिनकासँ छुट्टी लेब आवश्यक छैन्हे। तैसंग बेसी दूरी रहने रस्तोमे बेसी समय लगबे करैए तँए माता-पिताक पार्थिव शरीरकेँ बर्फमे राखब जरूरी भइये गेल अछि।

दुनू आँखिक नोरक टघारकेँ साड़ीक आँचरसँ पोछि सावित्री आँखि उठा विचारचनपर दैत बजली-

“आब की करब?”

सावित्रीक बात सुनिते विचारचन बजला-

“अखन आगू-पाछू किछु ने देखैक अछि, अहाँ पहिने टोल-पड़ोसमे घुमि लहास जरबैले कहियनु, पछातिक काज पछाइत विचारब। दोकानक काज हम केने अबै छी। माने नव वस्त्र नेने अबै छी।”

विचारचनक विचार सुनि सावित्रीक मन धकमकेलैन। धकमकेलैन ई जे कोन मुहसँ समाजमे बाजब।

ऐठाम कोन मुँहक माने भेल जे गियानचनक प्राण शरीरसँ निकलला पछातिये ने सावित्रीक वैधव्य जीवनक जन्म भेलैन। एकटा वैधव्य अपन पतिक मृत्यात्माकेँ अग्निदाहक जानकारी समाजमे केना देती?

सावित्रीकेँ धकमकाइत देखि विचारचन पुन: बजला-

“अखन जे सभ विहीत करए पड़त ओ क्रमश: करैत चलू। जखने क्रियाकेँ क्रमश: करैत चलब तखने पार-घाट लगबे करत।”

अपन विवशता देखबैत सावित्री बजली-

“अखन दू गोरे छी, तँए पहिने दुनू गोरे पार्थिव शरीरकेँ घरसँ

निकालि तुलसी चौरा लग पाड़ि दियौन।"

अपन हूसल विचारपर विचारचनक मन पहुँचलैन। पहुँचते मन कबुल लेलकैन जे सावित्री ठीके कहली। बजला-

"भने मोन पाड़ि देलौं। अँगनाक काज अहाँ करब आ बाहरक काज हम समेटने अबै छी।"

दुनू गोरे गियानचनकेँ घरक ओछाइनपर सँ उठा अँगनाक तुलसी चौरा लग उत्तर सिरहाने सुता दूटा अगरबत्ती नेसि माथक सोझे धरतीमे गाड़ि देलकैन।

पाँच बर्खक रघुनाथ आ दू बर्खक राधा सेहो अँगनेमे छल। बाल-बोध रघुनाथ अँगनामे बैसल सभ किछु देखि रहल छल। अबोध राधा सेहो टक-टक ताकि रहल छल।

गियानचनकेँ तुलसी चौरा लग पाड़ि अँगनासँ निकैलते मनमे उठलैन, नीक हएत जे गाछी लऽ जाइसँ पहिनेक जे प्रक्रिया अछि, तइले दू गोरेकेँ, बाँस काटैसँ लऽ कऽ साबेक जौड़ बँटैले, तैयार करब जरूरी अछि। कपड़ाक काज तँ पछाइत हएत, जखन चचरी बनि तैयार भऽ जाएत। रस्ते-रस्ते विचारचन आगूओ बढ़ैथ आ घरे-घर कहबो करैथ जे गियानचन मरि गेला तँए अपन उपस्थिति ओइठाम दियौ।

अखनो समाजमे एहेन चलैन तँ अछिए जे मुरदा जरबैक प्रक्रियामे कहनौं-बिनु-कहनौं सभ संग दइते छैथ।

किछु आगू बढ़ला पछाइत विचारचनक मनमे उठलैन जे मुरदा जरबैले जरनाक खगता सेहो हेबे करत। एकाएक विचारचनक मन बिजलीपर गेलैन। जैठाम बिजलीक सुविधा अछि तैठाम लोक बिजलीसँ मुरदा जरबै छैथ, मुदा से तँ गाममे नहि अछि। भलेँ आब गामोमे बिजली आबि गेल अछि मुदा ओ तँ अखन साधारण डिबिया-इजोतक पूर्ति केलक अछि। कनी-मनी पंखोक काज करैए। मुदा बिजली तँ ओहन शक्ति छी जइसँ जीवनमे सेहो शक्ति अबैए, तइ रूपेँ तँ सएह ने अछि। शहर-बाजारसँ उतैर विचारचन विचारए लगला जे गियानचनकेँ जेते आमक

गाछ छेलैन से तँ बेमारीक दौड़मे बिका गेलैन, जँ किछु अकठ गाछ छैन्हो तँ तइसँ मुरदा जरबैक काज नहियेँ हएत। अपन समाजक बीच मुरदा जरबैक उपायपर विचारचनक मन नाचए लगलैन। मुरदा जरबैक अनेको रंगक चलैन समाजमे चलिये रहल अछि। जिनका उपाय रहै छैन ओ चाननक लकड़ीसँ जरबै छैथ आ जिनका चाननक लकड़ीक उपाय नहि रहै छैन ओ आमेक लकड़ीसँ जरबै छैथ। जिनका सेहो ने छैन ओ कियो पटुआक संठीसँ जरबै छैथ तँ कियो सरपत-पटेरसँ। जिनका सेहो ने छैन ओ ओहिना लहासकेँ माटिक तरमे गाड़ि दइ छैथ। नहि जँ गाममे बहता धार रहल तँ धारेमे भँसा दइ छैथ। अनेको रंगक चलैन कहियौ कि बेवहार, एक्को काज करैक अछिए। मुदा अखन जे समस्या सावित्रीक संग उपस्थित भऽ गेल छैन, मूल तँ यएह ने भेल। आजुक चलैनमे एकटा नव बेवहार, गोरहा-गोइठासँ मुरदा जराएब सेहो समाजमे आबिये गेल अछि। गोरहापर नजैर पहुँचते विचारचनक मनमे खुशी उपकलैन। खुशी उपकैक कारण भेलैन जे अखनो गाम-समाजमे गोरहा-गोइठा सभसँ सस्त अछिए। जखने सस्त भेल तखने असान भेल। लहास जरबैक जरनापर सँ विचारचनक मन मुखाग्निपर गेलैन। मुखाग्निपर पहुँचते समाजक बीचक अनेको उदाहरण विचारचनक मनमे नाचि उठलैन। तीन साल-चारि सालक बच्चा सेहो मुख्याग्नि दइते अछि। मृत्युसँ लऽ कऽ श्राद्ध कर्मक बीच तेरह दिन लगैए। मुदा तोहू क्रियामे भिन्न-भिन्न रंग कहियौ आकि भिन्न-भिन्न रंगक चलैन, सेहो समाजमे अछिए। किछु जातिमे तेरह दिनक कर्म होइए तँ किछुमे पनरह दिनक आ किछुमे पूर्णमासी, माने तीस दिनक नहि होइए, सेहो होइते अछि। तहूसँ विकट ई होइए जे जँ मास दिनक बीचमे दोसर मृत्यु, परिवारसँ दियादवादक बीच, भेने ओ कर्म पुन: मास दिन आगू सेहो बढ़िये जाइए। अपन पल्ला झाड़ैत विचारचनक मन तेरह दिनक क्रियापर आबि अँटैक गेलैन।

अँटैक तँ गेलैन मुदा लगले मन आगू बढ़ि कहलकैन जे तेरह दिनक क्रियो-कर्म तँ अनेको रंगक अछिए। कियो 'वृषौ कर्म' करै छैथ तँ कियो 'पंचदान कर्म', कियो कुरसी[5] कर्म' करै छैथ तँ कियो सेहो नहि।

विचारचनक मनमे उठलैन- जँ अपन परिवारक काज रहैत तँ अपने विचारे बदलियो सकै छेलौं मुदा दोसर परिवारमे जँ किछु बाजब तँ अनेरे कर्ममे बाधा उपस्थिति हएत, तइसँ नीक जे समाजक पाँच गोरेसँ विचारि आगूक काज करी। कहलो गेल अछि जे पाँच मिलि करी काज हारने-जीतने कोनो ने लाज।

तेरह दिनक कर्मक बीच विचारचन मने-मन सोझराबए लगला जे तेरहो दिनक कर्मक प्रक्रिया की सभ अछि, जखन बेचारी सावित्री दोस्तीनीक रूपमे अपन भार फेक ऊपरमे दऽ देलैन अछि तखन तँ अपनो ने उचित बनैए जे कोनो कर्ममे विघ्न-बाधा नहि होइन। जखने कोनो विघ्न-बाधा हएत तखने हुनका, माने सावित्रीकेँ तँ अबूझ-अनाड़ी महिला कहि समाजक बजनिहार अपन बाजबक पल्ला झाड़ि हमरे ने मुहोँ नोंचत आ मुँहपर थूको फेकत।

अपन मुँहपर थूक पड़ैक बात विचारचनक मनमे अबिते चिन्ताक चिन्त्य बढ़लैन। जहिना कोनो वृक्ष अपन जन्मसँ लऽ कऽ मृत्यु धरिक इतिहास अपना पेटमे रखने रहैए तहिना समाजो ने अपन जन्मसँ मृत्यु धरिक इतिहास अपना गर्भमे रखनहि अछि।

एकाएक विचारचनक विचार अपन बीतल बीस-पच्चीस बर्खक जीवनपर नचलैन। बीस-पच्चीस बर्खक समय, पच्चीसक माने भेल जन्मदिन आ बीस भेल बुधिक आगमक समय। बच्चाक जन्म केना होइए, भलेँ काज समाजक बीच किछु गोरेक बीचक कर्म होइए, मुदा जनै तँ सभ छैथ, जे जखने प्रसव-पीड़ा-क आगमन होइए तखनेसँ ने घर-परिवारक लोक पल्हैनिक भाँज लगबै छैथ, भलेँ शहर-बाजारक लोक अस्पतालेक भाँज किए ने लगबैथ। खाएर जे अछि, अखन जन्मक प्रक्रियाक समय नहि अछि अखन मृत्युक प्रक्रियाक विचार आगूमे ठाढ़ अछि, तँए अखन मृत्युक प्रक्रियाक विचार करब उचित अछि। तइ बीच कपड़ाक दोकानपर विचारचन पहुँच गेला। दोकानपर पहुँचते मन बिहुसलैन। बिहुसलैन ई जे सभसँ घटिया लोक दोकान-दौरी केनिहार होइ छैथ, ऐठाम ई नहि बुझब

जे वस्तुक उत्पादनकर्त्ता सर्जक भेला आ वस्तुकेँ आगू-पाछू करैबला दोकान-दौरी केनिहार भेला तँए घटिया भेला। मुदा लगले विचारचनक अपने मन गवाही देलकैन जे भलेँ कियो दोकान-दौरीबलाकेँ घटिया किए ने मानौन मुदा कफनक कपड़ाक कीमतमे दोकानदार अपन इमानकेँ इमानदारीसँ नहि बँचा रखने छैथ, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। एते तँ इमानदारी अखनो धरि माने जहियासँ कफन चोरी शुरू भेल तहियेसँ, बँचाकऽ रखनहि छैथ। जहिना विचारचन मृत्युक प्रक्रियाक कपड़ाक मांग दोकानदार लग रखलैन तहिना दोकानदारो अपन विचारसँ माने अपन अनुभवक विचारसँ कपड़ा दैत दाम कहि देलकैन।

कफन नेने विचारचन जखन दोकानसँ आगू बढ़ला कि गियानचनक मुखाग्निक विचार पुन: धक-दे मनमे उठलैन। परिवारमे दुइये गोरे ने एहेन छैन जे मुखाग्नि दऽ सकतैन। पत्नीक रूपमे सावित्री अपने आ पुत्रक रूपमे रघुनाथ। रघुनाथ अखन बाल-बोध अछि खेलाइत-खेलाइत तेरह दिन निमाहि लेत मुदा सावित्री तँ से नहि छथिन। जँ मुखाग्नि करती तँ परिवारक कर्ते-पुरुष ने ओझरा जेती। एक तँ ओहिना अनदिनासँ बहुत बेसी काज परिवारमे जन्म-मृत्युक आगमनसँ भइये जाइए तैपर गियानचनक परिवारमे दोसर कियो करताइत नहि छैन। तँए नीक हएत रघुनाथेसँ मुखाग्नि कराएब।

गियानचनक घरपर पहुँचते विचारचन देखलैन जे जहिना कुशियारक मिलमे कुशियारसँ चीनी धरिक प्रक्रियाक क्रिया संगे-संग चलैत अछि तहिना मुरदा जरबैक सभ प्रक्रिया संगहि चलि रहल अछि। कियो साबेक जौर बाँटि रहला अछि तँ कियो बाँस काटिकऽ पाँगि पुँगि रहला अछि तँ कियो बल्ला-फट्ठी बना रहला अछि, कियो कुम्हार ऐठामसँ बर्तन आनि रहला अछि तँ कियो ठेलापर गोरहैन अनैले गेल छैथ। भेल तँ छोट साइजिक गोरहा रहल तँ दू साए नहि जँ नमहर साइजिक रहल तँ साए-सबा-साएसँ काज चलिये जाइए। जे एक्केबेर रिक्सामे समटल आबि जाएत। बिसवासू जारन तँए लकड़ी जकाँ गोरहामे खोरो-खार नहियेँ करए

पड़ैए। खाधि खुनि बीचमे लहासकेँ साजि आगि दऽ दियौ आ आपस चलि आउ। दरबज्जापर पहुँचते विचारचन चेतनाथकेँ कहलैन-

“चेतू भाय, कपड़ाकेँ देखियौ।”

जहिना मनतरियाकेँ मनतर ठोरेपर रहै छैन तहिना चेतनाथकेँ कफनक कपड़ाक ज्ञान छैन। मुरदा झाँपैसँ लऽ कऽ कर्ताक देहक संग गरदैनिक उतरी धरिक चर्च ठोर पटपटा केलैन। कर्ताक कपड़ा धरि बुझैक अभ्यास छैन्हे, लगले नापि-नापि विहीतक वस्त्र बनबए लगला। मुरदा जरबैक सभ ओरियान देखि विचारचन आँगन पहुँच सावित्रीकेँ सभ जानकारी दैत पुछलैन-

“बाहरक सभ काज मुड़िया गेल, अँगनाक की स्थिति अछि?”

विचारचनक बात सुनि सावित्री आँखि उठा देखि पुन: आँखि गाड़ि बजली-

“बहरेक तैयारीसँ ने अँगनोक तैयारी हएत।”

ओना, सावित्रीकेँ पतिक मृत्युक ओहन दुख मनमे नहियेँ छेलैन जेहेन आन-आनकेँ होइ छैन, मुदा कमो-बेस दुख नहि छेलैन सेहो बात नहियेँ अछि, से तँ छेलैन्हे। आन-आनक माने भेल जे किनको पति अचानक दुर्घटनामे मरि जाइ छैन से सावित्रीकेँ नहि रहलैन। मृत्युक मैदानमे माने पतिक मृत्युक मैदानमे, सावित्री लगातार छह मास धरि डटल रहली जइसँ जेना-जेना पतिक मृत्यु लगीच अबैत गेलैन तेना-तेना सावित्रीकेँ अपन भारक प्रति हूबा जागए लगलैन। छह माससँ पतिक भारक खालीपन जेना-जेना होइत गेलैन तेना-तेना सावित्री ओकरा भरए लगल छेली तँए जिनगी जीबैक आशा मनमे जगि चुकल छेलैन। तैबीच मे एहनो संकट सँ भेँट भेबे कलैन जे पति आशासँ सोल्होअना मुँह मोड़ि देने छेलैन। माने ई जे पतिक मृत्युक निसचित विसवास सावित्रीकेँ जगि चुकल छेलैन। ओना, क्रमश: कर्मगत भेने सावित्रीक मनमे ईहो आबिये जाइन जे परोछोमे माने पतिकेँ नहियोँ रहने, अपन परिवारकेँ जीवित राखि गतिशील राखिये सकै छी। ओना, कहियो-काल बीचमे पतिक असीम वेदनाकेँ

सम्हारैमे अपनाकेँ विफल देखि सावित्री मुँह खोलि बजबो करै छेली मृत्युओ केतए नुकाएल अछि जे आबिकऽ लऽ नहि जाइ छैन।

आइ सावित्री जीवनक दू सीमापर ठाढ़ छेली तँए जेते मनमे हर्ष छेलैन ततबे विषमय सेहो छेलैन तँए दू पाशाक बीच मन समगम छेलैन्हे।

इम्हर सभ काज सुढ़ियाइत देखि जहिना सभकेँ इच्छा होइ छैन जे ऐ सँ ऐगला काज पकैड़ आगू बढ़ी तहिना विचारचनक मनमे सेहो उठए लगलैन। उठए ई लगलैन जे किए ने सावित्रीकेँ मुहेँपर कहि दिऐन जे मुखाग्नि बेटेसँ दिआएब नीक हएत, तइमे अपन विचार यएह भेल जे रघुनाथ बच्चा अछि, ओकरा दुआरे परिवारक कोनो काज नहि खगत। मुदा जँ अहाँ अपनेसँ मुखाग्नि देब तखन कर्ताक सभ भार अपनहिपर आबि जाएत, जइसँ परिवारक सभ काज बाधित हएत आ वीधो-विधानमे सोल्होअना समय लगि जाएत। मुदा लगले विचारचनक अपने मन कहलकैन जे अखन दरबज्जापर समाजो छथिये तँए नीक हएत जे सभक बीच विचारकेँ राखि सर्वसम्मति विचार कऽ ली। जखन पाँच मिलि विचारब तखने पाँच रंगक जीवनक अनुभवक विचार सेहो औत। समयानुकूल की उचित हएत आ की पुरान भेने अनुचित हएत तेकर तँ निराकरण समाजे ने करता।

समाजपर नजैर पड़िते विचारचनक मनमे उठलैन जे अखनेसँ मृत्यु-क्रियाक दुनू रूप–अकर्मको आ सकर्मको–उठि-उठि ठाढ़ सेहो हेबे करत। तँए, किए ने अखने सावित्रीकेँ कहि दिऐन जे आँगनसँ जखने लहास निकलत तखने घरक छुत वस्तुकेँ निकालि फेक आँगन-घर बहारि-नीपि पवित्र सेहो करए पड़त। तेरहे दिनक बीच तेरहो कर्म होइए जे घरवारीकेँ तेरहो कर्म कराइये दइए। एक दिस परिवारक एकटा कमाउ कमल आ दोसर दिस जेहो खेत-पथार बँचल अछि तेकरो बेचि-विकीन चढ़ौआ चढ़ा दियौ.! विचारचनक विचारकेँ अपने मन रोकलकैन। रोकलकैन ई जे एक तँ ई विचार व्यक्तिगत छी नहि, सामूहिक विचार छी तइमे बेसी-सँ-बेसी अपन चिन्त्य विचार राखि सकै छी, सएह ने। समूह (समाज) जँ अनुचित

काजकेँ प्रतिष्ठा बुझि अपन विचारकेँ दाउपर लगौता तँ लगबौथ, अपने ओकरा रोकि तँ नहि सकै छी मुदा उचित काजकेँ प्रतिष्ठित बनबैत अपन विचारकेँ राखि तँ सकै छी...। एकाएक विचारचनक विचार तत्काल जे काज आगूमे छेलैन तइपर एलैन। आँगनसँ निकलैत सावित्रीकेँ कहलखिन-

"जहिना अहाँक अँगनाक काजक तैयारी अछि तहिना दरबज्जा परक तैयारी देखै छी।"

दरबज्जापर अबैत विचारचनकेँ देखिते डोरीकेँ माने साबेक जौड़केँ समटैत फुचना बाजल-

"विचारचन चाचा, कीर्तनो-भजनक जोगार केने छिऐ, ओ सभ अखन तक कहाँ आएल अछि।"

फुचनाकेँ फटकारैत जीबछ बजला-

"अँए रौ फुचना, तूँ एतबो ने बुझै छीही जे केहेन मृत्यु भेल अछि?"

फुचना अवाक् भऽ गेल। दोहराकऽ किछु ने बाजल।

तीन दिनक पछाइत छाउर-झँप्पी भऽ असमसानक काज सम्पन्न भेल। ओना, शास्त्रीय प्रकरण चलबे करत मुदा शरीरक सभ क्रिया समाप्त भऽ गेल। माने ई जे अछियाक आगिमे जँ शरीरक किछु अंश बँचलो-खुजल रहल हएत तँ ओकरा माटिक तरमे झाँपि देल जाइए। ऐठाम ईहो अछिए जे बिनु जरौल मुरदाकेँ माने जेकरा आगिमे जरौल नहि जाइए, ओकरा माइटिक तरमे ओहुना गाड़ल जाइते अछि। माने, मुरदाकेँ बिनु जरौने गाड़ैक एक चलैन सेहो अछिए, जे किछु सम्प्रदायमे अनिवार्य सेहो बनाइये देल गेल अछि। विचारचनक मनमे उठलैन जे जखन गियानचनक पत्नी सभ भार सुमझा देलैन तखन जँ भरित काजसँ पूर्व अपने सतर्क नहि रहब तँ एहनो सम्भव भइये सकैए जे समयसँ काज पछुएने समैयक अनुकूल पाछू सेहो पड़िये सकैए। जखने समयसँ पाछू पड़ल तखने ओ महत्वहीन भइये जाएत। यएह सोचि दिनक करीब दू बजे माने बेरुका उखड़ाहामे विचारचन गियानचन ऐठाम जेबाक विचार केलैन जे आजुक

जे काज अछि तेकर जानकारी घरबैयार्कें देब समयोचित हएत।

अपना ऐठामसँ विदा होइते विचारचन जखन रस्तापर एला कि मनमे उठलैन जे किए ने कमसँ कम एकटा अनुभवी लोकर्कें सेहो बीचमे रखि गप-सप करी। अपना ऐठाम कहलो गेल अछि जे साए अवैदिकसँ नीक एक वैदिक होइ छैथ।

अनुभवी लोकपर नजैर जाइते विचारचनक मनमे उठलैन जे नीक अनुभवियोमे पड़ोसी अनुभवीर्कें बीचमे राखब बेसी नीक हएत। किए तँ एक टोलमे रहै छी तँए बहुत बेवहार तँ एहनो अछिए जइमे क्षेत्रक हिसाबसँ किछु-ने-किछु भिन्नता सेहो भइये जाइए। गियानचन ऐठाम जाइसँ पहिने विचारचन देवन ऐठाम पहुँचला।

दरबज्जापर बैसल देवन विचारचनर्कें देखिते बजला-

“विचारचन, एक प्रक्रियाक कर्म तँ गियानचनक सम्पन्न भऽ गेलैन।”

आगू-पाछू बिनु सोचनहि विचारचन बजला-

“हँ।”

विचारचनक बात सुनि देवन बजला-

“मुदा आजुक जे आरो क्रिया अछि ओ तँ बाँकीए अछि किने?”

देवनक मुहसँ ‘बाँकी’ सुनि विचारचनक मनमे जेना धक-दे उठलैन। उठलैन ई जे आइक दिनुका कर्म ‘सारा झाँपब’ छल ओ सम्पन्न भेल, मुदा मुरदा जरबैले जे कठियारी गेल छला, तिनका सभक तेरातिक भोज तँ बाँकी अछिए किने। ओ तँ रातिमे हएत। विचारचन बजला-

“देव भाय, दिनुका काज ने भऽ गेल मुदा रौतुका तँ बाँकीए अछि।”

ओना, विचारचनर्कें सेहो बुझल छेलैन जे जे कठियारी जा लहास जरबैक क्रियामे संग पुरै छैथ हुनका सभर्कें तेरातिक भोज मिहनतनामा तरे देल जाइ छैन जे उचितो तँ कहले जा सकैए। किए तँ मुरदा जरैमे सबा पहर, माने तीन घन्टाक पहर भेने पौने चारि घन्टाक काज भेल तइ

बदलामे तेरातिक भोजक चलैन भेल। ओना, जँ देखल जाए तँ शरीरक सभ क्रिया सम्पन्न भऽ जाइए आ किछु गोरेकेँ हाथ धुआ सेहो सम्पन्न कएले जाइत अछि। अपनाकेँ अबुझ अनभुआर बनि विचारचन बजला-

"से की बाँकी अछि, भाय साहैब?"

विचारचनक झाँपल विचारपर परदा दैत देवन बजला-

"विचारचन, ओना दिन-दिनक क्रिया दुनियाँमे मृत्युक छीहे। मुदा तइमे एक-दोसरमे माने एक समाजसँ दोसर समाजो आ समाजक एक जातिसँ दोसर जातियोमे अन्तर रहने देखलो बात तँ लोक बिसरिये जाइए, सएह भरिसक अहूँकेँ भेल अछि।"

अपन बिसरबक गर देखि विचारचन बजला-

"हँ भाय, ठीके कहै छी। बिसरबो केना ने करब। जखन परिवारक जाल-जंजालमे पड़ल छी, तखन कि एक्को मिनट चैन रहैए जे भगवतो भजन, माने समूहक क्रिया-कलापमे रहब। तखन तँ अहाँ सभक परतापे कहुना जीब लइ छी।"

अपन बड़प्पन सुनि देवन बजला-

"विचारचन, नीक हएत जे गियानचने ऐठाम चलू। ओइठाम जे गप-सप्प करब तँ घरनियोँ सुनबे करथिन। जे विचार नीक लगतैन तइ अनुकूल अपन करती आ जे प्रतिकूल बुझि पड़तैन से नहि करती।"

देवनक बात सुनि विचारचनोक मन मानि गेलैन जे नीको सएह हएत।

गियानचन ऐठाम दुनू गोरे माने देवनो आ विचारचनो, हर्षित मने पहुँच सावित्रीकेँ इशारासँ शोर पारि लगमे अपनो बैसै गेला। बैसिते विचारचन बजला-

"मृत्युक पछातिक पहिल कर्म आइये सम्पन्न हएत। जहिना छाउर झँप्पीसँ असमसानक काज सम्पन्न भेल तहिना असमसानसँ घर आबि, जे कठियारी गेल छला, हुनकर मेहनताना दैत घरोक काज सम्पन्न कएले जा

सकैए।”

सावित्रीक मनक बात बुझै दुआरे विचारचन अपन विचार अदहेपर आनि रोकि लेलैन। ओना, सावित्रीक अपनो मनमे रहैन जे चलि गेला से चलि गेला। जिनगीमे जेहेन कर्म केलैन तेहेन समाज बुझतैन। मुदा समाजोक बीच तँ अनेको बन्धन अछिए जे दसम दिनक नह-केशसँ शुरू हएत, ओइ दिन सेहो समाजकेँ भोज खुअबए पड़ैए, तेकर परात एकादशा दिन माने एगारहम दिनसँ श्राद्धक पहिल क्रिया प्रारम्भ होइए जइमे आँगनसँ पोखरिक घाट तक श्राद्ध कर्म सेहो होइए आ समाजकेँ भोज सेहो खुऔल जाइए। जे श्राद्धक अन्तिम क्रिया तक चलैत रहैए। जहिना विचारचन सावित्रीक पेटक बात गमए चाहलैन तहिना समाजक विचारकेँ गमैक खियालसँ सावित्री बजली-

“यएह सभ ने पुरुख पात्र छैथ, हम किछु भेलौं तँ मौगिये-मेहरि ने भेलौं, जे करता से यएह सभ ने करता। हमरा जे कहता, जहाँ धरि सकरता हएत तहाँ धरि करब, नहि तँ दुनू हाथ जोड़ि कहबैन जे एक लोटा पानि पीब उद्धार करौथ।”

सावित्रीक बात सुनि जहिना देवनक अक-बक् बन्न रहैन तहिना विचारचनोक भेलैन। देवन ऐ दुआरे किछु ने बजै छला जे विचारचन कर्ता-धर्ता छैथ, तँए आगू भऽ कऽ वएह ने अपन विचार रखता। जहिना देवन विचारचनक विचारक प्रतिक्षा करए लगला तहिना विचारचन सेहो देवनक मुँह दिस देखए लगला जे देवन भाय किछु छैथ तँ अनुभवी छथिए, ओ जे बजता से मानि लेब। जँ कियो समाजक कोनो बात जानए-बुझए औत तँ देवन भाइक नाओंकेँ अगुआ बाजब जे देवन भाइक विचार छिऐन। तहूमे साठि बर्खक उम्र सेहो देवन भाय टपि चुकल छथिए, तँए बताहे सही मुदा चार्वाक जकाँ वैदिक ऋषि नहि बनता सेहो बात नहियेँ अछि। देवनकेँ उसकबैत विचारचन बजला-

“देवन भाय, सभ दिनसँ सभकियो अहाँकेँ भाय कहै छैथ तँए हमहूँ भइये कहै छी। मुदा अहाँ तँ बाबा उम्रक छीहे तँए अहींक विचार ने

सनातन विचार हएत।”

विचारचनक विचार सुनि देवनक अपन विचार जगलैन जे समाजमे जहिना सभ दिन रीति-कुरीति अछि आ कुरीत-रीति अछि, तेकरे किए ने सोझरा कऽ कहि दिऐ जे ओझरीए मेटा जाएत। देवन बजला-

“बौआ विचार, समाजमे एहनो समाज अछि जे मृत्यु भेला पछाइत लहासकेँ गंगामे जहिना फेक शुद्धकेँ अशुद्ध आ अशुद्धकेँ शुद्ध बनबैक लाभ उठबैए तहिना ने गामो-समाजमे अछिए।”

ओना, सावित्रीक मनमे खुशी जगैत रहैन जे मनक बात देवन चाचा बाजि रहला अछि। मुदा समाजो तँ ओहन समाज नहियेँ अछि जे घर-घराड़ी बेचा मृत्यात्माक उद्धार नहि करै छैथ। आजुक परिवेशमे भलेँ लोक बाहर जा कमा कऽ भोज किए ने करथु मुदा की उचित की अनुचित से तँ वएह ने बुझता। अपन विचार फेकैत सावित्री बजली-

“दुनू गोरे विचारि जे कहता से करब।”

विचारचन बजला-

“दसम दिन फेर विचारि लेब। आजुक जे मेहनताना भोज अछि ओ मेहनत केलहा लोकक छिऐ, तँए औझुका काज आइ सम्हारि लिअ, ऐगला आगू बुझल जेतइ।”

सावित्री बजली-

“एते धड़फड़मे दही केना पौरल जाएत। साँझमे महींस दुहले जाएत। दूधक जँ ओरियानो करब तँ ओ पातपर खाएल केना हएत। पातपर सभटा बहिये जाएत।”

❑

शब्द संख्या: 3202, तिथि: 17 अप्रैल 2021

छठम पड़ाव

आइ नवम् दिन छी, माने गियानचन मुइलाक नवम् दिन, कौल्हुका समय माने नह-केश दिनक, गियानचनक पत्नीकेँ देने छिऐन, तेरहा श्राद्धक वृहत् कर्म काल्हिसँ शुरू हएत..! ऐठाम आबि देवनक मन ओहिना अँटैक गेलैन जेना कोनो तीनमुहाँनी बाटपर पहुँचला पछाइत होइए। एक दिस अपन जीवनक कर्म देवनक आगूमे ठाढ़ छेलैन तँ दोसर दिस फन्दामे फन्द लगल समस्याक समाधानक विचार सावित्रीकेँ काल्हि देब छैन। फन्दमे फन्दा ई लगल अछि जे देखिते छी समाज सम्प्रदायक बीच बँटल अछि। कियो कहता हम हिन्दू छी तँ कियो कहता हम मुसलमान, कियो कहता इसाई छी तँ कियो कहता यहूदी-पारसी। ई तँ भेल ऊपरका फन्दा, मुदा ऐ सँ निच्चाँमे अछि हिन्दूक बीच अनेको जाति आ अनेको बेवहार, तहिना आनो-आन साम्प्रदायिक जातिमे सेहो अछिए। अहूसँ जँ निच्चाँ चलब तँ एक जाइतिक बीच सेहो अनेको जाति अछि, जैबीच अनेको अलग बेवहारमे सेहो एते दूरी बनले अछि जे एक-दोसरकेँ अछोप-अछुत बुझि ने बेटी-बेटिआरे करै छी आ ने श्राद्ध-बिआहक भोजमे एकठाम बैस खाइ छी। बुझैइयेमे ने औत जे अन्न-पानिमे छुत अछि आकि मनुख मनुक्खमे अछि। दान-दैछना पबैकाल सभक मुहसँ निकैलते छैन जे मानवधर्मक निर्वहन सभ मनुक्खकेँ करक चाहिऐन..! ऐठाम आबि देवनक मन अँटैककऽ थीर भऽ गेलैन। विचारमे शान्ति एने जहिना चित्तमे सेहो शान्ति आबि जाइए तहिना देवनोकेँ भेलैन। चित्त शान्त होइते देवनक मन सावित्रीक समसामयिक दशापर गेलैन। भगवानो केहेन निर्दयी छैथ जे जँ गियानचनकेँ लइये जेबाक छेलैन तखन छह माससँ घिसियौर किए कटौलखिन? जेना सँपकट्टा, विसचट्टा चटपट चलि जाइए जेकरा दवाइयो-

दारूमे एको पाइ खर्च नइ होइ छै आ सेवो-टहलमे सेहो नहियेँ होइ छइ। मुदा तेना तँ सावित्रीक संग नहि भेलैन। छह मास गियानचनक दवाइ-दारूसँ सेवा टहल धरि सभ करए पड़लैन। तैसंग बीघा दुइयेक जमीनो भरना लागि गेलैन आ दस कट्ठाक सम्पन्न गाछीक गाछो बिका गेलैन। तैपर समाजक तेहेन निरलज लोक सभ अछि जे कियो बाट परक भदवा, माने यात्रा पहर विधवाक मुँह देखब, तँ कियो बिनु परुखक नारी माने मसोमात बुझि कुदृष्टि सेहो रखिते अछि.!

सावित्रीक सम्बन्धमे देवनक विचार जेते गहराइत गेलैन तेते देहसँ पसीनाक पानि निकलए लगलैन। एकाएक अपने-आपपर नजैर पड़लैन तँ देखलैथ जे हमहूँ तँ सावित्रीक (माने गियानचनक) समाजे छिऐन किने। की समाज होइक नाते हमरा एतबो विचार करैक अधिकार नहि अछि जे जेते निच्चाँ गियानचनक परिवार टुटिकऽ खसि पड़ल, तेकरा ओहीठाम ठिमिया माने सीमा बान्हि, ओइठामसँ ऊपर (आगू) उठैक रस्सी पकड़ा इनारक डोल जकाँ ऊपर करी..? देवनक मन ठमकलैन। ठमैकते ठहकलैन जे अखन जे श्राद्ध-कर्मक प्रक्रिया समाजमे अछि ओ..! जखन कि आइ हम एक्कैसमी सदीमे छी, बेंगकेँ चीर-फाड़ि ओकर सभ अंगक पता लगा लइ छी आ अपन जे समाजक बान्ह-छान्ह अछि तेकरा चीर-फाड़ि पता लगाएले ने होइए। अपन मनक घोड़ाक छोर खिंचैत देवनक मन अपना विचारपर आबि अँटैक गेलैन।

संयोग बनल, तहीकाल विचारचनो देवन ऐठाम पहुँचला। विचारचनकेँ देखिते हाथक इशारासँ देवन अपना लगमे विचारचनकेँ बैसौलैन। ओना, विचारचनक चरित्रसँ देवन नीक जकाँ परिचित छैथ। नीक जकाँ परिचितक माने भेल जे जहिना नीको विचार विचारे भेल आ अधलो विचार तँ विचारे भेल किने, तहिना दुनू विचारक बीचक लोक विचारचनकेँ बुझै छैथ। विचारचनकेँ बैसते देवन पुछलखिन- "विचार बाउ, आइ तँ गियानचनक मृत्युक नवम् दिन छी, काल्हि नह-केश हएत।"

देवनक विचार सुनि विचारचनक मनमे भेलैन जे पेटक बात केना

देवन भाय बुझि गेला। हूँहकारी भरैत विचारचन बजला-

“हँ।”

मृत्युक पछातिक पहिल क्रियाक आइ अन्तिम दिन छी, काल्हिसँ दोसर प्रक्रियाक शुरू हएत। माने नह-केश कटौला पछातिक प्रक्रिया शुरू हएत। पहिल प्रक्रिया आ दोसर प्रक्रियाक बीचक जे क्रिया अछि, तेकरा मनमे आनि देवन बजला-

“विचारचन, पहिल प्रक्रियाक तेसर दिनक प्रक्रियामे की सभ केलह?”

जहिना आनक कोनो काज केलाक पछाइत कर्ता अपन वाह-वाही लूटए चाहै छैथ तहिना अपन वाह-वाही लुटैक खियालसँ विचारचन बजला-

“देवन भाय, मुरदा जरबैसँ लऽ कऽ छाउर-झँप्पी आ रातिमे कठियारीबलाकेँ खुअबैत-खुअबैत एतेक राति भऽ गेल जे भरिपोख चैनसँ सुतियो ने सकलौं। भोरे बुझि पड़ै छल जे अखने कोनो काज कऽके एलौं हेन तहिना देह-हाथ बथै छल।”

एक तँ ओहुना देवन भँजियाह लोक छैथ तैपर साठि सालक अनुभव समाजक एकटा कसौटी छैन्हे, बजला-

“छाउर-झँप्पी दिनमे भेल, रातिमे भोजो-भात भेल, मुदा छाउर झँप्पीक पछाइत सारा लग पुजौलो जाइए आकि से नहि होइए?”

देवनक प्रश्न सुनि विचारचन अकबका गेला। अकबकाइक कारण भेलैन जे अपन समाजक जे चलैन छैन माने जातीय समाजक, तइ अनुकूल पुजबैक चलैन नहि अछि। ओना, सभ किछु भरल परक फूरब छीहे। मनमे अबिते विचारचनकेँ एते तँ बिसवास जगबे केलैन जे कोनो कि गियानचनेक सारा लग पुजौल नहि गेलैन आकि एहेन-एहेन आरो गोरे भेला अछि..? मनकेँ सक्कत करैत विचारचन बजला- “समाजक जे चलैन रहत तही अनुकूल चलब ने नीक हएत। अपना सभमे सारा लग पुजबैक

चलैन कहाँ अछि जे पुजबए कहितिऐन।”

विचारचनक बात सुनि देवनक मनमे ठहकलैन जे विचारचनक विचारमे मिसियो भरि दोष नहि अछि। मुदा दोषो नहि भेल अछि सेहो बात नहियेँ अछि। जइ समाजमे सारा लग पुजबैक बेवहार (चलन) अछि, ओइ समाजक नजैरमे तँ दोष भेबे कएल। फेर देवनक अपने मन कहलकैन जे विचारचन किछु अछि तैयो अपना सोझामे बाले-बोध ने अछि, अखन जे किछु टुटो-नफा करि समाजक भार उठा रहल अछि तँ एकरा समाजक सौभाग्ये ने कहल जाएत। विचारकेँ सोझरबैत देवन बजला-

“बौआ विचार, अपना ऐठाम माने अपना समाजमे, ने मुरदा जरबैक एक रास्ता अछि आ ने जरौला पछातिक क्रियाक।”

बजैक क्रममे देवन बाजि गेला मुदा अपने मन कहए लगलैन जे जे विचार व्यक्त केलौं से भरिसक विचारचन नहि बुझलक। कोनो विचार बुझला पछातिक मुँहक सुरखी आ नहि बुझला पछातिक सुर्खीक सुर्खपनमे अन्तर भइये जाइए, सएह विचारचनक चेहराक रंग कहैत रहैन। मुदा तैयो हूबा करैत विचारचन बजला-

“से की, भाय साहैब?”

देवन बजला-

“अपना समाजमे जहिना अनेको चलैन मुरदा जरबैक अछि, माने ई जे जिनका ओकाइत छैन ओ चन्दनक लकड़ीसँ मुरदा जरबै छैथ, जिनका ओइसँ कम छैन ओ आमक लकड़ीसँ जरबै छैथ, तहिना जिनका तहूसँ कम छैन ओ खढ़े-पातसँ जरबै छैथ आ जिनका सेहो ने छैन ओ ओहिना माटिक तरमे मुरदा गाड़ि दइ छैथ। तेतबे नहि, उपराइर दिस माने धारक इलाकासँ अलग, जहिना मुरदाकेँ माटिमे गाड़ैक चलैन अछि तहिना धारक इलाकामे धारमे फेकैक चलैन सेहो अछिए।”

अखन तक विचारचन लकड़ीसँ लऽ कऽ गोरहा-गोइठासँ मुरदा जरबै धरिक बात बुझै छैथ, ओना समाजमे मुरदा गाड़ैक चलैन सेहो सम्प्रदाय-विशेषमे देखिते छैथ। ..देवनक मुँहक बात सुनि एकाएक

विचारचनक विचार आगू बढ़लैन। बजला-

"भाय साहैब, जे काज निपैट गेल तेकरा छोड़ू। जँ भूतकेँ खेहारए लगब तँ ओहो घुमिकऽ खेहारबे करत। काल्हि दसम दिन छी, ऐगला काज–माने सावित्रीकेँ पति श्राद्धक ऐगला काज–क विचार-विमर्श करैक अछि, तँए मनमे भेल जे किए ने दुनू-भाँइ एकठाम बैस काजक पहिने मुँह-मिलानी कऽ ली।"

विचारचनक सोझगर विचार सुनि देवनक अपने मन कहलकैन जे कहि दिऐ बड़बढ़ियाँ। मुदा एकठाम बैस जखन विचारक मुँह-मिलानी करब तखन विचारक मुहसँ नाङैर आ नाङैरसँ मुँह धरि एकरंग बुझल रहत तखन ने, नइ तँ बुझले अछि किने जे अपना सीमामे कुत्तो बताह होइए। तँए देखबे करै छिऐ किने जे केहेन मिलानसँ समाजक लोक जीवन बितबैए।

आगूक क्रियाक विचारक बोनमे देवनक मन विचरण करए लगलैन। एक मन कहैन जे अपन मनक विचार विचारचनपर थोपब उचित नहि, किए तँ जँ विचारानुकूल कर्ता नहि रहत तखन ओइ क्रियाक सम्पादन नीक जकाँ नहि भऽ सकत आ दोसर मन कहैन जे तइसँ हजार कच्छे नीक हएत जे विचारचनेक विचार सुनि ओकरे मनक धारणाकेँ पकैड़ उचित दिशा धड़ैपर धियान केन्द्रित कराएब। विचारचनकेँ बहवाही करैत देवन बजला-

"यएह छी बुधिविचड़ी, बौआ। अहिना सदैतकाल धियानमे राखी जे जेहेन काज करैक डेग उठेलौं, ओइ काजकेँ करैक समचा अपना केते अछि आ बाहरसँ केते ओरियान करैक अछि। जँ अहिना कोनो काजक महत् बुझि ओइपर हाथीक महथवार जकाँ हाथमे अंकुश पकैड़ आगू बढ़ब तँ नीक छोड़ि अधला किए हएत।"

ओना देवनकेँ विचारचन एतेक श्रद्धाक नजैरसँ देखबे करै छैन जे देवन भाय सृष्टिजन छैथ। तँए एकठाम बैस एकाध घन्टा अपन परिवारसँ समाज धरिक मथन-माथन करितौं, मुदा से साधन्ते ने होइए। अपनो

सभक गाम-समाजमे अछिए जे जिनका सृष्टिजन बुझै छिऐन हुनका लग बैस जीवनक अनुकरण करब सेहो नहियेँ भऽ रहल अछि। तइमे दुनूक अपन-अपन जीवन आ जीवनक क्रिया जहिना साधक अछि तहिना बाधको तँ अछिए।

देवन बजला-

“केहेन काजक केहेन मुँहमिलानी, बौआ?”

ओना, देवनक विचार विचारचन नीक जकाँ नहि बुझि सकला, मुदा अपन जे कौल्हुका व्योंतल काज छेलैन माने गियानचनक श्राद्ध-कर्मक विचार करब, से तँ मनमे ओहिना शीताएल खेतक बीजक अंकुरा जकाँ चक-चक करिते रहैन। विचारचन बजला-

“गियानचन दोसक काल्हि नह-केश छिऐन से...।”

‘नह-केश’ कहि विचारचन चुप भऽ गेला। किएक तँ विचारचनक नजैरमे मात्र सावित्रीक ऐगला काजक विचार छेलैन, मुदा देवन बुझलैन जे समाजमे जे मृत्युक प्रक्रिया अछि से। देवन बजला-

“बौआ विचार, अपना समाजमे जहिना मुरदा जरबैक एक रास्ता नहि, अनेको रास्ता अछि तहिना ऐगला काजोक माने श्राद्ध-कर्मक सेहो एक रास्ता नहियेँ अछि। यएह छी अपन-बाप दादाक देल जीवन दर्शन।”

गियानचनक क्रिया-कर्मक कोनो चर्च नहि सुनि विचारचन बजला-

“से की भाय साहैब?”

जहिना अपन छोट भाएकेँ कोनो काज करैक लूरिक बीह फाड़ि बिहिया-बिहिया चलैक रस्ता देखा आगू बढ़ैले पीठ ठोकि बनौल जाइए तहिना विचारचनक पीठ ठोकैत देवन बजला-

“बौआ, काल्हि नह-केश हएत। ई भेल तेरहा श्राद्धक प्रक्रिया, मुदा समाजमे एहनो समाज तँ छथिए जे अर्द्धामासी करै छैथ, हुनकर नह-केश दसम दिनसँ आगू बढ़ैत ने हेतैन। तहिना जइ समाजमे मासी होइ छैन, तिनकर नह-केशक कर्म तँ तोहूसँ आगू बढ़ि कऽ ने हेतैन। ओना, समाज

अपन सामूहिक रास्ता बनौनहि छैथ जे मृत्यु भलेँ किनको होनु मुदा अग्निदाहमे भाग लेनिहार जे बरियाती छैथ ओ नह-केश कटबैथ सेहो बड़बढ़ियाँ आ नहि कटबैथ सेहो बड़बढ़ियाँ। ओना, समाज आ परिवार–दियादवाद–क बीच अन्तर अछिए।”

विचारकेँ समेट विचारचन बजला-

“भाय, हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता अछिए। तहू हरिमे एकरूपता रहैत तखन आ नइ रहने सेहो अनन्त भइये जाइए। जहिना वाल्मीकिक राम जे विष्णुक अवतार छैथ ओ तुलसीमे परब्रह्म ईश्वरक अवतार बनि गेल छैथ। आ तइसँ हजारो कोस हटि कबीरक राम सोल्होअना निर्गुण-निराकार बनि गेल छैथ। तहूमे ई कहब जे अपने सभटा रामकेँ जनै छिऐन सेहो बात नहियेँ अछि। दुनियाँक लोक जनिते छैन। रामक तीन साए मौलिक कथा दुनियाँरूपी समुद्रमे तैर-उपलाए सेहो रहल अछिए।”

दुनियाँ दिस भँसैत विचारचनक विचार सुनि देवन शतरंजक गोटी जकाँ सह दैत बजला-

“बौआ विचार, यएह छी दुनियाँ आ दुनियाँक खेल-बेल। घर-घरक मर्दक कोन बात जे स्त्रीगणो सभ बुझबो करै छैथ आ बजितो तँ छथिये जे जीवितमे गुँहा-भात आ मुइलापर दूधा-भात।”

एक तँ ओहिना विचारचनक मन भँसिया गेल छेलैन तैपर देवन सेहो तेना भँसिया देलकैन जे जहिना सुखल जरनाक बोझ माथपर नेने कियो जरनवाह पानिमे भँसियाइत ने जारनक बोझ माथपर सँ हैटबैए आ ने अपन जान उरीन करए चाहैए तहिना विचारचनकेँ सेहो भेलैन। ओना, देवन सेहो मने-मन विचारचनक मनक विचार टोबिये रहल छला। एकाएक विचारचनक मनमे उठलैन जे अनेरे समुद्र उपछैक फेड़मे पड़ै छी, जइ काजक भार दोस्तीनीक उठौने छिऐन मात्र किए ने तेतबेक मुँहमिलानी दुनू-भाँइ कऽ ली। कमसँ कम एते तँ जरूर हेबे करत किने जे जँ कोनो काजक विरोधो समाज करत तँ दू-भाँइक विचार सेहो एक दिस रहबे करत। ..अपन विचारक सीमामे अबिते विचारचनक मन सहमलैन।

सहैमते मनमे उठलैन जे किए ने मोटबरे विचार देबन भाय लग राखी। बजला-

“भाय साहैब, बुझले अछि जे काल्हि मीतक माने गियानचनक मृत्युक दस दिन भऽ जेतैन। काल्हिसँ की सभ कर्म हएत?”

दससँ तेरहम दिनक माने नह-केशसँ द्वादसा-तेरहाकर्म धरिक, बीच ने सभ कर्म अछि। किछु नव कर्मक जन्मो हएत तँ किछु पुरान कर्मक विसर्जन सेहो हेबे करत। तहूमे विचारचन अखन किछु अछि तँ बच्चे अछि किने। अपने जँ अपना ढंगक विचार राखब आ ओ आँखि मुइन ‘हँ’ कहिये देत तखन विचार मथन केना हएत? जँ विचारे मथन नहि हएत तखन जँ मुँहमिलानी करबे करब तँ ओ केते दिन जीवित रहत.? ..फेर अपने मनमे देवनकेँ उठलैन जे एते तँ बिसवास कइये कऽ ने विचारचन आएल अछि जे दुनू-भाँइक मुँह-मिलानीए ने समाजक शक्ति सेहो पैदा करिते अछि। देवन बजला-

“बौआ विचार, कोनो कि सौंसे देशक नक्शा-खतियान तैयार करैक अछि जे अखन विचार लेब आ काल्हि ओइठाम गियानचनक पत्नीकेँ कहबैन काजमे हाथ लगा दियौ। भलेँ गियानचन अपने मरि गेल, मुदा पत्नियोँ आ बच्चो तँ छइहे। तँए नीक हएत जे अपनो दुनू गोरे रहब आ ओहो रहती, तीनू गोरे एकठाम बैस ऐगला काजक रस्ता विचारिकऽ हथिया लेब।”

ओना विचारचनकेँ देवनक विचार मनमे जँचलैन मुदा मुँहपुरखीक जे धारणा मनमे बैस गेल छैन तइसँ मनमे होनि जे अखुनके केलहा विचार ने काल्हि नीक जकाँ काज करत। विचारचन बजला-

“भाय सहाएब, मरदा-मरदी काज रहैत तखन तँ विचारो आ काजो संगे-संग करैत चलितौं मुदा से तँ अछि नहि। मर्द-औरतक बीच संग मिलि काज करैक अछि। मर्द-स्त्रीगणक बीच जँ पहिने नहि विचारि लेने रहब तँ काजक दौड़मे उन्टा-फेर हेबे करत किने?”

विचारचनक मनक विचारकेँ सक्कत बनबैत देवन बजला- “कोनो

कि बही-खाताक काज छी जे सून्ना कम बेसी केने लाख करोड़ भऽ जाएत आ करोड़ लाख। ऐठाम तँ जीवनक क्रिया छी, तिले-तिल जहिना बढ़बो करत तहिना ने तिले-तिल घटबो करबे करत। तइले मन उदास करैक कोन जरूरत अछि।”

देवनक बात सुनि विचारचनक मनमे जेना श्वासक, माने स्व-आसक प्रकाश जगि गेल होनि तहिना भेलैन।

❑

शब्द संख्या: 2026, तिथि: 21 अप्रैल 2021

सातम पड़ाव

चहाएल मन रहने चारि बजे भोरेमे विचारचनक नीन टुटि गेलैन। नीन टुटिते भेलैन जे भोर भऽ गेल आ अपने अखन तक सुतले छी। दोस्तीनी–सावित्री–रास्ता तकैत हेती। से नहि तँ पहिने हुनका ऐठाम जा औझुका कर्मक सभ बात कहि दिऐन। मुदा कहबैन की? साँझू पहर जँ देवन भाइक संग विचारि नेने रहितौं तखन ने, से तँ ओ कहलैन जे करताइते लग जा काजोमे हाथ लगा देब आ विचारो करिते चलब। तँए देवन भायकेँ सेहो संग करब जरूरी अछिए। ..तही काल चरिबजिया गाड़ी स्टेशनपर पुक्की देलक। विचारचनकेँ बुझल रहबे करैन जे चरिबजिया गाड़ी पूबमुहेँ जाइए, सएह अखन सीटी देलक अछि, तँए अखन भोर नहि भेल हेन। ओछाइनपर सँ उठि बाहर निकैल अकास दिस तकलैन तँ डंडी-तराजूकेँ पूबे दिस उगल देखलैन। ओना, विचारचनकेँ ई नहि बुझल छेलैन जे अकासक डंडी-तराजू मौसमक हिसाबसँ सेहो उगै-डुमैए। कोनो मौसममे साँझुए पहर उगि बारह बजे राति होइत-होइत डुमि जाइए आ कोनो मौसम एहनो होइते अछि जइमे बारह बजे रातिमे उगैए आ भोरमे डुमैए। अपने मनमे विचारचनकेँ दुबिधा उठि गेलैन। एक मन कहैन जे भोर भऽ गेल, दोसर मन कहैन जे अखन डंडी-तराजू पूबमे उगबे कएल अछि तँए भरिसक साँझे पड़ल अछि। मुदा फेर अपने होनि जे साँझक कोन बात जे खाइ-पीबै रातिमे सेहो खेबे-पीबे केलौं, ओछाइनपर जा नीनसँ सुतबो केलौं तखन साँझे केना पड़ल अछि? अपने तँ ने मनभ्रमित भऽ गेल छी जे पच्छिमेकेँ ने पूब बुझै छिऐ.? मुदा से अखन केना फरिछाएब। दिन रहैत तखन ने सुर्जकेँ देखि पूब-पच्छिमक ठेकान करितौं। रातिक ठेकान पएब ओते असान अछि। दिनमे सुर्ज भोरमे पूब दिशामे उगैए आ साँझमे

पच्छिम दिशामे डुमैए, जे नियमित अछि। मुदा राति तँ राति छी। रातिक कोनो ठेकान नहि पेबि विचारचन अपन दुनू आँखि मुइन मनकेँ थीर करैत विचारलैन जे दिनमे सुर्ज उगने दिनक ठेकान होइए मुदा राति तँ चन्द्रमाक छी, तहीसँ ने रातिक भाँज पएब।

आँखि खोलि जखन विचारचन मनन केलाह तखन भाँजपर चढ़लैन जे पूर्णिमाक चान पूबमे वृहत् रूपमे उगैए आ भोरमे पच्छिममे ओहिना वृहत् रूप माने पूर्ण रूपमे डुमैए। पूर्णिमाक चान विचारचनक भाँजपर चढ़ैक कारण भेलैन जे कातिकक पूर्णिमामे सभ साल गंगा नहाइले सिमरिया घाट जाइते छैथ। ऐठाम ई नहि बुझब जे देश प्रसिद्ध कवि रामधारी सिंह 'दिनकरजी'क सिमरियाक चर्च छी। आजुक सिमरियाक गति की अछि आ दिनकरजीक सिमरिया केहेन छल। जइ सिमरियाक दिनकरजी कलमधारी सिपाही छला ओ सिमरिया अखन बन्दूकधारी गाम केना बनि गेल अछि? की गंगा-दियाराक माटिमे एहेन दोष अछि आकि माटिक मूर्तिमे। अखनो तँ लोक ओही दियाराक माटि आनि, जेकरा गंगोट कहै छिऐ, चाइनोमे आ बाँहियोमे लगा पितरक उद्धारो आ स्मरण सेहो करिते छैथ।

सिमरिया घाटक गंगामे डुम देब मोन पड़िते विचारचनक विचार सक्कत भेलैन जे सुर्जे जकाँ चानो पूबमे उगैए आ पच्छिममे डुमैए। ठिकियाकऽ विचारचन 'राति रहने' चानकेँ भँजियबैक विचार करए लगला। चान पच्छिममे हँसुआ जकाँ उगल देखि पड़लैन। हँसुआ सन चानकेँ देखिते विचारचनक मन आरो दिग्भ्रमित भऽ गेलैन। दिग्भ्रमित होइक कारण भेलैन जे पूर्णिमाक चानक उगै-सँ-डुमै धरिक देखल रूप मनमे छेलैन जे जइ चानक रूप लोहित रंगक विशाल गोला जकाँ लगैए से आइ कहाँ अछि? तँए मन ठकमुरिया गेलैन। विचारचनकेँ भूगोलक बात बुझल नहि छेलैन जे चान तँ चाने छी, दुनियाँक एक ग्रह छी जे कहिया उगत कहिया डुमत, ने तेकर ठेकान आ ने पूबमे उगत आकि पच्छिममे डुमत, तेकर ठेकान अछि.! ओना, ठेकान दुनूक अछि। जँ से नहि अछि तँ नियमित केना अछि.? एक पनरहिया माने पूर्णिमाक पछातइ, पूब दिस

उगैए आ अमावसियाक पछाइत पच्छिम दिस उगैए? तहूसँ पकिया पहचान ई अछि जे पूर्णिमाक पछातिक चान पले-पल पतराइत जाइए जे अमावसिया अबैत-अबैत सोल्होअना हारि-हेरा जाइए। तेकर विपरीत अमावसियाक पछातिक चान अछि जे पले-पल मोटा-मोटा पूर्णिमा अबैत-अबैत एते मोटा जाइए जे लोहित रूपमे विशाल गोला बनि हेरा-हेरा अन्हारकेँ इजोत बना दइए। की चाने जकाँ मनुष्योक जिनगी अछि। जे एक दिस कियो धनसँ भरल अछि आ कियो धनविहीन अछि। जहिना धनकुबेरक बाढ़ि एक दिस घटने दोसर दिस बढ़ैए तहिना ने मनुक्खक जिनगी अछि, जइमे एक दिस विषपन घटने दोसर दिस समपन सेहो भइये जाइत अछि। एकाएक विचारचनक मनमे शान्ति स्वरूप सिरखारक रेह जगलैन।

अनायास विचारचनक मनमे उठलैन जे बच्चा जहिना पाइनिक रूप बदलैत माइटिक रूपमे, माने तरलसँ ठोस रूपमे, परिवर्तित होइत एते ठोस-सक्कत भऽ जाइए जे एकटा दुनियाँक सृजन कऽ लइए। जहिना सुर्ज दुनियाकेँ प्रकाशित करैए तहिना मनुक्खोक चेतनशक्तिमे ने एहेन गुण अछिए। एक दिस जहिना अबोध अज्ञान बच्चा जगि सबोध-सज्ञानमे बदैल सजि जाइए तँ दोसर दिस चान-सुर्ज-तरेगन अकासमे सजैत धरतीपर पहाड़-समुद्र सेहो सजिते अछि, मुदा विचारचनक जागल चेतनशक्ति ओइठाम आबि पुन: तेना लसैक गेलैन जेना सड़क टुटल खच्चामे गाड़ी-सवारी लसैक जाइए। विचारचनक चेतन मन लसकैक कारण भेलैन जे एकटा दुनियाँ आँखिक सोझ अछि जे माटि-पानि आ धरती-अकाससँ सजल अछि आ दोसर दुनियाँ मनक भीतर अछि। सहो तँ सभ किछु अपनामे सजेनहि अछि। तखन दुनूमे सत् कोन अछि आ असत् कोन अछि? घुड़मुड़ाएल विचारचनक मन छेलैन्हे कि तही बीच गाछपर पौरुकीक जोड़ बाजल। पोरुकीक आवाज सुनि विचारचनक मन मानि गेलैन जे भोर भऽ गेल। भोरक आगमन बुझिते विचारचनक मनमे अनेको प्रश्नो आ अनेक काजो जेना दण्ड-बैसक करैत आबि गेल होनि तहिना धमकलैन। अनेको विचार आ अनेको काजक बीच विचारचनक मन

ओझरा गेलैन। ओझरा ई गेलेन जे कोन काजक की सूत्र अछि आ तैसंग पहिने केकरा करी वा कोन काज नहि करी। ओना, काज काजे छी तहिना राज राजे छी। एकटा काज चौअन्निया-अठनियाँ होइए तँ एकटा काज दसटकही-नमरीक सेहो होइते अछि। तखन की करब नीक हएत..? ऐठाम आबि विचारचनक मनमे जेना अस्सी मन पानि पड़ि गेलैन जइसँ सभ विचार पानियेँमे डुमि गेलैन। डुमल साँसक बुलबुला जकाँ साँस चलए लगलैन। साँसकेँ चलन होइते विचारचनक मनमे उठलैन जे अनेरे मनकेँ वौआबै छी। मनकेँ समेटि विचारचन औझुका काजकेँ उक्खैरमे कृष्ण जकाँ बान्हए लगला कि यशोदा मैया जकाँ सावित्रीक डोर पकड़ा गेलैन।

सावित्रीपर मन पहुँचते विचारचनकेँ अपन मर्दपनाक एहसास भेलैन। एहसास होइते मनमे जगलैन जे अपने ऐ दुनियाँसँ कोन मतलब अछि मतलब ओतबे ने रखैक अछि जेते पुरबैत चलैक अछि। गियानचन दोसक आइ नह-केश छिऐन, दोस्तीनीक संग बात हारि गेल छी, तखन वएह पुराएब ने माने हारलकेँ पुराएब अपन पुरुखपन भेल। भोरो भइये गेल। ओहू बेचारीक मन चहाएले हेतैन तँए ओहो अपन पतिक स्मरण करैत काज दिस, औझुका क्रिया-कर्म दिस, टक लगा बेसले हेती। किए ने अपन दैनिक कर्मसँ निवृत्त भऽ देवन भाय ऐठाम जा हुनका संग विचार करेत कर्म स्थलपर माने सावित्री-ऐठाम पहुँची। समतल दिशा देखि विचारचनक मन समतूल भऽ गेलैन।

नित्य-कर्मसँ निवृत्त होइत विचारचन विचारलैन जे चाहो पीब लेब नीक हएत। कमसँ कम एते शक्ति, काज करैक शक्ति तँ शरीरमे सृजन भइये जाएत जे बारह-दू बजे दुपहर तक एक्केउपे काज करैत रहब। ओना, अखन तक विचारचन ई नहि बुझै छला जे जे काज करए जाएब ओकर नाप-जोख की अछि आ अपन क्रियमाण काजक नाप-जोख की अछि। माने ई जे जँ चारि घन्टाक कोनो काज अछि तँ ओइकेँ करैसँ पहिने अपना ऊर्जाक ओते सृजन शक्ति तँ बनाइये ने लेब अछि जइसँ काजक नीक जकाँ सम्पादन करैत समापनपर पहुँचब।

चाह पीब पान खा विचारचन जखन पूब दिस तकलैन तँ बुझि

पड़लैन जे पह फाटि रहल अछि। सुर्जक लालिमा सेहो निखैर रहल अछि। एकाएक विचारचनक मनमे उठलैन जे जँ देवन भाय नहि उठल हेता तँ हुनका उठबैत तैयार करैमे सेहो समय लगबे करत..! मनमे द्वन्द्व जगि गेलैन। द्वन्द्व जगिते विचारचन थकथकाकऽ ठाढ़ भऽ गेला। जखन अपने दोसक ऐठाम जाइले तैयार भऽ गेल छी आ देवन भाय ऐठाम जाएब आ जँ कहीं अदहा-एक घन्टा हुनका तैयार होइमे लगतैन, ओइमे अपन समय तँ जेबे करत जे दोस्तीनीक नजैरमे दोखियो भइये जाएब किने जे अहाँ बेरपर नहि एलौं। लगले मनमे उठलैन जे जँ देवन भायकेँ संग नहि कऽ लेबैन, तँ ओहो दोख देबे करता जे जखन दुनू भाँइ विचारि नेने छेलौं तखन हमरा छोड़ि विचारचन असगरे किए चलि गेल। ..ई तँ साँप-छुछुनैरिक पड़ि भऽ गेल जे जँ खाएब तँ मरब, नहि जँ पकैड़कऽ छोड़ि देब तँ आन्हर हएब।

अपनाकेँ समगम बनबैत विचारचन विचार केलैन जे पहिने देवन भाइक ऐठाम जाएब, जँ हुनका तैयार होइमे बेसी देरी लगतैन तँ कहि देबैन जे आगू बढ़ि ताबे दोस्तीनीकेँ हम सूचना दऽ अबै छिऐन जे देवन भायकेँ संग केने अबै छी। जहिना जीवन-योग मिलने जीवनक गाड़ी अपन सरपट चालि पकैड़ चलए लगैए तहिना विचारचनक मनमे सेहो भेलैन।

देवन अपन जिनगीकेँ अपना हाथमे राखि मुट्ठी बान्हि चलिते छैथ, तँए अपन जीवनानुकूल समय छैन। नित्यकर्मसँ निवृत्ति होइत, चाह बना कप हाथमे नेनहि छला कि विचारचनकेँ देखि बजला-

“बौआ, हाथमे चाह लेबे केलौं अछि। एके कप चाह अछि, आबह दुनू भाँइ अहीमे से बाँटि कऽ पीब ली।”

चाह-पान खाएल-पीअल मन विचारचनक रहबे करैन, पान जे खेने रहैथ से एकोबेर पीतो नहियेँ फेकने छला तँए पीतसँ मुँह भरल रहबे करैन, पीत फेकैत विचारचन बजला-

“भाय सहाएब, चाह-पान खाइये-पीबकऽ घरसँ विदा भेल छलौं तँए नहि पीब। अपनेक भोरका अहार छी तँए अपने ग्रहण करियौ।”

विचारचनक बात सुनि देवन हँ-हूँ, बिना किछु बजनहि चाह पीब

पान खा विचारचनक संग गियानचन (सावित्री) ऐठाम विदा भेला। मात्र तीनियेँ-चारि मिनटक रस्ता अछि। सावित्री सेहो डेढ़ियापर सँ विचारचनेक रास्ता ताकि रहल छेली। सावित्रीकेँ देखि विचारचन बजला-

"हम सभ अपन निर्धारित समयपर पहुँच गेलौं।"

'हँ-हूँ' बिना किछु बजने सावित्री ठाढ़े रहली, मुदा तइसँ पहिने, माने विचारचनकेँ पहुँचैसँ पहिने दरबज्जा बहारि ओछाइन ओछा चुकल छेली। दरबज्जापर पहुँचते देवन बजला-

"भने तीनियेँ गोरे छी। तीन गोरेमे कोनो विचारक बीच एकमत होइमे देरी नहियेँ लगैए, तँए एकमत होइत काजक सूत्र बना लेब आ ओही अनुकूल काजकेँ आगू मुहेँ ससारैत चलब।"

देवनक विचारकेँ समर्थन करैत विचारचन बजला-

"अपने दिव्य बात भाय साहैब कहलिऐ। समाजमे देखै छी जे कण्ठ मोकि-मोकि लोककेँ निच्चाँ धकेलल जाइए, तैठाम जँ अपन जान बँचबैत संग मिलि चलि लेब, बाल-बोधक खेल थोड़े छी। अपने अनुभवी लोक छिऐ, तँए अनुभवक विचार कहबै, जखन अपन भार दोस्तीनी दऽ देली तखन अपनो सभक ने भार भेल जे हुनका पार-घाट लगबयैन।"

विचारचनक विचार जहिना देवनक मनमे जँचलैन तहिना सावित्रीक मनमे सेहो गड़लैन। आवेदक जहिना अपन बात लिखित वा मौखिक रूपमे ओवदन करै छैथ तहिना सावित्री आवेदित करैत बजली-

"हम तँ जिनगीक धारमे डुमैत नावपर सवार छी, अपने लोकैन जेना पार-धाट लगबिऐ..!"

सावित्रीक बात सुनि देवनक मनमे उठलैन जे सावित्रीकेँ कहि दिऐन जे कियो अपन पार-घाट अपने लगबै छैथ, तइमे दोसर-तेसर जँ कियो मददगार होइ छैथ तँ कियो विघ्न-बाधा सेहो उपस्थित करैबला होइते छैथ, मुदा अपने मन विचार देलकैन जे दुनू-गोरेक बीच माने देवन आ सावित्रीक बीच अखन तक कोनो विचार विनिमय नहियेँ भेल अछि, बीचमे विचारचन छैथ, तँए नीक हएत जे विचारचने किए ने बाजैथ। सएह भेबो कएल। बीच

बचाव करैत विचारचन बजला- “दुनियाँमे जखन सभक पार-घाट कोनो-ने-कोनो रूपेँ लगिते अछि, माने सफल-असफल होइत, तखन अहाँक पार-घाट किए ने लागत।”

‘पार-घाट’ सुनि सावित्रीक मनमे संतोषक रेगहा जगलैन। मुदा केना पार-घाट लागत से स्पष्ट नहि भेलैन। देवनक मन मानि रहल छेलैन जे जखन सावित्री अपन जीवनक रास्तक भार सुमझा रहली अछि तखन अपन जे जीवनानुभव अछि से पहिने कहि देब नीक हएत। पछाइत अपने सावित्री किए ने विचार करती जे अपन अनुकूल रस्ता की हएत। जँ विचारानुकूल माने हमरा विचारक अनुकूल रस्ता पकैड़ आगू बढ़ती तँ पाछूसँ जहाँ धरि बनि सकत तहाँ धरि संग पूरैत रहबैन, जँ से नहि करती तँ अपन काज छिऐन, नीक होनि कि अधला होनि अपना सिरे जवाबदेही हेतैन। कियो एहनो बजनिहार तँ नहियेँ ने रहता जे बजता- ‘फल्लाँक विचार मानि काज केलौं तँए डुमि रहल छी वा डुमि गेलौं.!’ ऐठाम अबैत-अबैत देवनक मन निश्चल जकाँ ठाढ़ भऽ गेलैन। तैबीच सावित्री बजली-

“पार-घाट केना लगत से तँ अपने दुनू गोरे ने विचारि कऽ विचार देब। अपने दुनू गोरे जे विचार देब तेकरा आँखि मुइन मानैले हम तैयार छी।”

सावित्रीक ठौरक बात सुनि देवनक मन आशान्वित भेलैन मुदा बीचमे विचारचनकेँ देखि विचार उठलैन जे विचारचनक की विचार छैन से तँ विचारचने ने बजता। तँए अपन नजैर उठा देवन विचारचनक मुँहक बात सुनए चाहला। विचारचनक मन मानि रहल छेलैन जे जहिना कोनो पहाड़सँ निकलल नदी (धार) पहाड़मे जड़ि रोपि आगू बढ़ैत धारा बनि समुद्रमे मिलैए, भलेँ बीचमे किए ने अनेको रंगक धाराक प्रवाह अपन रूप बदलैत मिलैत-जुलैत संग-संग आगू बढ़ल होइ, तहिना ने देवन भाय छैथ। हम दुनू गोरे नवतुरिया छी, जीवनक अनुभव परिपक्व नहि अछि, मुदा देवन भाय तँ से नहि छैथ। देवन भाय तँ ओहन लोक छैथ जे जहिना सइयो बीघाक आमक गाछी किए ने हुअए मुदा तैबीच जँ एकोटा बेलक गाछ रहत तँ ओ अपन डारि-पातक संग फूलो-फल फड़बे करत जे

कौआकेँ के कहए, बनचरो नहि पेब सकैए। तहिना ने माने बेले जकाँ ने देवनो भाय छैथ, जे साफ-साफ बजैत रहल छैथ जे ने हमरा केकरो मलिकाना करैक सख-सेहन्ता अछि आ ने कोनो मालिको-मलिकान अछि। जहिना भगवान मालिक सभक छैथ तहिना ने अपनो भगवान अपन मालिक छथिए। ..विचारचन बजला- “भाय सहाएब, गियानचन हमर संगी छेला, जे आब परोछ भऽ गेला, सोझहामे पत्नी (सावित्री) छैथ। सावित्री नवतुरिया छैथ। अपनो नवतुरिये छी। जीवनक तीत-मीठक सुआद अखन नीक जकाँ हम सभ थोड़े बुझि पेलौं अछि। मुदा अपने तँ से नहि छी। अपनेक ऊपर दोस्तीनी अर्पित छैथ, जेना पार-घाट लगबिऐन।”

विचारचनक विचारकेँ रस्तापर देखि देवन अपन जीवनानुभवकेँ अगुअबैत बजला-

“विचारचन आइ गियानचनक मृत्युक दसम् दिन छी। तेरहा श्राद्ध-कर्मक हिसाबसँ नह-केशक कर्म शुरू हएत।”

देवनक मुहसँ काजक विचार सुनि विचारचन बजला-

“तहीक विचार करैले ने अपनेकेँ ऐठाम आनल गेल अछि।”

विचारचनक समर्थित विचार सुनि सावित्रीक मनक गाछमे सवुरक फूल फुलेलैन। जइसँ मन हरखियेलैन मुदा बजली किछु ने। विचारचन बजला-

“हँ से तँ हेबे करत।”

जीवनक अनुभवी देवनक मनमे एक संग अनेको प्रश्न उठि गेलैन। उठलैन ई जे सावित्री अखन विपत्तिमे फँसल छैथ, तँए ऐसँ हुनका उवारब अपन मानवीय दायित्व बनैए। मुदा दायित्वपूर्तिक रस्तो तँ सोझ नहियेँ अछि। समाजो तँ समाज छी जे अनेको जाति-सम्प्रदायमे बँटल अछिए। जँ गामे-गाम बँटाएल जाति-सम्प्रदाय रहैत तँ एक-दोसरकेँ चिन्हैमे असान होइत। किए तँ सभ अपन-अपन विचार समाजक धरतीपर राखि मानव कल्याण करैत। मुदा से तँ अछि नहि। एक्के गाम-समाजमे अनेको गामो-समाज आ अनेको जातियो-सम्प्रदाय तेना समाएल अछि जे एक-जातिक

कोन बात जे जाइतिक बीच एक परिवारमे तीन-तीन चारि-चारि सम्प्रदाय अछि, जे तीन-तीन-चारि-चारि जीवनयात्राक सगुन-असगुनक विचारधारामे बहि रहल अछि। एक सम्प्रदाय श्राद्ध-कर्मक नह-केश कटबैकेँ सगुन मानै छैथ तँ दोसर असगुन। तँए दसम दिन माने नह-केश दिनक बेवहार बहुरंगी भइये गेल अछि। नवका तूरक युवकमे तेसरे विचार पनैप रहल अछि, हुनक मुंडा माथ (माने केश कटौल माथ) असगुन जकाँ लगैए। तँए कहब जे ओहन सम्प्रदाय नहि अछि जेकर माननिहार सभ दिन दाढ़ी-केश नहि कटबै छैथ, सेहो छथिए। आब कहू जे केश-दाढ़ी-नहक कट्टा-कट्टीमे जँ सभ अखन तक माने भावनाक विचारसँ लगल रहब तखन चन्द्रमा ग्रहपर पहुँच बसि केना सकब। जे चन्द्रमा घरक पत्नीक मुहमे समाएल अछि तेकरा बिसैर कऽ उसारब नान्हिटा बात छी। विचारक दुनियाँमे वौआइत देवनक मन आगूमे बैसल सावित्रीपर गेलैन। सावित्रीक बगलमे बैसल रघुनाथक माथ देखि देवनक विचारमे मोड़ एलैन। बजला-

“बच्चोक सम्बन्धमे गियानचन किछु कहि गेल छैथ?”

रघुनाथक नाओं सुनिते विचारचन चौंकैत बजला- “बड़ सुनर विचार भाय साहैब अहाँक अछि। आइये ने पिता-पुत्रक बीच जीवनक हिसाब-बारी हएत, जे किनका ले किनकर की दायित्व छेलैन आ केते पूर्ति भेलैन आ केते बाँकी रहलैन।”

विचारचनक विचार सुनि देवनक मनमे उठलैन जे आजुक जे समय अछि ओकरा पानि जकाँ बहाएब उचित नहि। मृत्युक पछातिक अनेको कर्मेक शुरूआतो आ बिसरजन सेहो आइ हेबे करत। तँए किए ने आजुक जे प्रमुख कर्म सभ अछि ओकर चर्च शुरू करी। देवन बजला-

“विचारचन, आइ की सभ काज अछि?”

विचारचन बजला-

“भाय सहाएब, आइये ने घाटपर खोपड़ी सेहो बनत।”

कहब जे विचारचन अपन पल्ला झाड़ि बजला, से बात नहि अछि, बुझले एतबे छेलैन।

खोपड़ीक चर्च सुनि देवनक मनमे अपने ठहकलैन, मुदा आजुक जे काजक दौड़ अछि तइमे काज छोड़ि दोसर दिस समय लगाएब काजकेँ दुइर करैक कारण हएत। मुदा मनक वेग मानियेँ ने रहल छेलैन। वेग ई उठल छेलैन जे जीवनक दू घाटपर खोपड़ी बनबैक चलैन अछि। ओना, जँ रहैक घरोकेँ खोपड़ी मानि ली तँ तीन घाट भेल। एक घाट भेल विवाहक अवसरपर वा किछु विशेषमे उपनयनक अवसरपर, दोसर घाट भेल मृत्यु भेलाक पछाइत पोखरिक घाटपर।

एक घाट ओहन अछि जैठाम एक जीवित जीवनक परिवार बनाएब अछि तँ दोसर घाट ओहन सेहो अछिए जे मृत्युक पछाति कल्पित रूपमे जीवन गढ़ि घाटपर खोपड़ी बनाएब सेहो अछिए। कल्पित जीवनक विचित्रो आ विशालो रूप देखि देवनक विचारक वेग जेना धड़ैक उठलैन तहिना बजला- “अपन की विचार अछि?”

अखन तक सावित्री मने-मन रघुनाथेक विषयमे सोचि रहल छेली जे अहीले माने विद्यालयमे प्रवेश करैले दुनू परानीक बीच कहा-कही भेल। ओ कहै छला पाँच बर्ख पुरला पछाइत रघुनाथकेँ विद्यालयमे प्रवेश दियाएब आ अपने ओकर कद-काठी देखि साढ़े चारिये बर्खक उम्रमे विद्यालयमे प्रवेश करबए चाहै छेलौं। तइ बीच छह मासक जे समय बीतल तइमे कोनो धौजैन बाँकी नहियेँ रहल अछि, अन्तो-अन्त पतियो मरिये गेला। रघुनाथकेँ पालनापर झुलाएब मानि पालैक भार तँ अपने ऊपर ने सोल्होअना आबि गेल अछि। अखन तँ दू जीवनक बीच ठाढ़ छी, माने एक दिस पतिक मृत्युक पछातिक श्राद्ध-कर्मक नह-केश कटबैक अछि तँ दोसर दिस बच्चाकेँ माने बेटाकेँ विचारशील जीवन गढ़ैले विद्यालयमे प्रवेश कराएब सेहो अछि। छह मास धरिक समयक जे मतभेद दुनू परानीक बीच भेल छल, ओहो पूरि गेल। ओना, रघुनाथक जीवन सावित्रीक मनमे गौण पड़ि गेल छैन, किए तँ पतिक मृत्युक पछातिक जे क्रिया-कर्म छैन ओकर धरित धारक बेग अछि ओ प्रवल भऽ गेल छैन। ओना, कोनो धारक धारा तखन बेसी गतिशीलो रहैए जखन धारक पानि चलायमान रहैए। मुदा जखन ओ मौसमक अनुकूल सुखए वा घटए लगैए तखन ओ निष्क्रिय-

निर्बल सेहो बनियेँ जाइए।

असमंजसमे पड़ल सावित्री बजली-

“हिनका सभक, जे आदेश भेटत तही अनुकूल ने अपनो चलब अछि।”

सावित्रीक विचार सुनि देवनक मनमे विचित्र द्वन्द्व उठिकऽ ठाढ़ भऽ गेलैन। ठाढ़ होइक कारण भेलैन श्राद्ध-कर्मक सम्बन्धमे सावित्रीकेँ की बुझल छैन आ विचारचनकेँ की बुझल छैन आ अपने की बुझि रहल छी, बिना तीनूकेँ एकठाम सामंजस केने मुँह-मिलानी केना हएत। विचारक जँ मुँह-मिलानीए नहि हएत तखन ओ विचार चलत केते दिन। अपन मनक विचारकेँ दबैत देवन बजला-

“विचारचन, दोस्तीनीक विचार तँ सुनबे केलहुन, तँए तोहीं ने कोनो रस्ता बनेबह?”

देवनक बात सुनि विचारचनक मनमे जेना उड़ी-बिड़ी लगि गेलैन। उड़ी-बिड़ी लगैक कारण भेलैन जे एक दिस दोस्तीनीक भार अपना ऊपर नेने छला आ दोसर दिस देवनक विचार सुनि समाजोक भार ऊपर आबि रहल छेलैन। संयोग बनल, विचारचनक मन आगू बढ़ि गेलैन। आगू बढ़िते जहिना आम वा कोनो फलक गाछपर चढ़ला पछाइत जेते फल नजैरपर चढ़ैए माने देखि पड़ैए तेते धरतीपर ठाढ़ रहलापर नहियेँ ने देखि पड़ैए। विचारचन अपन विचार व्यक्त करैत बजला-

“भाय साहैब, अपनेक नापल-तौलल विचारक आगू हमर विचार कोनो महत राखत।”

ओना, देवनक मनमे उठलैन जे विचारचन अपन पल्ला झाड़ि निकलए चाहैए, मुदा लगले अपने मन गवाही देलकैन जे पल्ला तँ ओ झाड़ि निकलए चाहैए जे काजसँ जुड़ल नहि रहल रहैए मुदा जे काजसँ जुड़ल काजक बीच रहत ओ पल्ला झाड़ि निकैल केना सकैए। अपने मनमे देवनकेँ उठलैन जे समाज तँ ओहन समाज बनि गेल अछि जेकर लाढ़ि-पुरैन सभ सुखि गेल अछि, तैठाम केहेन बच्चा जन्म लेत? तरे-तर देवनक

मन तेना उफनैत रहैन जे होनि हमहूँ किए ने ओइ तितिर जकाँ बमन करी जइसँ तैतरीय उपनिषद् गढ़ा गेल। मुदा लगले अपने मन कहलकैन जे अखन तक जे सामाजिक धारा बहि रहल अछि, ओकरा ने तोड़ब असान अछि आ ने राखिकऽ जोगब नीक अछि। हम सभ एकैसमी सदीमे जीब रहल छी। आब जँ श्राद्ध-कर्मसँ स्वर्ग-नर्क पठबैक बात बुझब तखन अनेरे किए ग्रह-सभपर भ्रमण करैबला यंत्रक निर्माण करै छी। साले-साल मातृनवमी-पितृपक्षक भोज तँ साले-साल बर्खीक भोजक संग श्राद्धक भोजो आ पूजो-पुजाएब तँ पोखरिक घाटसँ गाय घाट धरि माने माल-जालक घर तक उन्नैसमासी कर्म पुजौलो जाइते अछि। श्राद्धकर्म, तेरहा वा अर्द्धमासी वा मासी कर्मक अनेको रंगक विधान सेहो अछिए।

मने-मन देवन जेते विचारैथ तेते मन प्रीतसँ बेप्रीत (विपरीत) आ बेप्रीतसँ प्रीत दिस दौड़-बरहा करए लगलैन। जइसँ उत्तेजित होइत देवन बजला-

“कनियाँ, अहाँकेँ जे मन मानए सहए हमहूँ मानि अहाँक पीठपर तैयार हब। सएह ने?”

मुस्कुराइत सावित्री बजली-

“सएह ने ते आरो की.!”

अपन मजबूरी देखबैत विचारचन बजला-

“लोक की हमरा कोनो गंजन छोड़ि देने अछि। मुदा करब की।”

❑

शब्द संख्या: 3139, तिथि: 29 अप्रैल 2021

आठम पड़ाव

गियानचनकेँ मुइना आइ पहिल मास लगि गेलैन। औझुके अमावसिया दिन गियानचन मरल रहैथ।

सावित्री ओछाइनपर सँ उठलो ने छेली कि बौकी दादी आबि कहलकैन-

“कनियाँ, पहिल छाया गियानचन-बच्चाक आइये हएत।”

अपना मने बौकी दादी बाजि रहल छेली मुदा सावित्री ‘हँ-हूँ’ किछु ने बाजि रहल छेली। बौकी दादी बजन्ता लोक छथिए। किछु पुछियौन वा नहि पुछियौन, मुदा अपनो मने किछु-ने-किछु उपकैरकऽ कहबे करती। ओना, कोनो-कोनो विचार जीवनोपयोगी सेहो होइ छैन मुदा सतरंगा साग जकाँ, गेनहारी कि पटुआ जकाँ नहि, पटुआ सागक माने बैशखा पटुआ जेकरा कुजरबा पटुआ सेहो कहै छिऐ। की नीक की अधलाकेँ बेराएब कठिन भइये जाइए, तहिना बौकी दादीक विचार ओही सतरंगा साग जकाँ सभ मानि रहल छैन। अपन विचारकेँ समापन करैत बौकी दादी, जहिना अपने मने सावित्रीकेँ कहए आएल छेलखिन तहिना अपने मने पुन: वापस सेहो भऽ गेली।

ओछाइनपर पड़ल सावित्री मने-मन विचारए लगली जे जखन देवनो भैया आ विचारचनो बेर पड़लापर ठाढ़ भेला तखन बिना हुनकासँ राय-विचार नेने किछु करब अपना-ले उचित नहि हएत। जहिया अपन जीवनक होश सम्हारि लेब तहिया भलेँ जे हुअए मुदा अखन बिना हुनका पुछने किछु ने करब। ओना, बौकी दादीक विचारक धक्का सावित्रीक मनमे लगले छेलैन तँए मनमे ईहो होनि जे अखने जँ देवन भैयाकेँ पुछि

लइतियैन तँ दिन भरिक चैन मनमे रहैत। जहिना क्षणे-क्षण, पले-पलसँ मिनट, घन्टा आ दिन-राति बनैए तहिना क्षण-क्षणक चैन जिनगीकेँ चैन बनबैए। फेर सावित्रीकेँ अपने मनमे भेलैन जे अखन ओछाइनसँ उठैक बेर छी सभकेँ अपन-अपन भोरक कर्म छैन, तैठाम अनेरे नान्हिटा विचार-ले देवन भैयाकेँ बाधक बनियैन से उचित नहि। अपनो भोरक नित्यकर्म अछि तइ सभसँ निवृत्ति भेला पछाइत देवन भैया-ऐठाम जा सभ किछु पुछबैन।

ओना, सावित्रीक मनमे ईहो उठलैन जे श्राद्ध-कर्म भेला आइ सत्तरहे दिन छी, तखन फेर कोन नवका कर्म आबि गेल जे बौकी दादी कहली.! सावित्री थोड़े बुझै छैथ जे यएह छाया ओहन रूप पकैड़ लेत जे जीवन्त जीवनसँ टपि मरन्त जीवन गढ़ि जिनगीक आगूमे तेना ठाढ़ भऽ जाएत जे जीवन्त मरन्त भऽ जाएत आ मरन्त जीवन्त भऽ जाएत। नित्यकर्मकेँ सम्हारि सावित्री देवन ऐठाम विदा भेली। रस्तामे विचारचनक घर सेहो पड़ैत रहैन तँए विचारचनोसँ भेँट करब सावित्री नीक बुझलैन। विचारचन दरबज्जेपर रहैथ, सावित्रीकेँ देखिते बजला-

"दोस्तीनी, भोरे-भोर किमहर-किमहर यात्रा भेल अछि?"

गियानचनक जीवित समयमे सावित्री विचारचनक धाख (लाज) करै छेली, तइमे निधोखपन आबिये गेल छैन। मुँहपर बिना साड़ी नेनहि सावित्री बजली-

"दोस, बौकी दादी भोरे-भोर एकटा समाद बाँटि गेली, सएह बुझै-विचारैले देवन भैया ऐठाम जा रहल छी। अहूँ चलू।"

'हँ-हूँ' बिना किछु बजने, विचारचन सावित्रीक संग पकैड़ लेलैन।

देवन चाह-पान खा-पीब अपन खेत दिस विदा होइपर छला कि दुनू गोरेकेँ माने विचारचनो आ सावित्रीयोकेँ देखि दरबज्जाक चौकीपर बैस गेला। दुनू गोरेकेँ दरबज्जाक ओसारपर चढ़िते हाथक इशारासँ चौकीएपर बइसैले कहलैन। विचारचन रस्तामे ई सोचि सावित्रीकेँ दोहराकऽ नहि पुछलैन जे जखन देवन भाय लग विचारक काट-छाँट हेबे करत तखन तँ सुनबे करब। तइले अनेरे दोहराकऽ किए किछु पुछियौन। एहनो तँ सम्भव

भइये सकैए जे दुनू गोरेक विचारमे किछु अन्तर आबि जाए। तखन जँ पछाइत अपन विचार बदलए पड़त तँ संस्कार चोटेबे करत किने। जखने संस्कार चोटाएत तखने ने कर्कशपनक जन्म हएत। अनेरे मनमे कर्कशपनकेँ पनपए देब उचित नहि। तइसँ बहुत नीक ने ई हएत जे तीनू गोरे मिलि विचारक सभ पक्षपर विचार करी। जेते विचार-मथन करब तेते ने मिथि मालिनि बनब।

चौकीपर विचारचन आ सावित्रीकेँ बैसते देवन बजला-

“बौआ विचार, अखने अपने चाह पीब पान खा खेत दिस विदा होइपर छेलौं कि बीचमे तोरा दुनू गोरेकेँ देखि रूकि गेलौं। भोरुका समय छी तँए पहिने चाह पीब लएह। पछाइत गप-सप्प हेतइ।”

देवनक चाहक आग्रह सुनि विचारचनक मनमे पहिने उठलैन जे कहि दिऐन जे चाह पीब नेने छी, मुदा अपने मन रोकलकैन जे दू गोरेमे अपनेटा भार ने मेटाएल अछि आ जँ कोनो कारणेँ सावित्री चाह नहि पीने होथि, तखन बीचमे हुनकर हत्यारा बनब उचित हएत। तँए विचारचन चुपे रहब नीक बुझलैन। ओना, सावित्रीमे निधोखपन जगि रहल छैन, मुदा सोल्होअना नहि जगने बेवहारमे केतौ-केतौ बाधा भइये रहल छैन। जइसँ सावित्री सेहो किछु ने बजली।

दुनू गोरेकेँ चुप देखि देवनक मनमे भेलैन जे भरिसक किछु खास बात भेल अछि तँए ओइसँ मर्माहत भऽ बिनु चाह पीने दुनू गोरे आबि गेल, तँए नीक हएत जे पहिने गिलास भरि-भरि पानि आ गिलासे-गिलास चाह पीआ मन शान्त करब नीक हएत। पछाइत गप-सप्प हएत।

दोहराकऽ देवन चाहक आग्रह बिनु केनहि, पत्नीकेँ जोरसँ कहलैन-

“लोटामे पानि आ गिलास दअ जाउ, जाबे पानि पीएबैन ताबे चाहो भइये जाएत।”

सावित्री विचारचन दिस तकैत बजली- “भैया, चाह पीब नेने छी।”

सावित्रीक विचार सुनि विचारचनक मनमे भेलैन जे पहिने किए ने

कहि देलिऐन जे चाह पीबियेकऽ आएल छी। मुदा अखनो कि बेर थोड़े उनैह गेल अछि जे दोहराकऽ बजैक समय बीत गेल। विचारचन बजला-

"भाय साहैब, अहूँ पुरने लोक सभ दिन रहि गेलौं। अपना सभक बेवहारमे अछि जे सुति उठि अपन नित्यकर्मसँ निवृत्ति भेला पछाइत चाह पीब। मुदा अखन समय तेते अगुआ गेल अछि जे बिनु चाह पीने ओछाइनपर सँ उठबो भारी भइये गेल अछि, तँए अपनो ने ओहने बनि गेल छी जे भोरुका अहार मुँहमे लेला पछातिये ने दरबज्जापर सँ केतौ आगू बढ़ै छी। चाह पीब नेने छी, दोहराकऽ नहि पीब। गैसक शिकायत भेल जा रहल अछि।"

विचारचनक विचारकेँ बिना किछु काट-छाँट केने देवन बजला-

"भोरे-भोर दुनू गोरेकेँ देखै छी, किछु विशेष बात विचारचन?"

अपन नाम सुनिते विचारचन चौंकला। चौंकैक कारण भेलैन जे अखन तँ अपने पमरियाक पलङाइ जकाँ छी, जे किछु समस्या सावित्रीकेँ छैन से ओ ने मुँह खोलि कहली आ ने अपने दोहराकऽ पुछलयैन। तैबीच अपने की बाजब? मुदा चुप्पो रहब उचित नहियेँ हएत। जँ अपन चाँकि सावित्रीकेँ नहि देखैबैन तँ हुनका मनमे एहनो तँ शंका जागिये सकै छैन जे बौकी दादीक संवाद कहलयैन आ ओ कान-बात नहि देलैन। सावित्रीकेँ चरियबैत विचारचन बजला-

"एते दिन अहाँकेँ पराया घरक बुझै छेलौं, मुदा आब से नहि, आब हम सभ भाए-बहिन जकाँ अपनाकेँ मानि अपन ऐगला जिनगी दिस संग मिलि चलैक बाट पकड़ी। तँए हीय खोलि भाय साहैबकँ सभ बात कहियौन।"

पुरुष-नारी बीचक जे सम्बन्धक रूप अछि ओ दोहरी रूपमे अछि, एक शारीरिक दोसर मानसिक। मानसिक रूपमे जखन दुनूक बीच सम्बन्ध हएत तखन मनुष्य जीवनक कमल फूल फुलाएत...।

अखन तक सावित्रीक मनक जे एकटा विराट रूप मनमे छिपल छेलैन से जेना जगलैन। सावित्री बजली- "भैया, हिनका आगू जखन

अपन जीवन सौंपि देलिऐन तखन जेना राखैथ।”

सावित्रीक विचार सुनि देवनक मनमे चनाक-दे उठलैन। चनाक-दे उठैक कारण भेलैन जे अपने मन धिरकारि-धिरकारि कहए लगलैन जे अपन भार अपना बुते सम्हारले ने होइए आ दुनियाँक भार उठबैक भरिया बनै छी.! मुदा लगले अपने महियाएल मन सौनक धनघोर घटा जकाँ लटकलैन। लटैकते मने-मन सौनक बर्खाक बून जकाँ झिहिर-झिहिर झहरए लगलैन। धरतीपर मनुक्खसँ समर्थवान दुनियाँक कोन सृजन शक्ति अछि, तैठाम जँ मनुक्खे अपनाकेँ निर्बल बना लैथ तखन मनुक्खक जे प्रवल शक्ति अछि, ओ की हएत। ओ शक्ति एहेन शक्ति अछि जे अपन बेड़ा पार करैत दोसरोक बेड़ाकेँ पार लगाइये सकैए। ओ शक्ति छी समयकेँ परेख, वर्त्तमानक संग होइत भविस दिस डेग उठाएब...। मुस्कुराइत देवन सावित्रीकेँ कहलैन-

“अखन तक अहाँकेँ सामाजिक सम्बन्धक कारणेँ दोसर रूपमे देखि रहल छेलौं, मुदा गियानचनकेँ परोछ भेने माने मुइने, विचारक भूमि बदैल गेल। अहाँ-मुँहक बात जे ‘अपन जीवन सौंपि माने समर्पित कऽ देलिऐन’, मनमे हिलकोर उठा देलक अछि।”

देवनक मुहसँ ‘हिलकोर’ सुनि विचारचनक मन सेहो हिलकिरेलैन। हिलकिराइते बजला-

“भाय साहैब, समाजो तँ समाजे छी। चारि पैरबला जानवर जकाँ कखन मुँह आगू रहैए आ कखन पाछू भऽ जाइए से बुझबे ने करै छी।”

अपना जनैत विचारचन अपन सामाजिक जीवनक बात बजला मुदा सावित्रीकेँ भेलैन जे हमरा ठिकियाकऽ विचारचन बजला अछि। फेर अपने मन रोकलकैन जे किए ने विचारचनेसँ अपन मनक विचार बोकरा नीक जकाँ बुझि ली। ..सावित्री बजली-

“से केना दोस?”

ओना, देवनक मनमे होनि जे अनेरे जे दोसर दिस गप-सप्पमे बढ़ि जाएब तखन अपन काजक गप (विचार) पाछू पड़ि जाएत। जखने

काजक गप पाछू पड़त तखने झूठ-फूसक गप आगू बढ़िये जाएत। जइसँ गप-सप्पक दुनियाँमे वौआ जाएब। तइसँ समयक संग अपनो जीवन झुठियेबे-फुसियेबे करत। तँए नीक हएत जे दुनू गोरे–विचारचन आ सावित्री–क बीचमे जे बुझैक फेड़ भेने मनक विचारमे मोड़ आबि रहल छैन तेकरा सोझड़ा दिऐन। मुदा लगले अपने मन कहलकैन जे नीक हएत जे पहिने विचारचने अपना मुहसँ सोझरा लिअए। तँए देवन चुपे रहब नीक बुझलैन।

ओना, सावित्रीक प्रश्न सुनिते विचारचनक मन उत्तर दइले कछमछाए लगलैन मुदा आँखि उठा जखन देवन दिस तकला तँ बुझि पड़लैन जे देवन भाय किछु विचार मने-मन कऽ रहला अछि तँए पहिने हुनकर विचार सुनि अपन विचार सावित्रीकेँ कहबैन। मुदा से भेलैन नहि, देवन अपन मनक विचार मनेमे घोंटि मने-मन पीब गेला। सावित्री दिस मुँह घुमा विचारचन बजैक विचार केलैन कि अपने मन रोकि देलकैन, जे नीक हएत देवन भाय दिस मुँह घुमाकऽ बाजी। विचारचन बजला-

“भाय सहाएब, अपने बुझी वा नहि बुझी मुदा दुनियाँ-मुहेँ, माने दुनियाँक लोकक मुहेँ सुनिते छी जे जहिना बच्चाक सेवा धर्म छी तहिना विधवा-सेवा सेहो धर्म छी। गाँधीजी सेहो विधवा आश्रम बनौनहि रहैथ। जइ माध्यमसँ विधवाक सेवा-धर्म निमाहलैन। मुदा विधवाक मुँह देखि जखन केतौ यात्रा करै छी तखनेसँ मनमे हन-हन—पट-पट उठि जाइए जे विधवाक मुँह देखि विदा भेलौं, अपसगुन हेबे करत।”

विचारमे वौआइत विचारचनक विचारकेँ देवन गम्भीरतासँ लेलैन मुदा गम्भीरताकेँ गहींर दिस नहि लऽ जा ऊपरेक तलहत्थीपर रखि देवन बजला-

“विचारचन, अखन जे समस्या आगूमे अछि, पहिने तैपर विचार करब बेसी नीक हएत। अनेरे समाजक विचार उठा अपन विचारकेँ दाबि ली, सेहो नीक नहियेँ हएत।”

सावित्रीकेँ चरियबैत विचारचन बजला- “भाय सहाएब, गियानचन

बच्चेसँ संगी छेला, अहूँ सभ दिन देखिते आबि रहल छी, मरि गेला। शरीर तँ रोग-व्याधिक घरे छी, जइक चलैत गियानचन दोस मरि गेला। दूटा बच्चाक संग दोस्तीनी छैथ, तँए हुनका पौरुषवल तँ चाहबे करिऐन किने?"

विचारचनक बात सुनि देवनक मनमे उठलैन जे जहिना विचारचन बच्चा अछि तहिना सावित्री सेहो अछि। तँए ई विचार देब समयोचित नहियेँ हएत जे दुनू गोरेकेँ कहि दिऐन जे पौरुषवल केतौ बाहर नहि अछि ओ अछि अपना मनमे। लिंग भेद ऊपरी बात छी, मुदा लगले देवनकेँ अपने मन कहलकैन जे किए ने सावित्री अपने मुहसँ जे बजती तही अनुकूल रस्ता देखा दिऐन। भेल तँ एतबे ने जे जीवन-ले की अनुकूल अछि आ कि प्रतिकूल..! देवन बजला-

"एते दिन जे अहाँकेँ बुझै छेलौं ओ रूपो आ सम्बन्धो अलग छल, मुदा जखन अपन जीवन सौंपैक बात बजलौं अछि तखनसँ बेटी तुल्य अहाँकेँ बुझए लगलौं। जहिना परिवारमे बेटी, माता-पिताक ऊपर पूर्ण आश्रित रहैए आ मातो-पिता जहिना भक्त भगवानक बीच अभक्त सम्बन्ध बनल रहैए तहिना ने सेवो करै छैथ।"

देवनक विचार सुनि जहिना विचारचनक मन तहिना सावित्रीक मन पसीज गेलैन। जइसँ चेहराक रंग धीरे-धीरे बदलए लगलैन। जहिना सावित्रीक मनमे होनि जे कोनो अमूल्य वस्तु भेट गेल अछि तहिना विचारचनोक मनमे होइत रहैन। हेबो केना ने करितैन। अखन तकक जीवनमे जहिना सावित्री परिवारक बीच समटाएल छेली तहिना विचारचनो परिवारेक बीच समटाएल छला, मुदा आइ परिवारसँ आगू बढ़ि, माने परिवारसँ ऊपर उठि अपनाकेँ सामाजिक रूपमे देखए लगला। समाजे ने समुद्र छी। जइमे घोंघा-सितुआसँ लऽ कऽ शंखो-महाशंख आ नगियाएल विषसँ महा अमृत (महामृत) धरि सेहो बास करिते अछि। जहिक बाँट-बखरा ले ने ओकर मथन (समुद्र मथन) होइए। से कोनो एक्केबेर भेल आकि आब नइ हएत सेहो बात नहियेँ अछि। अनेको बेर भेलो अछि आ जाबे जीवनक बीच दूजा-भाव रहत ताबे तक होइतो रहत..। विचारचन

बजला-

“भाय सहाएब, समुद्र मथनक बात जाए दियौ। जानए जऽ आ जानए जत्ता। अनेरे जे मेघक तरेगन गनए लगब तइसँ अपन तरेगन थोड़े गनाएत। ओ तँ गनाएत अपन मेघ बनौने।”

विचारचनक विचार सुनि देवनक मनमे भेलैन जे जइ विचारचनकेँ बाल-बोध बुझै छी ओ बाल-बोधसँ आगू बढ़ि सचेष्ट बोध जकाँ अछि, तँए नीक हएत जे जहिना कोनो देशक शासन एकठाम केन्द्रित भऽ जन-जन तक संचालित करैए आ जन-जनक जीवन केन्द्रित भऽ संचालित करैक हक सेहो रखिते छैथ। ..देवन बजला-

“विचारचन, तीनू गोरे तीन परिवार ने एकठाम माने एक विचारधारामे बहए चाहै छी, तैठाम धारामे प्रवेश करैसँ पहिने अपन धार ने बना लेब।”

देवनक विचार जहिना विचारचन अदहे-छिदहे बुझलैन तहिना सावित्री सेहो तेतबए बुझलैन। मुदा जैठाम तीन गोरे बैस गप-सप्प करै छी, तैठाम तीनू गोरे विचार-विमर्श करैत चलब तखने धार बनत, जे एकठाम मिलि-मिलि धारा बनबैत चलत। तइले ते जखन सभकेँ मुँह खोलबैत चलब तखने ने से हएत। राजनीति क्षेत्रमे देखिते छी जे पार्टीक माने राजनीतिक दलक, विचारधारे हेरा गेल अछि, के की करए चाहैए, सएह बेठेकान भऽ गेल अछि..। सावित्री बजली-

“भैया, भोरे-भोर एकटा खटुका मनमे लगि गेल तँए हिनकासँ पुछए एलियैन हेन। बौकी दादी भोरे-भोर आँगनमे कार-कौआ जकाँ टाँहि दऽ गेली जे फल्लाँक माने गियानचनक पहिल छायाक दिन छी।”

सावित्रीक बात सुनि देवन गम्भीर भऽ गेला। गम्भीर होइक कारण भेलैन जे समाजमे सावित्री सन परिवारक की गति अछि ओ आगूमे नाचि उठलैन। रंग-बिरंगक अन्धविश्वासक बीच समाज चलि रहल अछि, तइपर रंग-बिरंगक रंग-रौगनक पोचारा सेहो दिन-राति पड़िये रहल अछि, तैठाम सावित्री सन परिवारकेँ एकैसमी सदीक परिवार जकाँ ठाढ़ करब ओते

असान अछि। तहूमे वैचारिक दौड़ एहेन सघन अछि जे सोझे-सोझी देखबै जे जे लंकामे बड़ छोट ओ उनचास हाथ। मनमे अनेरे ने उठत जे अपन लम्बाइ-चौड़ाइ तँ साढ़े तीन हाथक भीतरे अछि तैठाम पैतालीस हाथ नमहरक समकश केना करब। आन जे अछि से पैतालीस हाथसँ बेसीए अछि, माने उनचास हाथमे जँ अपन साढ़े तीन हाथ कमा दइ छी तखन। सावित्रीक विचारकेँ आगू मुहेँ ठेलैत देवन बजला-

“विचारचन, दोस्त होइक नाते तोरा गियानचनक पारिवारक लोक मानै छिअ, तँए पहिने तूँ दुनू गोरे विचारि एक पथक पथिक बनह। जखने पथक पथिक बनि पथपर पएर रोपि पगे-पग चलए लगबह तखने पथ प्रदर्शक बनि विचारधाराक आगू-आगू चलए लगबह।”

देवनक बात बुझैमे दुनू गोरेकेँ डेढ़-बार भऽ गेलैन। डेढ़-बारक माने भेल जे कोनो शब्दक माने विचारचन किछु बुझलैन आ सावित्री किछु बुझलैन, तँए जेते सोझ-सपाट रस्ताक खगता दुनू गोरेकेँ छैन तइमे कने-कने दूरी बनि गेलैन। जइसँ दुनूक मनमे जे विद्पन एबा चाही से नहि एलैन जइसँ मन अकछए लगलैन। छह माससँ धौजैन भेल सावित्रीक जीवन जेना मोड़ मंगैत हुअए तहिना मनमे भेलैन। समुद्रक कातमे ठाढ़ भेल दर्शककेँ जहिना चारू दिस पानियेँ-पानि देखि पड़ैत तहिना सावित्रीकेँ आगूमे पानिसँ उठल बासपनक अन्हपनसँ अन्हारे-अन्हार देखि पड़ए लगलैन। मुदा अपन जिनगीकेँ विचारक बेवहारमे बान्हि बजली-

“भैया, अखन तक हिनका भाइये भैयारीक अनुकूल जेठ भाय बुझै छिऐन मुदा ततबे नहि बुझौथ, पितो आ गुरु तुल्य सेहो बुझै छिऐन। तँए हमरा सन गरूक की उपाय हएत से रास्ता धरा दौथ।”

सावित्रीक बात सुनि देवनक मन अंशुबनमे वौआ गेलैन। अपन साठि बर्खक साधल जीवन अछि, तखन दिन-दिन एहेन हवा-बिहाड़ि उठैए जे सभ किछु गर्दा-बौलसँ तोपा जाइए, तैठाम भलेँ दिवरलग्गु च्यवन ऋषि जकाँ किए ने च्यवनप्राशक सृजन करी, मुदा परिवेशक अनुकूल जीवन बनाएब केकरो ले ओते असान अछि जे चुटकी बजा देबै आ छू-मन्तर भऽ

जाएत। ..निरविकार होइत देवन बजला-

"ने एकटा काजे जीवन अछि आ ने एक्के दिन जीवनक काज अछि, तँए अखन जइ काजे आएल छी, से पहिने बाजू।"

बौकी दादीकेँ अगुअबैत सावित्री बजली-

"बौकी दादी भोरे-भोर कहि गेली जे आइये फल्लाँक माने रघुनाथक पिताक पहिल छाया छिऐन।"

बेबाक होइत देवन बजला-

"अपन जे मन मानए से करू। बेकतीगत रूपमे गामक सभ जनिते छैथ जे देवनक परिवार कबीर मतानुकूल आइ तीन पुस्तसँ चलि आबि रहल अछि, तँए समाजक बीच भलेँ एकधारा परिवार किए ने हुअए, मुदा कल्याण तँ ओहीसँ होइए। अखन भरि दिन समय अछि जे मन मानए से करब। साँझू पहरक चाह-जलखैक हकार हमरा दिससँ रहल, तीनू गोरे एकरस सँ एक मुँह बना विचारि चलब। पाछू बुझल जेतइ। जहिया जे हेबाक हएत हएत, किने विचारचन.?"

सोझमतिया विचारचन बजला-

"पहिलुक साँझक समय रहए दियौ, भाय सहाएब।"

❑

शब्द संख्या: 2440, तिथि: 04 मई 2021

नवम पड़ाव

सावित्री आ विचारचन वापसी रस्तामे गप-सप्प करैत आगू बढ़िते सावित्री बजली-

"दोस, बौकी दादी जे कहि गेली से की करब.?"

देवनक सम्पर्कमे एला पछाइत जहिना सावित्रीक सुतल मन जागए लगलैन तहिना विचारचनक चेतनशक्ति सेहो जगलैन जइसँ कोनो समस्याकेँ हल करैक नजैर सेहो बदललैन। विचारचन बजला-

"की करब आ की नइ करब से हम अपन परिवारमे अपने ने करब आकि केकरो कहने करब। जँ एतबो स्वतंत्र अपन परिवारकेँ नहि बना सकलौं तँ कि गामे घिनबैले जनम नेने छी।"

विचारचनक विचार सुनि सावित्रीकेँ मोन पड़लैन छह मास पूर्वक विचार, पतिक संग रघुनाथक प्रति विद्यालय प्रवेश करेबाक संकल्प। परिवारक एक अंग ओहिना टुटिकऽ खसि पड़ल जहिना कोनो घरक एकटा कोण टुटिकऽ खसैए, तँए लोक ओइमे रहब थोड़े छोड़ि दइए। पतिक संग कएल संकल्पपर सावित्री विचारए लगली। अपने किछु छी मुदा छी तँ रघुनाथक माइये किने। रघुनाथ बपटुग्गर भऽ गेल मुदा माता-पिताक संयुक्त सीमेपर ने बेटा-बेटी रहैए, तैठाम आधा दायित्व तँ निमाहिते छेलौं, आधा ओहन दायित्व कपारपर चढ़ि गेल जेकरा नइ केने पार नहि भऽ सकै छी। मास दिनक पछाइत काल्हि कने मन चैन भेल। तइ बिच्चेमे आइ भोरे बौकी दादी बेन परैस गेली जे फल्लाँक पहिल छाया छिऐन।

अखन तकक माने छह मासक भीतरक जे जीवन सावित्रीक रहलैन

ओ नीक जकाँ जीवनक पाठ पढ़ा देलकैन जे चाहे डॉक्टर होथि आकि ओझा-गुणी, परिवार हुअ आकि देवालय, सभठाम अर्थेक (पाइयेक) खेल चलैए। सात मास पूर्व, जखन पति छेला तखन जेते सम्पैत छल, जइपर परिवार ठाढ़ भेल चलै छल, ओइमे केते घटबी भेल..!

जेना-जेना सावित्री परिवार दिस तकै छेली तेना-तेना नव-नव भूरो फुटल देखि पड़ए लगलैन आ तरे-तरे मन काँपियो रहल छेलैन जे केना एहेन भूर मुनब। दिन भरि सावित्री अपने परिवारक बीच बिरहाएल रहली।

दिन ढलल, रातिक आगमन हुअ लगल कि विचारचन आबि बजला-

“दोस्तीनी, अखुनके समय ने देवन भाय देने छैथ?”

अपन मजबूरी देखबैत सावित्री बजली-

“हँ, से तँ समय देनहि छैथ, मुदा..?”

अपन विचार सावित्री मनेमे दाबि ‘मुदा’ कहि छोड़ि चुप भऽ गेली। विचारचनक उड़ल मन, उड़ल मन भेल देवनसँ निमंत्रित अतिथि जकाँ, बुझि पड़लैन, बिनु विचार केनहि बजला- “मुदा-तुदा किछु ने, अखन चलब अछि।”

विचारचनक उत्साहित मन देखि सावित्री बजली-

“मुदा, यएह जे आब अन्हार पसरत। तैबीच दुनू छोट बच्चाकेँ असगरे अँगनामे केना छोड़ि देबइ।”

धीपल ताबामे जहिना पापड़ तरैमे देरी नइ लगैए तहिना विचारचनक मन रहबे करैन, धाँइ-दे बजला-

“दुनू बच्चोकेँ नेने चलू।”

सएह भेल, दुनू गोरे, माने विचारचनो आ दुनू बच्चाकेँ अगुऐने सावित्री सेहो देवन ऐठाम पहुँचली। अपन नियमानुसार देवन दरबज्जापर बैसल छला। कनी फरिक्केमे विचारचन आ सावित्रीकेँ देखि देवन बजला-

“विचारचन, तोरा देखि मन बेहद खुशी भेल।”

देवनक विचारक बेहद खुशीक अर्थ विचारचन नीक जकाँ बुझबे ने केलैन। किए तँ अखन तक विचारचन खुशी आ नाखुशी दुइये टा बुझै छैथ, तँए 'बेहद खुशी' की भेल से भाँजपर चढ़बे ने केलैन। मने-मन जखन विचार करैथ तँ 'बेहद खुशी'क माने बुझि पड़ैन खुशीक सीमा तक। मुदा लगले होनि जे 'बेहद'क माने तँ बिनु हदक सेहो ने भेल। माने ई जे जेकर आड़ि-धूर नहि अछि..! बिच्चेमे विचारचनक विचार ओझरा जाइन जे जैठाम आड़िये-धुर नहि रहत तैठाम सीमा पार की भेल? मुदा बिनु 'हँ-हूँ'क विचार केनहि विचारचन बजला-

"से की भाय सहाएब?"

जेना विचारिये कऽ देवन बाजल होथि तहिना बजला-

"विचारचन, जखने मनुक्ख समयक संग अपनाकेँ बान्हि लेत तखने ओकर दरिद्राक आधा बेड़ा पार भऽ जेतइ, बँचल अधे बेड़ा पार करैमे ने जीवन संघर्ष करए पड़तै।"

दुनू गोरेक विचारकेँ सावित्री चिकारी शैली बुझि अपन मनकेँ मारि सभ किछु सुनि रहल छेली। तही बीच रेखा (देवनक पोती) एकटा वर्तनमे चूड़ाक भूजा आ तीनटा छिपली नेने दरबज्जापर पहुँच तीनू गोरेक आगूमे राखि भूजा बाँटए लगली। तीनू छिपलीमे भूजा बाँटि जे शेष रहल ओ रधुनाथ दुनू भाए-बहीनिक बीच रखि देली।

भूजा खा पानि पीब तीनू गोरे चाह पीलैन। चाह पीबिते विचारचन बजला- "भाय सहाएब, धीरे-धीरे अन्हार पसैरिते जाएत तँए जइ काजे बजेलौं, आब पहिने तेकरा सम्हारू।"

देवन बजला- "विचारचन, अपना दुनू गोरे मरदा-मरदी भेलौं तँए समाजक बहुत बान्ह (बन्धन) एहेन अछि जइसँ मुक्त छीहे। मुदा सावित्रीकेँ तँ से नहि छैन, तँए पहिने ओइपर विचार करब जरूरी अछि।"

सावित्रीक मनक विचार जेना देवन बाजल होथि तहिना सावित्रीकेँ भेलैन। अपन मनक विचार व्यक्त करैत सावित्री बजली- "भैया, हिनकासँ लाथ की करबैन, घरसँ जखन केम्हरो निकलै छी तँ मनमे डर पइस जाइए

जे इज्जत बँचा घर घुमब की नहि।”

सावित्रीक मनक विचार देवन आँकि लेलैन। मुदा एते तँ मनमे बनले छेलैन जे जैठामक समाजमे माने गामक लोकमे, कोनो तरहक आपसी विवाद नहि रहैए तैठाम महिला ऊपर होइत उपराधकेँ सभ अपराध मानि विरोध करैए जइसँ बहुत अनुचित अत्याचार दबल रहिते अछि। हँ, जैठाम समाजक बीच आपसी झगड़ा-लड़ाई रहैए तैठाम दुश्मनीक कारणेँ पैघ-पैघ अनुचितो अपराध होइते अछि। जेकरा बँटल समाजमे कियो अधलो कहैए आ कियो नीको कहैए। किए तँ ओहन अपराधकेँ कनाइर कहि बदला चुकाएब कहैए। अपन गाम तँ से नहि अछि, अखन धरि जेना समाजक धारा प्रवाहित होइत आबि रहल अछि तहि अनुकूल अछि, तँए महिलाक प्रति अनुचित अत्याचार दिन-देखार नहि होइए। भलेँ चोरा-छिपाकऽ होइत हुअए, ई दीगर भेल। ओना, चोराइयो-छिपाकऽ दुनू तरहक अपराध होइए। माने ई जे केतौ पुरुख-नारी दुनूक सहमतसँ शारीरिक अपराध होइए आ केतौ असहमतसँ सेहो होइए। ओना, असहमतसँ भेलोपरान्त महिला लोक-लाजक अपराधकेँ दाबि सेहो दइते छैथ। ..मने-मन देवन जेते सावित्रीक विचार दिस बढ़ै छला तेते मनमे ओझरियो लगै छेलैन आ सोझराइतो जाइते छलैन। तँए सावित्रीक विचारकेँ टारबे नीक बुझलैन। मुदा चुपचाप टारियो देलासँ सावित्रीक मन थोड़े शान्त होइतैन। तहूमे जैठाम मनमे अशान्त घर कऽ चुकल छैन। ..अपन भार विचारचनपर फेकैत देवन बजला-

“विचारचन, हमरासँ बेसी लगीचक सम्बन्ध तोरा छह, तँए तूँ सावित्रीकेँ आश्वस्थ करहुन जे एहेन शंका मनसँ निकैल जाइन।”

देवनक विचार सुनि रामायणिक बालि जकाँ विचारचनक मनमे दोबर शक्तिक संचार भेलैन। ओना, कोनो समस्याक समाधान वैचारिक सेहो होइए आ बेवहारिक सेहो होइते अछि। ऐठाम समस्या वैचारिक अछि, बेवहारिक समस्या घटनाक पछाइत होइए। से तँ भेल नहि अछि। विचारचन बजला- “भाय सहाएब, दुनियाँमे एहेन हजारो लाखो दोस्त भेला अछि जे एक-दोसर-ले अपन जीवन दाउपर लगा देलैन अछि। तैठाम

जँ एकटा विधवाक प्रश्नपर अपने चुपचाप गबदी मारि मुँहमे ताला लगा ली, ओहन पुरुख थोड़े छी। अहाँक सोझामे बजै छी जे जखने दोस्तीनीक सम्बन्धमे एहेन अत्याचार सुनब तखनेसँ अपन जान अरोपि ओकरा मेटबैक कोशिश करब।"

विचारचनकेँ सह दैत देवन बजला-

"हँ, तँ ऐसँ बेसी दोसर कइये की सकैए।"

विचारचनक विचारकेँ देवनक समर्थन पेब सावित्रीक मनक इच्छाशक्ति जगलैन। इच्छे जगलापर ने कियो अपन जीवनक प्रयोजनक प्रति ने अपन जीवन समर्पित करैए। ओना, गाम-घरमे उपदेश बँटनिहार अपन उपदेश बँटिते छैथ जे इच्छा सभसँ अधला भाव छी तँए एकरा दिस नहि ताकी। मुदा एहेन विचार मनमे अबिते ने छैन जे इच्छाशक्ति ओहन शक्ति छी जे जीवनक प्रति मनुक्खकेँ संकल्पित करैत गणतव्य तक पहुँचबैए। साधनाकेँ शुरू होइते शक्तिक शक्ति, माने भेल इच्छाकेँ शक्ति भेटब, बढ़ए लगैए, जे जीवनकेँ पकैड़ संगे-संग लऽ जा गणतव्य तक पहुँचा दइए। जखने गणतव्य तक पहुँचब तखने ने इच्छाक रूप बढ़ि भावमय इच्छाशक्ति बनि जाइए, जे सार्थक जीवनक सार्थकता छीहे। ..जेना-जेना सावित्रीक मनमे इच्छाशक्ति जगए लगलैन तेना-तेना मनक उत्फुलता बढ़ए लगलैन। ..भावसँ भावुक होइत सावित्री बजली-

"भैया, हिनका दुनू गोरेक बीच बचनबद्ध होइ छी, जे जेना-जेना दुनू गोरे राय-विचार देता तेना-तेना करैत चलब।"

सावित्रीक समर्पित विचार सुनि देवनक मनमे ओहिना खुशी भेलैन जहिना अशर्फी भेटला पछाइत केकरो होइ छइ। मुदा लगले अपने मनमे भेलैन जे जहिना जीवनक सीमा अछि, माने के केते दूर तक जीवन प्राप्त कऽ लेलैन, तहिना विचारो-बोधक सीमा अछिए। तँए नीक हएत जे सावित्रीक विचार-बोधक जे सीमा छैन तेकरा परेख अपन जीवन दर्शन देखाएब। जँ से नहि करब तँ रामायणिक नल-नीलक पाथरक टुकड़ा जकाँ समुद्रमे हेलैत रहत मुदा एकठाम सटत नहि। देवन बजला- "विचारचन,

हम ई नहि बुझि पेब रहल छी जे सावित्रीक समर्पणक भावभूमि की छैन?”

ओना, भावभूमि सुनि विचारचन चौंकला मुदा लगले मन कहलकैन जे कोनो विषयक भावभूमि नहि जीवनक भावभूमि। माने भेल जे सावित्रीक जीवनक स्तरक सूत्रवद्ध सीमा की छैन। विचारचन बजला-

“दोस्तीनी, आब गियानचनबला दोस्ती बिसैर जाउ। हमरा-अहाँक बीच सम्बन्धक मैत्रीक शुरूआत हएत। तँए अखने कहि दइ छी जे स्त्रीगणमे दूटा महत्वपूर्ण दोष होइए। पहिल फूस-फास बाजब आ दोसर कोनो विचारे आकि वस्तुएकेँ छिपाएब। तँए अपन विचार रखैसँ पहिने वचनबद्ध होउ जे ऐ दुनूसँ परहेज राखब।”

सावित्रीकेँ बजैसँ पहिने देवने बजला-

“विचारचन, तोहर विचारकेँ काटै नइ छिअ, मुदा दुनू दोष जे बुझै छहक ओ जीवनक ऊपरी सतहपर अछि। जखने जीवन बेवहारिक रूपमे जीवनक मूल तत्त्वकेँ परेख ओइ अनुकूल जीवन बना चलैए तखने ओ दुनू दोष अपने निर्मूल भऽ मेटा जाइए।”

देवनक विचार सुनि जहिना सावित्रीक मनमे तहिना विचारचनक मनमे सेहो एकटा चानक एलैन। सावित्री बजली-

“भैया! हिनकासँ लाथ कोन, पतिक सोझामे सम्पैत की छल आ अखन की अछि, पहिने से कहि दइ छिऐन।”

सावित्रीक विचारकेँ गीरह गाँठ बान्हि देवन बजला-

“नीक तरहेँ विचार बनेलौं। जे मनमे अछि से पहिने बाजि जाउ।”

सावित्री बजली-

“आब हमरा ऊपरमे परिवारक सोल्होअना भार आबि गेल अछि, मुदा जखन रघुनाथ दस बर्खक हएत तखन तँ वएह ने अपन भार पकड़ैत-पकड़ैत सोल्होअना भार लेत। पितोक इच्छा रहैन जे रघुनाथकेँ नीक जकाँ पढ़ाएब आ अपनो गामेमे देखै छी जे गोपीनाथक पिता तहिये मरि

गेलखिन जहिया गोपीनाथक जन्म तँ भेल छेलैन मुदा छठियार नहि भेल रहैन। केना गोपीनाथक माए गोपीनाथकेँ एते पैघ डॉक्टर पढ़ाकऽ बनौलैन। तहिना अपनो इच्छा अछि जे रघुनाथो ओहने मनुख बनए।"

सावित्रीक मुहसँ खसल अनेको विचारकेँ देवन कबीरबाबा जकाँ एक-एक सूतकेँ तानी-भरनीपर सुतियबैत बजला-

"पहिने रघुनाथकेँ पढ़बैक विचार करू। अखन तक की सभ केलौं अछि आ आगू की करैक अछि?"

सावित्री बजली-

"अखन तकक समय नियारे-भासमे चलि गेल। पाँच बर्ख सेहो रघुनाथकेँ पूरि गेल। छह-सात मास पहिलुका विचार छी, अपन विचार भेल जे रघुनाथकेँ स्कूलमे नाओं लिखा दिऐ, किए तँ एकरोसँ माने रघुनाथोसँ छोट-छोट बच्चाकेँ स्कूल जाइत देखिऐ, मुदा पतिक विचार रहैन जे पाँच बर्ख पुरला पछाइत रघुनाथकेँ स्कूलमे नाओं लिखाएब, अही तर्क-वितर्कमे दुनू गोरेक बीच कहा-कही सेहो भेल रहए। मुदा..।"

पतिपर नजैर पहुँचते सावित्री ओइ सीमापर ठाढ़ भऽ गेली जैठाम एक दिस पति ठाढ़ छेलैन आ दोसर दिस पुत्र। तँए विचार थकथका गेलैन जइसँ चुप भऽ गेली।

देवनक मनमे एकटा बच्चाक जीवनक सिनेह उमैड़ पड़लैन तँए धियानस्थ भऽ सुनैत-सुनैत आँखिक परदा अपने बन्न भऽ गेलैन, मुदा कानक जाली खुजले रहलैन। मुदाक पछाइत सावित्रीकेँ चुप होइत सुनि, देवन धड़फड़ाकऽ आँखि खोलैत बजला-

"मुदा की?"

विचारचन बजला-

"मुदा-तुदा किछु ने। जे मनमे अछि से बजैत चलू।"

विचारचनक विचार सुनि देवन चुपे रहला। पैछला बात मोन पाड़ैत सावित्री बजली- "सभ बात हिनका बुझलो ने हेतैन, परिवारमे पाँच बीघा

जमीन छल जइमे दस कट्ठा गाछ-बिरीछ आ बाँस छल। जहिना गाछ-बिरीछ-बाँस बोहिया गेल माने बीकि गेल तहिना दू बीघा जोतसीम जमीनो भरना लगि गेल।”

‘जमीन भरना’ सुनि देवनक मनमे उठलैन जे शेष जे बँचल जमीन माने बिनु भरना लगल, तेतबोमे जँ आधुनिक (वैज्ञानिक) ढंगसँ खेती करैथ तँ परियाप्त छैन। मुदा लगले अपने मन कहलकैन जे पुरुखा-पुरुखी जे किसान छैथ, अपना जनैत अपने जिनगी भरि खेतीए करैत आबि रहल छैथ, तनिका तँ अखुनका (आधुनिक) खेती करैक लूरिये ने भेलैन अछि आ सावित्रीकेँ केना भऽ जेतैन जे अखन तक खेतीक भीर गेबो ने कएल छैथ.? तहूमे किछु परिवार एहनो तँ अछिए जे भूमि-छेदनकेँ माने जमीनक जोत-कोर करबकेँ अधर्म वृत्ति बुझै छैथ..! ओना, एहेन परिवार सावित्रीक नहियेँ छैन मुदा एते तँ जरूर छैन्हे जे आने-आन परिवारक स्त्रीगण जकाँ खेती-पथारी पुरुखक काज बुझि महिला जेना छोड़ने छैथ तहिना सावित्रियो छैथ। ई दीगर अछि जे गरीब परिवारक स्त्रीगणो पुरुखक संग खेतीक काज करिते छैथ मुदा सावित्री सेहो ने छैथ। फेर लगले अपने मन विचार देलकैन जे जिनगी कि कोनो एकदिना छी जे पेट मुहका कीड़ा जकाँ एक्के घन्टाक जीवन अछि। जीवन तँ जीवन छी, ओना विचारगत जीवन सेहो होइए आ क्रियागत (व्यवसायगत) जीवन सेहो होइए। मुदा तइमे अन्तर अछि। विचारगत जीवन अपन जीवनक अनुकूल लोक बना चलै छैथ मुदा बेवसायगत जीवन जीवनधार छी जइमे एक धारमे अनेको बेकतीक परिवार चलैत जीवनक नैया पार करै छैथ...। जेते देवनक मन विचार दिस बढ़ैत जाइन तेते विचारो जटिल भेल जाइत रहैन। ओइ जटिलताकेँ समेटि देवन विचार केलाह जे पहिने सावित्रीक जीवनकेँ थीर करब अछि माने एक सीमा रेखा खींच ठाढ़ करब अछि, पछाइत एक-एक समस्याक गुत्थीकेँ सोझरबैत चलैक अछि। ..विचारक ऐ सीमापर अबैत-अबैत जेना देवनक भक्क खुजलैन। भक्क ई खुजलैन जे पतिक बिछोह सावित्रीकेँ भऽ गेलैन, मुदा ओहन काज तँ पछुआएल छैन्हे जे दुनू गोरे विचारि रोपए चाहै छेली। बीचमे सघन बेवधान भेबे केलैन। खेती-बारीक

विचारकेँ मनसँ टारैत देवन बजला- “सावित्री, अखन जँ अनेको काजमे हाथ लगाएब से नहि सम्हरत। अखन पहिल काज ई भेल जे रघुनाथकेँ काल्हि स्कूलमे नाओं लिखा दियौ।”

‘रघुनाथकेँ स्कूलमे नाओ लिखाएब’ सुनि सावित्रीक मनमे अतीतक विचार खुशी पैदा केलकैन। खुशी पैदा होइक कारण भेलैन अपन सात मास पहिलुका विचारकेँ धरतीमे रोपब, माने जीवनमे उतारब। मुदा लगले मन मन्हुआ गेलैन जे पहिल दिन जखन रघुनाथकेँ स्कूलमे नाओं लिखाएब तखन नाम लिखाइ-फीस गुरुजीकेँ नहि देबैन सेहो केहेन हएत। पहिने जखन लोककेँ रुपैआ-पैसाक अभाव छेलै तखन ठुरियो (ठुर्री) तँ दैछनामे गुरुजीकेँ दइते छला। ठुर्री माने भेल बिना किछु लिखल-पढ़ल सिक्का, जेकर चलैन अपना ऐठाम छल। पछाइत एक पाइ देब शुरू भेल, तेकर पछाइत रुपैआ दिअ लगलैन। अखन तँ लाखमे पहुँच गेल अछि। खाएर जे अछि, सावित्रीक मन भीतरे-भीतरे झुनझुना लगलैन जे रघुनाथकेँ जे नाओं लिखाएब से एकोटा रुपैआ हाथमे कहाँ अछि। ..सावित्री बजली-

“भैया, हाथमे एकोटा पाइ नहि अछि, केना..?”

सावित्रीक विचार सुनि देवनक मन जहिना ठमकलैन तहिना ठहकबो केलैन। ठहकलैन ई जे मिथिलाक समाजमे एहनो तँ बेवहार रहबे कएल अछि जे शिक्षा ग्रहण लेल एक-दोसरकेँ आर्थिक मदद करबे करै छला। ओना, केते गोरे विद्यालय बना सेहो चलौलैन। आजुक परिवेशमे भलेँ ओ मेटाइये किए ने गेल हुअए..। देवन विचारचन दिस आँखि उठा ताकए लगला। देवनक नजैर पड़िते विचारचन सावित्रीकेँ कहलैन-

“दोस्तीनी, हम कोनो बीरान छी जे अहाँक हाथमे पाइ नहि रहने बच्चाक नाओं नहि लिखाएल जाएत। नाओं लिखबैसँ लऽ कऽ अखन जे जरूरत हएत सभ पुरा कऽ देब। काल्हि संगे चलब आ स्कूलमे रघुनाथकेँ नाओं लिखा देब।”

कौल्हुका काजक जोगार सुनि सावित्रीक मन आगू दौड़ गेलैन। होइतो अहिना अछि जे जीवन्त जीवन सदैत आगू दिस दौड़ैक परियास

करिते अछि। तहूमे क्रियागत तँ क्रियाक गतिये चलैए मुदा वैचारिककेँ तँ कोनो आड़ि-मेड़ नहि छइ। सावित्री बजली-

“भैया, खेती-पथारी करैक उपाय सेहो लगा दितैथ तँ अपना बले परिवार चलबए लगितौं।”

सावित्रीक विचार सुनि मने-मन देवन विचारलैन जे परिवारक हिसाबसँ सावित्रीकेँ बहुत बेसी सम्पैत (खेत-पथार) छैन, मुदा परम्परागत खेती रहने झुझुआन बुझि पड़ै छैन। फेर अपने मन देवनक कहलकैन जे किए ने काजमे बान्हि सावित्रीक जीवनक गाड़ीकेँ आगू मुहेँ बढ़ाबी। बजला-

“काल्हि बच्चाकेँ स्कूलमे नाओं लिखा दियौ। साँझू पहर हम अपने अहाँ ऐठाम आएब। तखन खेती-पथारीक राय-विचार करब जे कोन रूपेँ आगू चलैक अछि। की विचारचन?”

विचारचन बजला-

“एक लाखक विचार अपनेक अछि, भाय साहैब। एना धड़फड़ेने नइ ने हएत जे पात परक वस्तुकेँ हाथेमे लऽ कऽ चाटए लगब।”

सावित्री दिस तकैत देवन बजला-

“अखन जाउ। अहूँकेँ भानसक बेर भऽ गेल आ अपनो सौंझुका काज पछुआ रहल अछि। आगूक गप-सप्प आगू करब।”

❑

शब्द संख्या: 2368, तिथि: 08 मई 2021

अन्तिम पड़ाव

पनरह बर्ख बीत गेल। रघुनाथ एग्रीकल्चर ग्रेजुएट बनि गेल। अन्तिम बर्खक रिजल्टमे रघुनाथ प्रथम स्थान प्राप्त केलक। बिआहक घटक परसू औत। जे आइ भोरे सावित्रीकेँ लड़ूलाल कहए एलखिन अछि।

लड़ूलालकेँ सावित्री गामक एकटा किसान बुझै छैथ। मुदा लड़ूलाल किसानीक संग घटकक रोजगार सेहो करै छैथ। सरकारी काज हुअ आकि गैर-सरकारी माने सामाजिक काज, रूइयाक बिनौला जकाँ बीचमे बिचौलिया काज रहिते अछि। ओना, बिचौलिया रहक दू कारण अछि, पहिल अछि ओहन काजक जोगार बैसा बीचमे कमीशनक रूपमे कमा लेब आ दोसर अछि अबूझ लोककेँ काजक रस्ता धरा सबूझ बना मदद करब। लड़ूलाल पहिल श्रेणीक बिचौलिया-घटक छैथ।

अखन तक सावित्री लोकक मुहेँ जे घटकक चर्च सुनै छेली बस तेतबे बुझै छेली, किए तँ अपना जीवनमे ओहन काजसँ कहियो भेँटे ने भेल छेलैन। तँए कहब जे सावित्री घटकक वृत्ति नहि बुझै छैथ से तँ बुझिते छैथ तँए मनमे ठहैक गेलैन जे रघुनाथपर घटक औता। अपनाकेँ अल्हर-अनाड़ी बनबैत सावित्री बजली-

“तइले हमरा की सभ करए पड़त?”

सावित्रीक सोल्होअना भार उठबैत लड़ूलाल बजला-

“अहाँकेँ किछु ने करए पड़त। सोल्होअना भार हमरा ऊपर रहल।”

सावित्री बजली-

“दरबज्जापर जखन घटक औता तखन हुनका खेबा-पीबाक

ओरियान जँ नहि करबैन से केहेन हएत।”

लड़ूलालकेँ सभ बात बुझले रहैन, किए तँ कमिश्नर साहैबक जे मुँह-लगुआ रहैन ओ सभ बात लड़ूलालकेँ बुझा देने छेलखिन जे पाइ-कौड़ी, लेन-देन दुआरे काज बिथुत नहि करब।

लड़ूलाल बजला-

“पाँच गोरेक संग कमिश्नर साहैब अपने औता, अपन सभ बेवस्था अपने केने औता। अहाँ खाली ‘हँ’ कहि देबैन जे रघुनाथक बिआह अहाँ ऐठाम करब।”

लड़ूलालक बात सुनि सावित्रीक अपने मन मनाही केलकैन जे घर-परिवारक काज छी, तहूमे ओहन काज जे जीवनक पहिल महत्वपूर्ण काज छी, तँए विचारचन आ देवन भैयासँ बिनु विचारने बिआहक बात हारब औगताएब हएत। मुदा से बात जँ लड़ूलालकेँ कहि देबैन तँ ओ अनेरे बुझि जेता जे बिनु डोराडोरिक मनुक्ख छी। बिनु डोराडोरिक मनुक्खक माने भेल विचारहीन। मुदा लगले सावित्रीक मनमे ईहो होनि जे जखन बेटाक पढ़ाइ समाप्त भऽ गेल तखन तँ ऐगला काज परिवारे गढ़ब हएत किने, तइले बिआह तँ अनिवार्य अछिए। ओना, अखन तकक जे अपन पनरह बर्खक बीचक जीवन सावित्री, देवन आ विचारचनक सम्बन्धक बीच रहलैन ओ एहेन रहलैन जे सावित्री अपनाकेँ मात्र गृहिणीए टा नहि बुझि गृहपति सेहो बुझि रहल छैथ। से खाली विचारेक दौड़मे बुझि रहल छैथ से बात नहि, जीवनक कर्मभूमिक रणक्षेत्रमे सेहो तहिना बनि गेल छैथ। जँ से नहि बनल छैथ तँ मात्र चारि बीघा जीमनबला परिवार बेटाकेँ एग्रीकल्चर ग्रेजुएट केना कृषि उपजसँ पूरा लेलैन? पाँच बीघा जमीनमे एक बीघा जमीन बेच, भरना जमीन छोड़बैत अपन छिड़ियाएल जमीन माने बाधे-बाध पसरल, केँ एकठाम करैत बोरिंग, दमकल लऽ पानिक उपाय, खेतक पटौनी ले अपन कऽ लेलैन अछि। सावित्री बजली-

“जखन दरबज्जा बनौने छी तखन किनको अबैसँ मनाही थोड़े करबैन, जखन आबैथ, जहिया आबैथ, आबौथ, हम तैयार छी।”

सावित्रीक विचारक मोलामा देखि लड़ूलाल चपचपाइत सावित्रीकेँ चपचपीमे दैत बजला- “जहिना अहाँक अपन हड़गर-कटगर देह अछि तहिना पुतोहुओ हएत। बुझू जे राम-सीताक जोड़ी जहिना छेलैन तहिना रघुनाथोक हएत।”

ओना, सावित्रीक जीवनयात्रा समयक संग बन्हा चलै छैन तँए बेसी गप-सप्प लड़ूलालसँ नहि करए चाहि रहल छेली, मुदा परिवारक अनिवार्य काजक विचार छी तँए अधखिज्जू छोड़ियो देब उचित नहियेँ हएत। गप-सप्पकेँ एक सीमापर आनि सावित्री बजली-

“कोन पहर परसू औता?”

घटकिया मुँह लड़ूलालक छैन्हे तँए विचारक ताल-मेल बैसबैक कला भइये गेल छैन। बजला-

“अखन परसू बुझू, आइये साँझूपहर कहि देब जे भिनसुरका पहर औता आकि बेरुका पहर।”

सावित्री बजली-

“बड़बढ़िया।” कहि सावित्री चुप भऽ गेली।

ओना, लड़ूलालक विचार रहैन जे सी.आइ.डी.क अफसर जकाँ धुमा-फिरा कऽ जाल फेकि सावित्रीकेँ तेना ओझरा ली जे काजक पक्का-पक्की बिसवास बनि जाए। मुदा सावित्रीक तँ अपन बेकतीगत जीवनक ढर्रा बदैल सामाजिक ढर्रामे बन्हा गेल छैन तँए बेकता-बेकती विचार बिना समाजक विचार बुझने, करब कखनो उचित नहियेँ हएत। हँ, एहेन सम्भव अछि जे सामाजिक धाराकेँ पकैड़ अपनो धारकेँ ओइमे सन्हियबैत बढ़ी, मुदा समाजक धारा तँ बहुआयामी अछि जे बेवस्थानुकूल अनेक धार पकैड़ प्रवाहित भऽ रहल अछि, तइ बीचमे अपन धारकेँ धरिया चलब ओते असान थोड़े अछि। एकर माने ईहो नहि जे चलबे असम्भव अछि। लड़ूलालक मनमे नचैत रहैन जे सावित्रीक संग संक्षेपमे गप-सप्प भेल मुदा कमिश्नर साहैब तँ ओते ऊपरक लोक छैथ जे बैसले-बैसल मौज-मस्ती करैत एकटा कमिश्नरी जोइत रहला अछि। फेर अपने मनमे लड़ूलालकेँ

भेलैन जे एहनो तँ सम्भव अछिए जे जहिना बैसले-बैसले कमिश्नरी जोति कऽ खा रहला अछि तहिना एहनो तँ अछिए जे भिनसरसँ, माने छह बजेसँ बारह बजे तक कोनो हरबाह चारिये कट्ठाक खेतक समाड़ (दोहरी जोत) करै छैथ, से बात हुनका बुझियेमे ने अबैत होइन...। खेलाड़ी घटक लड़ूलाल छथिए तँए मने-मन सामंजस करैत विचार केलाह जे जहिना कोनो काज करैक अनेको पन्ना-छिन्ना अछि तहिना नहि करैक सेहो अनेको पन्ना-छिन्नामे एकटा मूल विचार तँ सावित्रीक मुहसँ खसबे कएल छैन जे जँ दरबज्जापर औता तँ सुआगत करबे करबैन। एकर तँ स्पष्ट माने भइये गेल ने जे काज हेबे करत। फेर लड़ूलालक अपने मन कहलकैन जे जहिना कमिश्नर साहैबक मुँह-लगुआ, माने पेशकार साहैब, हमरा भार देलैन तहिना हुनकर काज तँ पुरिये गेलैन। तँए किए ने इन्दिरा आवास जकाँ पहिल किस्तक कमीशनो उठा लेब आ अबैक जानकारी सेहो दऽ देबैन। सावित्री अपन काज दिस बढ़ली आ लड़ूलाल बिआहक मंत्रक जप करैत अपना घर दिस विदा भेला।

ओना, सावित्रीक जिनगी बेवहारिक बनि गेल छैन तँए ने मंत्रक जरूरत छैन आ ने ओकर जपे करैक। किए तँ समयक संग जिनगी तेना मिलिकऽ चलि रहल छैन जेना चान-सुरुज अपन नियमित गतिये दिन-राति चलैत रहैए। जइसँ सावित्रीक मन सदिकाल खालीए छैन। मनो तँ मन छी जे दिन-रातिमे साठि हजार बेर नचैए। सावित्रीक मन तहिना लड़ूलालक विचारपर नचैत रहैन। नचैत-नचैत उठलैन जे भने ओ (लड़ूलाल) सौंझुका समय बना लेलैन। तैबीच अपनो तँ मित्रो (विचारचनो) आ पितातुल्य देवनो भैयासँ विचार-विमर्श करैक समय बँचले अछि। परिवारमे नव मनुक्खक आगमन हएत, तइले ई तँ जरूरी अछिए ने जे परिवारानुकूल मनुक्ख हुअए, तहिना दोसर दिस मनुक्खोक लेल तँ जरूरी अछिए जे मनुष्योचित परिवार हुअए। विचारक द्वन्द्वमे सावित्री पड़िये रहल छेली कि अपने मन कहलकैन जे कोनो कि बड़ भारी समस्या थोड़े अछि। मनुक्ख छी मनुक्ख जकाँ चलैत रहब तइमे समस्या की अछि। जहिना बन (जंगल) सिंह पालैए तहिना सिंहो ने अपन बुझि बनक रक्षा सेहो करिते अछि। अखन

भिनसुरका उखड़ाहा छी, परिवारक जीवनक स्वर्ण अवसर बुझू आकि स्वर्णिम समय, सभ कथुक उदयाचल अछिए, तँए पहिने अपन अर्थक जीवनकेँ उदीयमान बना ली, पछाइत बेरू पहर, लड़ूलालक सौंझुका समाचारसँ पहिने, दुनू गोरेक माने देवनो भैया आ विचारचनो मित्रसँ विचारक मुँह-मिलानी कऽ लेब। जइ अनुकूल विचार-विमर्श हएत तइ अनुकूल आगूक गप-सप्प लड़ूलालसँ करब। अखन जे किछु भेल ओ तँ बाट-बटोहीक बाट-घाटक गप-सप्प मात्र भेल अछि।

चारि बजे बेरुका समय, सावित्रीक अपने अनुमानित मन कहलकैन जे लड़ूलालक काजक धड़फड़ी तेना बुझि पड़ैए जे पहिलुके साँझमे ने ओ आगूक गप-सप्प करए आबि जाइथ, तँए नीक हएत जे तइसँ पहिने अपन काज सम्हारि हमहूँ किए ने पहिनहिसँ तैयार रहब। किछु छी मुदा काज तँ अपने परिवारक ने छी। तहूमे ओहन काज जे अखन तक जेना परिवार ढहि-ढहि ढनमना गेल छल माने निम्नमुखी भऽ गेल छल, ओकर भरपाइये टा नहि हएत बल्कि परिवारमे ओहन मोड़ सेहो एबे करत जइसँ मनुक्ख आगमनक दुआर खुजत। ..अपन उठैत परिवारक रूप देखि सावित्रीक मन हलैस कऽ कलैश गेलैन जे सभसँ पहिने अही काजकेँ अगुएबाक अछि। अँगनाक सभ किछु सम्हारि सावित्री विदा भेली।

सावित्रीकेँ देखिते विचारचन बजला-

“दोस्तीनी, सबेर-सकाल आगमन देखै छी?”

अपन मनक विचार माने बेटा-बिआहक विचार, केँ मनेमे समेट सावित्री बजली-

“मित्र, परिवारमे किछु आवाहन भऽ रहल अछि तँए विचार करए एलौं अछि।”

ओना, सावित्रीक मनक विचारकेँ विचारचन नहि बुझि सकला मुदा अनुमान लगौलैन जे किछु खास विचार छी, तँए एली अछि। फेर अपने मनमे उठलैन जे अपने कोन खेतक मुड़ै छी जे खास विचारकेँ आम विचार बनाएब। तँए नीक हएत जे अपनो अही लाथे माने सावित्रीक विचारक

लाथे, किए ने देवन भाइक विचार बुझि ली। विचारचन बजला- “दोस्तीनी, जखन सभ विचारमे देवन भायकेँ अगुअबै छिऐन, तखन जँ हुनकासँ बिना विचार नेने किछु विचार करब से ओते सोहंतगर नहि हएत, तँए चलू हुनके लग। ओहीठाम अपन विचार राखब आ सभ कियो एकमत सँ विचारि लेब।”

सावित्री बजली-

“बड़बढ़ियाँ।”

दुनू गोरे माने विचारचनो आ सावित्रियो देवन ऐठाम पहुँचला। बेरुका उखड़ाहाक किछु काज देवनकेँ बाँकिये रहैन, सएह कऽ रहल छला। दुनू गोरेकेँ देखि काजसँ हाथ बागि देवन बजला-

“किछु विशेष बात अछि कि विचारचन?”

विचारचनकेँ बजैसँ पहिने सावित्री बजली- “हँ भैया, साँझमे लड़ूलाल, रघुनाथक बिआहक गप-सप्प करए औता तँए मनमे भेल जे पहिने भैयासँ किए ने बुझि ली।”

बिआहक नाओं सुनिते देवनक अपने विचारशील मन कहलकैन, पैघ काजक आगू छोट काजक महत्व कमि जाइए, तँए नीक हएत जे पहिने सावित्रियेक काजक विचारकेँ निपटान कऽ लेब उचित हएत। देवन बजला-

“लड़ूलाल तँ घटक छी, घटकैती ओकर पेशा छिऐ। तँए ओ केकरो काजे आएल सेहो सभ किछु कहलक अछि?”

सावित्री बजली-

“हँ।”

देवन बजला-

“की कहलक अछि?”

सावित्री बजली- “कमिश्नर साहैबक बेटी छिऐन, ओही नीविते लड़ूलाल आएल छेला।”

देवन- “की सभ कहलक?”

सावित्री- “एतबे कहलैन जे परसू कमिश्नर साहैब अपने बेटी बिआहक नीविते औता।”

सावित्रीक बात सुनि देवनक मनमे अनेको प्रश्न उठि गेलैन। आजुक परिवेशमे कमिश्नर सन ओहदाबला लोक सावित्री सन साधारण परिवारमे बेटी देता, अजगुत तँ अछिए.! मुदा सम्भवो नहि अछि, सेहो बात नहियेँ अछि। एक तँ जातीय बन्धनक बीच समाज बँटल अछिए, जहिक चलैत अनमेल बिआहक परिस्थिति सेहो बनले अछि, तैसंग रघुनाथक योग्यता तँ अकासमे उड़िये गेल अछि। परिवार किछु रहौ मुदा विश्वविद्यालयमे रघुनाथ कृषि फैकल्टी (विषय) मे पहिल स्थान अनलक अछि, ई नान्हिटा बात थोड़े भेल। आजुक परिवेशमे परीक्षा-फल विद्यार्थीक प्रतिभापर थोड़े भेटैए, ओ तँ भेटैए पैरवी-पहुँचपर। तँए कहब जे प्रतिभाक सोल्होअना लोप भऽ गेल अछि, सेहो बात नहियेँ अछि सेहो तँ नगण्ये मात्रामे किए ने होउ, मुदा जीवित तँ अछिए। जेकरे फलस्वरूप ने रघुनाथ प्रथम स्थान पौलक अछि।

देवन जखन मुड़ी उठा सावित्रीपर दैथ तँ बुझि पड़ैन जे गेल्ह (चिड़ैक बच्चा) जहिना माए दिस लोल बढ़ा चहरा मंगैए तहिना सावित्रीक मनमे रहैन। मुदा प्रश्न तँ जटिल अछिए। एहेन प्रश्नकेँ नान्हिटा मानब नेनपन हएत। रघुनाथ स्नातकक डिग्री हाँसिल कऽ लेलक अछि, वयस्क सेहो भऽ गेल अछि, तैठाम रघुनाथक विचार बिना बुझने किछु बाजब उचित थोड़े हएत। ओना, अखन तक अपना समाजमे होइते आबि रहल अछि जे बेटा-बेटीक बिआह-दान करब माता-पिताक दायित्वक सीमामे अछि। जहिया बाल-विवाहक चलैन छल तहियाक परिस्थिति और आजुक परिस्थितिमे अन्तर आबिये गेल अछि। तहियाक परिस्थिति छल जे गुलामीक जिनगीमे लोक जीवन-यापन करै छला जइसँ जिनगीक भरोसो तेनाहे सन छेलैन तँए माता-पिताक दायित्वक सीमामे बेटा-बेटीक बिआह-दान करब, ऐ दुआरे छल जे कम्मो उम्रमे बेटा-बेटीक बिआह दान कऽ

माता-पिता अपन दायित्वक निर्वहन करै छला। लोकक जीवनो एक बटिया छेलैन। एक-बटियाक माने भेल जे कृषि आधारित जीवन छल, मुदा आजुक परिवेश बहु-बटिया भइये गेल अछि, जइसँ परिवारक गठन सेहो जटिल भइये गेल अछि। एहना स्थितिमे जँ सभ समस्याक निदान पहिने नहि सोचि-विचारि लेब तँ ओहन खतरा तँ अछिए जेहेन घी आ मधुक मिश्रणसँ होइए। माने ई जे जाधैर दुनूक माने घीओ आ मधुओक मात्रा कम-बेस रहैए ताधैर अमृत बनल रहैए आ जखने बराबरीमे आबि जाइए तखने विष बनि जाइए।

विचारमे डुमल देवनक मनमे एकाएक उठलैन जे जहिना समैयक महत अछि तहिना स्थानोक महत् तँ अछिए। ऐठामक समाजक कर्ता-धर्ता हमहीं सभ ने भेलिऐ, जे समाजक सभ गीरह-गाँठकेँ बुझैसँ लऽ कऽ करै तक अपने ऊपर अछि। तँए विचारैक भारो तँ अपने-सभक ऊपर ने भेल। ..सघन भविष्यक बनक बाट देखि देवन पहिने अपनाकेँ सचेत करैक परियाससँ पहिने माने सघन बनमे प्रवेश करैसँ पहिने, विचारचनकेँ पुछलैन-

“की विचारचन, तोहर की विचार छह?”

क्रिकेटक छक्का जकाँ विचारचन बजला-

“भाय सहाएब, अपनेक आगू अपन कोन विचार। अखन तँ अपनेसँ बुझिये-सीख रहल छी।”

विचारचनक विचारकेँ सही मानि देवन मने-मन विचार केलाह जे किए ने पहिने सबहक माने भेल सावित्रीक संग रघुनाथोक पेटक बात बुझि अपन पेटक बात कहि पछाइत निर्णयक सीमा पकड़ी। जँ से नहि करब तँ काजक सोल्होअना घटी-बढ़ीक भार अपने ऊपर पड़ि जाएत। ...मुदा लगले देवनक अपने मन कहलकैन जे जखन सावित्री काजक आशासँ एली अछि तखन निआशो करब उचित नहियेँ हएत। फेर मन बदैल कहलकैन जे प्रश्न-पर-प्रश्न जखन उठत वा समस्या-पर-समस्या उठत तखन ने भविष्यक आशा देखि समाधानक उत्तर पएब नीक हएत।

देवनक मनमे संतोष एलैन। बजला-

"सावित्री, पहिल प्रश्न ऐठामसँ शुरू करै छी, समाजक नजरिये हम अहाँक भैंसुर भेलौं आ अहाँ भावो भेलौं। दुनूक बीच एहेन सामाजिक बन्धन अछि जे भरि मुँह बात नहि कऽ सकै छी। जखन भरि मुँह गप-सप्प नहि हएत तखन पेटक बात केना बुझब। तैठाम जँ अहाँकेँ नाम धरि सावित्री कहै छी, तँ एकरा अनुचित नहि बुझब।"

देवनक बात सुनि जहिना विचारचनक मनमे अतीतक संस्कार जगलैन तहिना सावित्रीक मनमे सेहो जगलैन जइसँ निराशाक दुनूक रूप मनमे ठाढ़ भेलैन। ओना, पनरह बर्खक सम्बन्ध तीनू–देवन, विचारचन आ सावित्री–क बीच बनल रहने जहिना देवनक पेटक बात सावित्री बुझए लगल छैथ तहिना देवन सेहो सावित्रीक पेटक बात परेख नेने छैथ, जइसँ सावित्रीक मनक विचारमे सक्कतपन सेहो आबिये गेल छैन। उद्गल मनक उद्गार व्यक्त करैत सावित्री बजली-

"भैया, समाजक सम्बन्ध रूपेँ ने भैयारी बुझै छिऐन, मुदा हमरा उम्रक हिनकर बेटी छैन, तँए पितो तुल्य नहि बुझब मुनासिव हएत.? जखन पिता दाखिल छैथ तखन जँ नाओं धड़िकऽ बजै छैथ, तइसँ हमरा खुशीए ने हेबा चाही।"

विचारचनक मनमे, लहका वंशी जकाँ सुतरलैन। सुतरिते बजला-

"भाय साहैब, हम तँ बुझै छी जे भाएमे कियो दादा होइ, भैयारी होइक नाते अपनो ने दादे भेलिऐ, जइसँ सोलहअनाकेँ के कहए जे बत्तीसो कि चौंसैठोअना लाभ तँ अपने ने भेल।"

समतल भूमि देखि देवन बजला-

"सावित्री, अपना ऐठाम कहब अछि जे 'पानिमे माछ आ नअ-नअ कुटिया बाँट-बखरा.!' अखन रघुनाथक बिआहक गप-सप्पक शुरूआते भेल अछि। दू समाजक दू मनुक्खक बीच सम्बन्ध स्थापित हएत, ओ एक्के दिने थोड़े हएत। जेना-जेना समय, काजक समय, अबैत जाएत तेना-तेना सभ काज विचारैत चलब। की विचारचन?"

सह दैत विचारचन बजला-

“एक लाखक विचार भाय साहैब अहाँक अछि। दोस्तीनी, साँझमे जखन लड़ूलाल समाद पहुँचबए औता तखन हुनका कहि देबैन जे एकटा निश्चित समय बना लिअ। जइसँ जहिना कमिश्नर साहैब पाँच गोरे औता तहिना समाजक पाँच गोरेकेँ हमहूँ विचार-विमर्श करैले बजेबैन।”

“बड़बढ़ियाँ.!” कहि सावित्री बजली-

“भैया.! अखन जाइ छी, जेना जे आगूक गप-सप्प हएत तेना से कहबैन।”

ठीक छह बजे, पहिल साँझमे लड़ूलाल सावित्री ऐठाम पहुँच गेला। पहिल किस्तक पेमेन्ट लड़ूलालकेँ नीक जकाँ भेल छेलैन तँए यूरिया खाद देल जजात जकाँ हरियरीक डगडगी चेहरो आ मनोमे रहबे करैन। अपन बुद्धिपर असीम बिसवास सेहो लड़ूलालकेँ छैन्हे। रहबो केना ने करतैन, माने असीम बिसवास, मर्दकेँ कान कटैमे तँ देरिये ने लगै छैन तैठाम जनि-जातिक तँ अदहा कान कनौसीसँ कटले रहै छैन, आधा कान कटैमे केते देरी लागत। जहिना दुनियाँ छोड़ैबला शदूलकेँ हाथी ढिठपन जकाँ कहने रहै जे साढ़े तीन हाथक मनुक्खकेँ अदहा चीरले रहत, अदहा चीरैमे केते भीड़ पड़त, तइ डरे दुनियाँ छोड़ि देब। जेकर फलाफल सभ देखिते छी जे पीठपर चढ़ि साढ़े तीन हाथक मनुख, हाथमे अंकुश नेने अगत-अगत, पछत-पछत करिते अछि। घटकक शैलीमे लड़ूलाल बजला-

“परिवारक भाग्य जगि गेल।”

लड़ूलालक बात- ‘परिवारक भाग जगि गेल’, सुनि सावित्रीक मनमे एक संग अनेको प्रश्न उठि गेलैन मुदा पनरह बर्खक बीचक, माने पैछला जीवनक बीचक, जीवन जे रहलैन ओ सावित्रीकेँ सहीट जमीनपर आनि ठाढ़ कऽ देने छेलैन, तँए भाग्यक शाब्दिक रूप बदलिये गेल छेलैन। तेकरा स्पष्ट करैक खियालसँ सावित्री बजली- “से की भाग्य?”

जूताक पॉलिसपर जहिना मोलामा माने क्रीम चढ़ा चमकदार बनौल जाइए तहिना लड़ूलाल विचारक मोलामा चढ़बैत बजला- “बुझि लिअ जे

राजधानी प्रवेश करैक बाट खुजि रहल अछि। वएह सभ माने कमिश्नर साहैब, ने राज-पाट सम्हारि राजा बनलो छैथ आ राजभोगो करै छैथ। तइ परिवारक बेटी पुतोहु बनि परिवारमे औत, ई की भाग्य बनब नहि भेल।"

निरविचार वक्ताक वकतव्यमे जहिना अलंकार छन्दक मात्रा कम रहैए आ खाँटी विचारक शब्दक मात्रा बेसी रहैए तहिना सावित्री बजली-

"जेकरा भाग्यमे राजभोग अछि से भोगह, हमरा ओइसँ कोन अछि। अपन जे अछि तहीसँ खुशी छी। साँझक समय छी, धीरे-धीरे अन्हारो पसरत आ परिवारक काज पछुएने काजो पसरत तँए पहिने गप सम्हारि लिअ।"

ओना, लड़ूलाल बजै-भुकैमे खड़हर छथिए मुदा जिनगीक दायरा संकीर्ण रहने माने मात्र घटकक जीवन रहने, घटकैती टाक बोधो आ शब्दकोषो छैन, तइ दुआरे सावित्रीक विचारकेँ नीक जकाँ नहि आँकि सकला। मुदा बजन्ता लोकक तँ ईहो गति अछिए जे कोनो बाते वा विचारे बुझी वा नहि बुझी, अपन मुँहक गति ओहिना राखब। लड़ूलाल बजला-

"बेस कहलौं, अपनो कि एकेटा झमेल अछि। ऐठामसँ जखन जाएब तखन दूध आनए दछिनवारि टोल जाएब, दोकानोक काज पछुआएले अछि। की कहब, जहरो-माहूर खाइक कि पलखैत होइए।"

अपन विचारक बात नहि सुनि सावित्री मने-मन कुपित सेहो होइ छेली, मुदा अपनो परिवारक काज बुझि समयकेँ अनुकूले बुझै छेली। बजली-

"अखुनका जे समाद अछि पहिने तैपर विचार कऽ लिअ।"

अनचोकमे जहिना बीखहा जन्तु-के काटि नेने वा हबैक नेने एकाएक मन छनैग जाइए तहिना लड़ूलालकेँ भेलैन। बजला-

"गप-सप्प पक्का-पक्की भऽ गेल। परसू कमिश्नर साहैब पाँच गोटेसँ एबे करता।"

सावित्री बजली- "भिनसरू पहर औता कि बेरूपहर?"

समय, माने दिन तँ लड़ूलाल बना नेने छला मुदा बेरूपहर कि भिनसरू पहर से छुटि गेल छेलैन। सकपकाइत बजला-

“ओ सभ कहुना भेला तँ बड़का लोक भेला, जोगी-जपी ने ब्रह्ममुहूर्त्तमे साधनाक समय बुझि साधना करै छैथ। ओ सभ तँ आरामसँ सुतै छैथ आ नअ बजेमे ओछाइन छोड़ि अपन जीवनवृत्तिमे लगै छैथ, तँए बेरूके समय मानि लिअ।”

सावित्री बजली- “बड़बढ़ियाँ, अखन जाउ, आगूक विचार आगू होइत रहत।”

विदा होइत-होइत लड़ूलाल बजला-

“एकटा बात अखने कहि दइ छी, पैघ लोकक काज छिऐन तँए जेते कमसँ कम लोक बुझि सकैथ, तिनकेटा भनक लागए देबैन।”

लड़ूलालक विचार सावित्रीक मनक विचारमे जेना झन-दे लगलैन। झन-दे लगैक कारण भेलैन जे बेटा-बेटीक बिआह तँ एक परिवारक नहि सभ परिवारक अनिवार्य यज्ञ छी, तखन झाँपि कऽ रखैक कोन खगता अछि। तहूमे बेटा-बिआहक यज्ञ छी, तखन झाँपिकऽ रखैक कोन खगता अछि। दसटा बरियातियो जेबे करत आ दसटा गीतिहारि सेहो कुमरम-सँ-बिलौकी तकक गीत गेबे करती, तैठाम कम-सँ-कमे लोक तक विचार केना रहत। मुदा लगले अपन विचारकेँ समेट मनेमे राखि सावित्री विचारली जे जे अपन समाज छी, तिनकासँ जँ मुँह छिपा कऽ राखब से उचित नहि। तँए जहिना पाँच गोरे ओ सभ माने कन्यागत कमिश्नर साहैब सभ, औता तहिना अपन समाजक पाँच गोरेक विचारकेँ राखब नीक हेबे करत किने। एहेन विपत्तिक बीच बीतल पनरह सालक बीचक, समय जखन हँसी-खुशीसँ काटि लेलौं, तखन आब तँ सहजे बेटा स्वामी तुल्य भऽ गेल अछि, तखन ऐगला जीवने केतेटा अछि जे नहि कटत..! सावित्री बजली-

“कोनो कि ढोलहो देबाक अछि, तखन तँ जे अपन पारिवारसँ सम्बन्धित लोक छैथ, ओ तँ बुझबे करता किने।”

चलैत-चलैत लड़ूलाल बजला- “चारि बजे, हुनका सभकेँ बजा

लेबैन।”

सावित्री- “बड़बढ़ियाँ।”

तेसर दिन चारि बजे देवनो आ विचारचनो सावित्री ऐठाम जखन पहुँचला तँ पता चललैन जे कन्यागतक गाड़ी रस्तामे पञ्चर भऽ गेलैन तँए पनरह मिनट विलमसँ पहुँचता। कचहरिया लोक जकाँ विचारचनक मन छैन्हे, बजला-

“अजीव खेल दुनियाँक अछि, भाय साहैब।”

‘अजीव खेल’ सुनि अकचकाइत देवन बजला-

“से की विचारचन?”

विचारचन बजला-

“भाय सहाएब, अहाँ सभ दिन तँ ओहन रहलौं जे ने दौड़ चली आ ने ठैंस खसी। तँए कोट-कचहरीक जानकारी नहि अछि, मुदा हमरा तँ से नहि अछि, जाबे कचहरियो नहि जाएब ताबे कचहरीक आ जाबे जहल नहि जाएब ताबे जहलोक कारगुजारी केना बुझब।”

विचारचनक विचार सुनि देवन बजला-

“हँ से तँ ठीके कहै छह।”

देवन अपन बात बाजल छला मुदा विचारचनकेँ बुझि पड़लैन जे नव बात बजलौं तँए अपन गुरुत्व बढ़ि रहल अछि। ..भावमुखकेँ गुरुमुख बनबैत विचारचन बजला-

“भाय सहाएब, एक दिन कचहरीमे हाजिर नइ हएब तँ वारन्ट भऽ जाएत, मुदा कचहरीक जे कलपलदार छैथ ओ महीनाक कोन बात जे सालक-सालो हाजिर नहियोँ हेता तैयो कोनो बात नहि। यएह ने भेल दुनियाँक अजीव खेल।”

ओना, जहिना देवनक मनमे कमिश्नर साहैबक आगमन नचै छेलैन तहिना विचारचनोक मनमे नचिते रहैन मुदा खाली समय देखि अपन-अपन विचारे अपन-अपन खाना भरि रहल छला। सावित्री, रघुनाथ आ

छोट बेटी सुनीता सेहो बैसल छल। देवनक मनमे भेलैन जे तैबीचमे, माने जाबे घटक सभ नहि एला अछि, रघुनाथक पेटक विचार बुझि लेब नीक रहत। मुदा लगले अपने मन कहलकैन, अपनासँ सम्बन्धित प्रश्न औत अपने सहए जवाब ने देब। तहिना जिनकर सम्बन्धित जे प्रश्न रहत से सएह ने जवाब देता। हँ, बीचमे एकटा विचार जरूर अछि जे सोझहामे जँ किछु उटपटाँग भऽ जाएत तँ तेकर दोखी अपनो हेबे करब किने। लगले सूरे मनमे उठलैन, माने देवनक मनमे- जहिना स्वाति नक्षत्रक अकाससँ टपकल जलक बून समुद्र सन गहींरमे अपन रास्ता बनबैत जमीनपर बसल सितुआक खुजल मुँहमे पड़ि मोती बनि जाइए तहिना ने विचारोक मोतीकेँ जीवनक मर्मक तात्त्विक विश्लेषण करैत पकड़ले जा सकैए। जँ केतौ जवाब ले-ऊँच रहत तँ ओकरा पहेट एकरस तँ बनाएले जा सकैए। देवनक अपन मन मानि गेलैन जे अखन तकक जे स्थिति अछि ओ अनुकूले अछि।

सवा चारि बजे कमिश्नर साहैबक एकटा संगी कमिश्नर, तेसर अगुआ पेशकार आ एकटा अपन घटक आ दोसर लड़ूलालकेँ सेहो पकैड़ लेलैन, पाँचो गोरे सावित्री-ऐठाम पहुँचला। अबिते हाथ-पएर धोइक आग्रह घरबैया दिससँ भेलैन, कहब जे करोना दुआरे? नहि, अपन पूर्वजक देल विधो आ बेवहारो दुआरे। मुदा कियो जूत्ता खोलैले तयारे नहि भेला तँ पएर की धोता।

चाह चलि रहल छल। पेशकार लड़ूलालकेँ कहला-

“पहिने, दुनू दिससँ परिचय सभकेँ करा दिऔन लड़ूलाल।”

परिचय-पात भेला पछाइत कन्यापक्षक घटक बजला-

“लड़ूलाल, सावित्रीकेँ कहियौन जे हमसभ बेटाक माँग करए एलौं अछि।”

जहिना कन्यापक्षक घटक बजला तहिना सावित्री उत्तर देलखिन-

“दरबज्जापर आएल अतिथिक मांग सभ दिन पूर्ति करैक परम्परा मिथिलाक रहल अछि जे अखनो तँ जीवित अछिए।”

सावित्रीक विचारमे किनका की भेटलैन से तँ सभ मने-मन रहि गेला मुदा देवनक मन प्रफुल्लित भऽ सभ किछु देखलैन। मुदा बजला किछु ने। पेशकार बजला- “लड़काक नोकरीक भार कमिश्नर साहैबक ऊपर छैन, बीचक जे वैवाहित पद्धति अछि, तइमे जे-जेना सावित्री कहती, तैयार छी।”

पेशकारक विचार सुनि देवन विचारचनकेँ कहला-

“विचारचन, अपना सभ तेसर भेलौं, पहिने लड़का–रघुनाथ–क विचार बुझि लेब ने उचित हएत।”

देवनक बात सुनि हूँहकारी भरैत विचारचन बजला- “हँ से तँ हेबे करत।”

ओना, अखन तक समाजक चलैनमे एहेन रहबे कएल अछि जे जिनकर विवाह हएत तिनकासँ कोनो विचार नहि लेल जा रहल अछि, तँए सभकेँ नव चलैन जकाँ बुझि पड़लैन।

आँखिक इशारासँ कन्यागतक घटक लड़ूलालकेँ पुछए कहलैन। अखन तक लड़ूलालकेँ सावित्रीए टासँ गप-सप्प भेल छेलैन तँए मनमे ईहो होनि जे घरक बान्ह जकाँ जँ कहीं सुवानिक बदला उवानि भऽ गेल तखन तँ अखन तकक सभ केलहा पानिमे चलि जाएत। तँए सोलहसँ बत्तीसोआना अपने दोखी हएब जे जखन एहेन विचार समाजक छैन तखन पहिने ने किए थाहि लेलौं। मन मसोसि लड़ूलाल रघुनाथकेँ पुछलैन-

“बौआ, सभ दार-मदार अहींपर अछि तँए अपना मुहेँ बाजू जे की विचार अछि।”

बीस बर्खक नवयुवक रघुनाथ जे अखन तकक अपन जीवनसँ पूर्ण सन्तुष्ट अछिए। तहूमे अनुकूल परिस्थिति सेहो भेटले अछि। अनुकूल परिस्थिति ई जे मध्यम किसान परिवारमे रघुनाथक पालन-पोषण भेल, तैसंग देवनक संसर्गमे सावित्रीकेँ रहने दुनू माए-बेटा आजुक किसान बनियेँ गेल छैथ। आजुक किसान ई जे जहिना बारहो मासक कृषि- पैदावारक बोध भऽ गेल छैन तहिना अपन जे जोतसीम जमीन छैन तेकरा चौमाससँ

धनहर तक तेना बना नेने छैथ जे बारहो मास जगन्नाथ जकाँ एकटा फसल घर अबै छैन आ दोसर दिस चासमे चासनी सेहो पड़िते छैन। कृषि स्नातक होइक नाते रघुनाथ खेतक मूल्यक मर्मकेँ परेख नेने अछि तँए मनमे दृढ़ संकल्प बनि गेल छै जे जहिना अखन तक किसान परिवार रहल अछि तहिना आगूओ बनौने रहब, जइसँ जहिना माए, माए बनि जीवन देलैन तहिना जाधैर जीवित रहती ताधैर माए बनि ओहिना रहती जेना अखन तक रहली। ओना, रघुनाथक मनमे ईहो उठैत रहइ जे किसानक देश अपन रहितो किसानक बीच ने किसानी संकल्प जगलैन अछि आ ने किसानी जिनगीक इच्छेशक्ति जगलैन अछि। खाएर जे अछि से अछि, तइसँ अपना कोन मतलब अछि, मुदा अपन जीवनो आ इतिहासो (परिवारक इतिहास) तँ आगूमे अछिए। अपन मनक दृढ़ संकल्प व्यक्त करैत रघुनाथ बाजल-

"नोकरी-चाकरी करैक विचार अपन नहि अछि। किसान परिवारमे जन्म भेल, किसानी जीवन बसर करैक अपन विचार अछि।"

नोकरी नहि करैक विचार रघुनाथक मुहसँ खसिते सभ सभ दिस ताकए लगला। जहिना देवन विचारचन दिस तँ सावित्री देवन दिस तहिना कन्यागत कमिश्नर साहैब दोसर कमिश्नर दिस तँ लड्डूलाल पेशकार दिस, मुदा किनको मुहसँ बकारे ने फुटैत रहैन जे की बाजब। चुपा-चुपी देखि देवन बजला-

"जहिना लड़का अपन विचार अपना मुहसँ बजला तहिना लड़कियोक मुहसँ एते विचार तँ एबेक चाही ने जे किसान परिवारमे अपन अँटावेश कऽ सकब की नहि।"

देवनक बात सुनिते विचारचन बजला-

"अखन अहाँ ईहो कहि सकै छी जे लड़का-लड़कीक बिनु विचारे माता-पिता विवाह-दान करैत आबि रहला अछि। मुदा एहेन विचारक दायित्वक सीमा ओत्तैसँ कमजोर हुअ लगल जेतएसँ बाल-विवाहक उठाव शुरू भेल। आजुक परिवेश तँ सहजे ओहन बनि गेल अछि जैठाम वयस्क

लड़का-लड़कीक विवाह हुअ लगल अछि।”

कमिश्नर साहैब बजला-

“दू जीवनक बीचक प्रश्न अछि, तँए लगले किछु ने कहि सकै छी, मुदा मनुक्खो तँ मनुक्ख छी। मनुक्खमे अपन जीवन अपने धारण करैक असीम शक्ति तँ होइते छैन।”

विचारचन बजला-

“एकटा नव परिवारक सृजनक प्रश्न छी, तँए गम्भीर भऽ विचार करैक खगता तँ अछिए।”

अन्तर्राष्ट्रीय बेपारी जकाँ अपन ढील-ढाल जाल फेकैत लड़ूलाल बजला-

“पेशकार साहैब, बिआह-दानक यज्ञ-कर्म छी तँए धड़फड़ेने थोड़े हएत। असथिरसँ विमर्श करैत चलब तँ काज हेबे करत। तखन तँ किछु समय आरो आगू बढ़त।”

लड़ूलालक विचार सुनि एका-एकी सभ उठि अपन-अपन रास्ता पकड़लैन।

❑

शब्द संख्या: 3977, तिथि: 15 मई 2021

❑❑❑

❑❑

❑

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक सालभरिक गद्य लेखन क्रम

(03 जनवरी 2022 सँ 05 जनवरी 2023 धरिक शीर्षक सूची)

973. मृत्युसजियापर पड़ल विवेक बाबा- शब्द सं.: 2294, तिथि.: 3 जनवरी 2022
974. संचरण- शब्द संख्या: 2477, तिथि: 08 जनवरी 2022
975. जिनगीसँ प्रेम- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 14 जनवरी 2022
976. परिवारे बगैद गेल- शब्द संख्या: 2299, तिथि: 21 फरवरी 2022
977. जिनगी पिछैड़ गेल- शब्द संख्या: 2859, तिथि: 02 मार्च 2022
978. श्रमहीन- शब्द संख्या: 3105, तिथि: 08 मार्च 2022
979. समुद्रलंघन- शब्द संख्या: 3274, तिथि: 21 मार्च 2022
980. परिवारक भार- शब्द संख्या: 2402, तिथि: 28 मार्च 2022
981. हीन-हीनाइत विवेक- शब्द संख्या: 2347, तिथि: 02 अप्रैल 2022
982. चेहराक निखार- शब्द संख्या: 2496, तिथि: 06 अप्रैल 2022
983. भरि मन काज- शब्द संख्या: 2281, तिथि: 12 अप्रैल 2022
984. विचारे मरि गेल- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 21 अप्रैल 2022
985. मृत्युक भय मेटा गेल- शब्द संख्या: 2536, तिथि: 26 अप्रैल 2022
986. घरक बात- शब्द संख्या: 2686, तिथि: 01 मई (मजदूर दिवस) 2022
987. अप्पन दलान- शब्द संख्या: 2480, तिथि: 06 मई 2022
988. कंजूसपन- शब्द संख्या: 2589, तिथि: 11 मई 2022
989. आएल आशा चलि गेल- शब्द संख्या: 1478, तिथि: 15 मई 2022
990. अकारण- शब्द संख्या: 1918, तिथि: 18 मई 2022

991. अछोप- शब्द संख्या: 1590, तिथि: 21 मई 2022

992. अप्पन बेइमानी- शब्द संख्या: 1560, तिथि: 24 मई 2022

993. उनटन- शब्द संख्या: 1581, तिथि: 24 मई 2022

994. अर्द्धांगिनी- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 30 मई 2022

995. बहवाँइर- शब्द संख्या: 1538, तिथि: 04 जून 2022

996. पाक मास्टर- शब्द संख्या: 1387, तिथि: 07 जून 2022

997. साइंस टीचर- शब्द संख्या: 1301, तिथि: 10 जून 2022

998. इज्जत लऽ लेलक- शब्द संख्या: 1367, तिथि: 13 जून 2022

999. निसगर पान- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 15 जून 2022

1000. विरोध- शब्द संख्या: 1452, तिथि: 19 जून 2022

1001. जीवन दान- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 26 जून 2022

1002. बाग-बगिया- शब्द संख्या: 1272, तिथि: 30 जून 2022

1003. विश्वास पात्र- शब्द संख्या: 1374, तिथि: 02 जुलाई 2022

1004. विचारक टिटकारी- शब्द संख्या: 1335, तिथि: 05 जुलाई 2022

1005. लत- शब्द संख्या: 1375, तिथि: 08 जुलाई 2022

1006. जीवन खटाइमे पड़ि गेल- शब्द संख्या: 1220, तिथि: 11 जुलाई 2022

1007. कर्ज- शब्द संख्या: 1256, तिथि: 13 जुलाई 2022

1008. बहादुरी- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 16 जुलाई 2022

1009. हमरो खगता छै- शब्द संख्या: 1178, तिथि: 20 जुलाई 2022

1010. सपना- शब्द संख्या: 1241, तिथि: 23 जुलाई 2022

1011. संगे-संग एलौं संगिया मरि गेल हम भुतिआइ छी- श.: 1303, 26.7.2022

1012. उवाणि- शब्द संख्या: 1264, तिथि: 29 जुलाई 2022

1013. विचारक प्रबलता- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 01 अगस्त 2022

1014. अपन रचित रचना- शब्द संख्या: 1481, तिथि: 07 अगस्त 2022

1015. थाहल संगी- शब्द संख्या: 1331, तिथि: 10 अगस्त 2022

1016. आत्मबल- शब्द संख्या: 1267, तिथि: 13 अगस्त 2022

1017. विश्वासहीन- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 16 अगस्त 2022

1018. बुलन्दी- शब्द संख्या: 1329, तिथि: 19 अगस्त 2022

1019. अप्पन साती- शब्द संख्या: 1287, तिथि: 22 अगस्त 2022

1020. खिच्चड़ि- शब्द संख्या: 1624, तिथि: 26 अगस्त 2022

1021. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1364, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1022. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1357, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1023. कनियेँ-मनियेँ पूँजी- शब्द संख्या: 1315, तिथि: शिक्षक दिवस 2022

1024. पुरुखढौह- शब्द संख्या: 1263, तिथि: 08 सितम्बर 2022

1025. सिमानक झगड़ा- शब्द संख्या: 1232, तिथि: 13 सितम्बर 2022

1026. जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1312, तिथि: 16 सितम्बर 2022

1027. परिवारक योग- शब्द संख्या: 1295, तिथि: 19 सितम्बर 2022

1028. मनुक्ख खौक- शब्द संख्या: 1183, तिथि: 25 सितम्बर 2022

1029. साहित्यकारक विवेक- शब्द संख्या: 1141, तिथि: 28 सितम्बर 2022

1030. भाषाक बेथा- शब्द संख्या: 1231, तिथि: 01 अक्टूबर 2022

1031. बुझबे ने केलिऐ- शब्द संख्या: 1227, तिथि: 05 अक्टूबर 2022

1032. जीवनक सम्बन्ध- शब्द संख्या: 1187, तिथि: 08 अक्टूबर 2022

1033. गैंचाह लोक- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 11 अक्टूबर 2022

1034. जिनगीकेँ पटैक भगलौं- शब्द संख्या: 1258, तिथि: 14 अक्टूबर 2022

1035. अन्तिम आशा- शब्द संख्या: 1365, तिथि: 17 अक्टूबर 2022

1036. गजपट मारि- शब्द संख्या: 1327, तिथि: 20 अक्टूबर 2022

1037. कन्हजोड़- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 23 अक्टूबर 2022

1038. अनहोनी- शब्द संख्या: 1308, तिथि: 26 अक्टूबर 2022

1039. होनी- शब्द संख्या: 1236, तिथि: 29 अक्टूबर 2022

1040. भवितव्य- शब्द संख्या: 1130, तिथि: 02 नवम्बर 2022

1041. ओसचट बीमारी : शब्द संख्या: 1260, तिथि: 05 नवम्बर 2022

1042. पुत्र परीक्षा : शब्द संख्या: 1286, तिथि: 09 नवम्बर 2022

1043. अप्पन मन बुझाएब : शब्द संख्या: 1294, तिथि: 12 नवम्बर 2022

1044. जड़ौर- शब्द संख्या: 1304, तिथि: 15 नवम्बर 2022

1045. अलोपित- शब्द संख्या: 1360, तिथि: 18 नवम्बर 2022

1046. कुमहरक बतिया- शब्द संख्या: 1240, तिथि: 21 नवम्बर 2022

1047. सिमानक आड़ि- शब्द संख्या: 1289, तिथि: 26 नवम्बर 2022

1048. नब बनक नब फल : शब्द संख्या: 1412, तिथि: 30 नवम्बर 2022

1049. सुमारक : शब्द संख्या: 1246, तिथि: 04 दिसम्बर 2022

1050. अन्तिम भैंट : शब्द संख्या: 1277, तिथि: 08 दिसम्बर 2022

1051. अनहरिया : शब्द संख्या: 1356, तिथि: 12 दिसम्बर 2022

1052. निरन्तर : शब्द संख्या: 3025, तिथि: 21 दिसम्बर 2022

1053. शॉर्टकट रास्ता : शब्द संख्या: 1621, तिथि: 26 दिसम्बर 2022

1054. अपेछा टुटि गेल : शब्द संख्या: 1743, तिथि: 30 दिसम्बर 2022

1055. सुनयना बेटी : 01- शब्द संख्या: 1728, तिथि: 05 जनवरी 2023

❑❑❑

❑❑

❑

Notes

[1] बरिअरबा एकटा गाम छी।

[2] वाक् माने भेल दैवीय शक्तिक बात

[3] साल भरिपर होइबला, जइमे वर्ग संचरण होइए

[4] अंकुर

[5] साधारण कर्म